महा क्रान्तिकारी

श्री कल्कि भगवान की खोज

एवम्

2 इन 1 पद संग्रह

महा क्रान्तिकारी श्री कल्कि भगवान की खोज रचयिता :

श्री परम वैष्णवाचार्य पं. लक्ष्मी नारायण, आयुर्वेद शास्त्री

पद संग्रह लेखक:

आचार्य मनोकान्त तिवारी

प्रकाशक :

श्री कल्कि बाल वाटिका

(कैन-कैन साउन्ड सिस्टमस)

1903, पहली मंजिल, गुरुद्वारे के सामने,

चाँदनी चौक, दिल्ली-110006

फोन : 23866646, 23866661

www.jaikalki.com

संस्करण तृतीय | सन् 2010 | मूल्य : 51.00

2000 प्रति | सजिल्द मूल्य : 75.00

12वीं सदी से 21वीं सदी तक का सफर

12वीं सदी के संत कवि जयदेव द्वारा रचित गीतगोविंद पर भारत सरकार ने भारतीय संस्कृति को सम्मानित करते हुए 27 जुलाई, 2009 को दशावतार डाक टिकटों की जो शृंखला जारी की उसकी सफलता से प्रेरित हिन्दूत्व आस्था की प्रधानता को देखते हुए भारत सरकार ने पुन: एक अनोखी पहल करते हुए नववर्ष 2010 में दशावतार कलैंडर जारी किया। सैक्रेटरी एवं डाक सेवा बोर्ड की अध्यक्षा राधिका डोरेस्वामी के अनुसार भारतीय डाक के इतिहास में पहली बार डाक टिकटों की शृंखला पर आधारित कलैंडर जारी किया गया है।

इसमें कवि जयदेव द्वारा चमत्कारी भगवान श्री कल्कि के लिए लिखी पंक्तियाँ छपी है— **म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्, धूमकेतुमिव किमपि करालम्। केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे॥ 10॥**

इनकी पत्नी पद्मावती भी इस अनुपम सांस्कृतिक धरोहर को सजीव रखने के लिए पुरी जगन्नाथ मंदिर में इन पर सुंदर नृत्य किया करती थीं। आज 21वीं सदी में भी यह चित्रात्मक परंपराए संपूर्ण भारतवर्ष व नेपाल में प्रचलित हैं।

संत जयदेव के केशव कल्कि हमारे गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस के अवतार महर्षि लक्ष्मी नारायण जी की लेखनी से—

मेरे तो कल्कि गोपाल दूसरा न कोई, म्लेच्छ वंश ध्वंश हेत अवतरो है जोई। प्राणाधार प्राणापाल अनुभव दे मालामाल, कर दीनो अति निहाल, ऐसो को सगोई।

कल्कि नाम का प्रबल प्रताप हमें संभाल रहे हरि आप... आगए आगए आगए कल्किजी कल्किजी...

ष्ामपुग थ्सक ष्ापक्च आहुतियाँ

श्री पदम गोयल, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, सुश्री इन्दु बंसल, सुश्री कनिका मोदी, श्रीमती रमा गड़ोदिया, सुश्री मीनाक्षी गुप्ता, सुश्री नलिनी गुप्ता, श्री वरूण चौधरी (कोलकत्ता), श्री राजेश अग्रवाल (कोलकत्ता), सुश्री नलिनी गुप्ता, सुश्री कान्ता सर्राफ (चैन्नई), रश्मि गुप्ता, साक्षी गुप्ता, सुधा गुप्ता, सुश्री प्रतिभा अग्रवाल, शशि बाला, उषा गोयल, ममता डिसुजा, कुमार शुभम, राहुल अग्रवाल, श्री बालकृष्णा, कुमारी सताक्षी गुप्ता, पुष्पा गोयल, पूजा गुप्ता, मेघना गोयल, श्री वी.के. सिंह, श्री दीपक गुप्ता, सुश्री श्रेया चौधरी (बोस्टन, यू.एस.ए.), मानसी गुप्ता, सुश्री राधा रानी, श्री अशोक सिंघल, श्री आर्दश सिंघल

वैकुण्ठ धाम वासी

श्रीमती सरोज गुप्ता, श्रीमती रानी गोयल
श्री रामेश्वर दास गुप्ता, श्रीमती कलावती

अनुक्रमणिका

v प्रस्तावना 8
v गुरुवर बालमुकुन्द जी (हनुमान जी) की जीवनी 10
जामा मस्ज़िद की सीढ़ियों पर घोषणा 12
भूत-प्रेत-सैयद-मजारों का दमन 13
गुरुजी की भविष्यवाणियां 15
v जगद्गुरु शंकराचार्य बदरिकाश्रम ज्योतिष्पीठाधीश्वर 17
v प्रभुदत्त ब्रह्मचारी 18
v वत्स में इन्तजार करता रहा 19
v पं. लक्ष्मीनारायण जी (रामकृष्ण परमहंस) की जीवनी 21
v आभार 30

सरस्वती जी द्वारा प्रदत पद संग्रह

1. कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई 32
2. सतयुग रवि सम नभ बढ़न लगा 34
3. शिव दहे काम जेहि बलते 36
4. प्रह्लाद की विपद निहारी 38
5. अधरम के अँधड़ में उड़े औसान उनके 40
6. लीलाधारी शक्ति निधान 43
7. गउअन गरीबन किसानन की विपता मिटें 45
8. बढ़ संत पियारे कल्कि के गुण गाई 47
9. श्री कुबेर के कनिष्ठ भ्राता 51
10. गुरु गणेश गौरी गिरजापति 53
11. गोपाल तुम्हारी गउओं का 61
12. श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो 63
13. मना तेरी बन जावेगी बना ले कल्कि नाम से 65
14. कल्कि के रूप में निमग्न 67
15. भई प्रकट हुए कल्कि भगवान 71
16. बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय 73
17. गुरु बालमुकुन्द गदाधारी 76
18. भई घोड़े पे कल्कि हुए सवार 79
19. श्री कल्कि नाम का प्रताप 81
20. बब्रावाहन टेसू आए 83
21. जय हो भगवान कल्कि जी जय हो 84
22. जनम कल्कि के हेत भयो 87
23. जय हो भय के भय कल्कि 90

24. मेरे तो कल्कि गोपाल दूसरा न कोई 92
25. भयो कारागार उजागर 94
26. जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो 97
27. निष्कलंक, नहीं कलंक तुमको 98
28. भज ले रे मन धर्म सनातन के स्वामी 103
29. दानव दल के आसन डोले 105
30. देखा-देखा इस कल्कि नाम का नया निराला ढंग 108
31. प्रगटे हैं भगवान चेतो रे भाई 109
32. कल्कि प्यारे का जिसने किया ध्यान है 112
33. यम नगर के पंथ कल्कि नाम बिसारें 114
34. आवेंगे सही प्रगटेंगे सही 116
35. जय बोल रहे-जय बोल रहे 117
36. बोलो जय-जय-जय श्री कल्कि पिता 119
37. विरही कह दो चाहे आनंदी 121
38. कल्कि मन में जो निवास करें 123
39. देखा-देखा इस कल्कि नाम 123
40. हमारे प्रभु कल्कि परम उदार 125
41. मोतियन के हार से फूलन के शृंगार से 126
42. म्लेच्छ निधनकारी असुरारी अरविंद नयन 129
43. कलियुगिया तौक कटा करके 131
44. प्रगटो-प्रगटो, प्रगटो-प्रगटो 132
45. आ गए आ गए आ गए 134

पं. मनोकान्त तिवारी द्वारा पद संग्रह

1. भगवान् श्री कल्कि को भोग 137
1 (क) न ठुकराओ शरण में ही 140
2. वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे 140
3. आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि 141
4. श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ 142
5. कल्कि प्रिय पद्मा रमा 142
6. सागर में नैया डग-मग डोले 143
7. मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए 143
8. हमें दर्शन दिखा देना 144
9. मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु 144
10. भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार 145
11. अब तुम से लगी है आस 145

12. था अजामिल एक पापी 146
13. राह काँटों से भरी 146
14. बेसहारों के सहारे हो कहाँ 147
15. पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ 148
16. दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों 149
17. प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी 149
18. ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया 150
19. लोग कहते हैं कि मुद्दत से ये कल्कि वाले 151
20. मुरली भी सुनेंगे देखेंगे 152
21. दिन है दो चार भजन के 152
22. गंगा महिमा 153
23. प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा 153
24. आओ कल्कि तलवार ताने 154
25. स्वासों के संग में उठती उमंग में 155
26. बिगड़े हुए जिसके हों दोनों जहाँ 155
27. हे काल रूप कल्कि प्यारे 156
28. क्या दीन दुखी भक्तों को 156
29. हे कल्कि भगवान तुम्हें अब 157
30. हमें अब दुख से उबारो हरि 158
31. आये नहीं अब तक हुए 159
32. कल्कि स्वामी आओ 159
33. कल्कि जी करो हमारा ख्याल 160
34. भूमि का उतारो भार नाथ 161
35. असहाय हैं क्यों आज 162
36. भगवान तुम्हारी दुनिया में 163
37. कौन कहता है घड़ा पाप का 163
38. जब दुनिया पाप कर पृथ्वी 164
39. उठो भारत जगाया जा रहा है 165
40. श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो 165
41. डोल उठी पापों से धरती 166
42. कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के 167
43. जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए 168
44. लीला अवतार की निराली होगी 169
45. नक्शा बदल देने को जमीं 169
46. खड्ग मुरली बनी श्री कल्कि बने 170

47. पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी 171
48. अपने भक्तों से हरि आज मिले 172
49. खड्ग उठा कर हाथ में 173
50. कलियुग में जब कि कल्कि बने 173
51. आओ भक्तों महिमा गायें 175
52. श्री कल्कि नाम मन भाया है 176
53. जो सुमरनी संभाल कर बैठे 177
54. श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन 177
55. न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो 178
56. गाये जा निश दिन गुन गिरधर के 179
57. जैसी करनी वैसी भरनी 179
58. श्वांस में सुमरन समा गया 180
59. भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा 181
60. कल्कि कल्कि कहते जाना 181
61. सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पा ले 182
62. फिर फिर आये जनम नित पाये 182
63. श्री कल्कि जपो रे मन भजो रे मन 183
64. मन भजन में रहो घर या वन में रहो 183
65. तेरा जीवन बिरथा बीत गया 184
66. भज मन श्री कल्कि नारायण 185
67. मतवाले हरि गुन गा ले 185
68. मन कल्कि कल्कि गाया कर 186
69. तुम कल्कि कल्कि बोलो रे 186
70. जाग बन्दे होश में आ 187
71. अरे ओ मूढ़ बन्दे देख 188
72. मस्त होकर जिन्दगी भर 188
73. बढ़ता चल जीवन में प्रति पल 189
74. गोकुल की गलियों में ढूंढे 190
75. खिला फूल उपवन में टूटा 191
v श्री कल्कि नाम की महिमा 195
v स्त्री शिक्षा और बालकों की शिक्षा का ध्येय क्या होना चाहिए 196
v कल्कि अवतार न होता तो हिन्दू इतिहास के पन्नों में रह जाता 198
v लाद दे, लदा दे, लादने वाला साथ दे 203
v कल्कि अवतार अंग्रेजी का घोर शत्रु क्यों? 207
v एक गुलामी से दूसरी गुलामी तक का सफर 215

प्रस्तावना

ब्राह्मणों को सन्त समाज को व सनातन धर्मी जगत को प्रणाम करके मुझे कुछ निवेदन करना है। संसार नाशवान है, शरीर क्षण भंगुर है, यह कल्कि भगवान का काम सच्चा व सच्चे भक्तों द्वारा अनुभव से प्राप्त हुआ है, यह धन व चन्दे का मोहताज नहीं है। इसमें हमारे गुरु को व हमें कल्कि नाम की महिमा व प्रभाव से जो गुप्त अनुभव मिलें हैं वे हमने नहीं लिखें हैं। जो आज्ञाएँ कल्कि भगवान से मिली हैं, यदि आप कहेंगे तो अवश्य लिखेंगे।

ऐसे लोगों से सावधान रहें जो कोई सिर हिलावे और कहे मुझ पर कल्कि भगवान आते हैं, डाटी घौंस देकर पैसा कमाना चाहें, अपने को कल्कि भगवान का भक्त बताकर ब्राह्मणों को झिड़क दें, अपमान करे, वाद-विवाद करे वह भगवान कल्कि का प्रिय नहीं करता वह तो स्वयं अपने लिये नरक का सामान करता है।

सबहि मान प्रद आप अमानी।
भरत प्राण सम ते मम प्राणी।।

मेरे गुरु का व मेरा स्वभाव रहा है कि धर्म के अथवा किसी काम के लिये दो रुपये भी किसी से खर्च करने को नहीं कहना। (आँख से आँख मिलाकर रुपया न मांगना) अपनी श्रद्धा से चाहे कोई हजार खर्च कर दे। कल्कि के नाम पर जो धन इकट्ठा करे उनसे भी सावधान रहें।

यह प्रेम का सौदा है। जहाँ कल्कि भगवान का सम्मान आवश्यक व अनिवार्य है वहाँ राम कृष्ण के प्यारे सनातन धर्म के अंगों पांगों का व भक्ति के मार्ग पर चल रहे नर नारियों का सन्मान करना भी कल्कि भगवान के भक्तों का परम धर्म है। कल्कि भगवान में विश्वास व प्रेम करना भी सनातन धर्म का एक शाश्वत अमोध मार्ग व अंग है। यह कोई नया धर्म नहीं है

ना ही नया धर्म चलाना या धर्म में संशोधन करना कल्कि भगवान के भक्तों का ध्येय हो सकता है। कल्कि भगवान के भक्तों को अभिमान से डरना चाहिये और ब्राह्मणों का अपमान तो तीनों काल में भी नहीं करना चाहिये। कल्कि भगवान ने जो कुछ दिखाया है उससे सिद्ध हुआ कि सनातनधर्म में कोई कसर नहीं है, मानने वालों में कसर है जो विश्वास नहीं मिलता।

मुझे अपने धर्म से प्रेम है तो मुझे कल्कि इष्ट मिले जिन्होंने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे अपनाया व अपनी शरण में लिया। मेरे धर्म का व मेरे देश का भविष्य महान उज्जवल है इससे मैं निश्चिन्त हूँ। कल्कि का नाम लेकर कोई आपका अपमान करे वह मेरा नहीं है। उसका मुझे जिम्मेदार न समझें। आप लोग जो भी, निष्ठा से सनातन धर्म में लगे हैं, मुझे सबका सन्मान और प्रेम आने गुरु व इष्टदेव के समान करना है।

सिर बल जाउ धर्म यह मोरा।
सबते सेवक धर्म कठोरा।।

क्योंकि मेरे इष्ट कल्कि भगवान ने स्वयं इसे सत्य समझाया है।

आप सबके चरणों का दास व सेवक
लक्ष्मीनारायण

卐 卐

विश्व में कही भी
अब आप भगवान श्री कल्कि के भजन सुनने के लिये
youtube.com
पर जाकर merekalki टाईप करके enter का बटन दबाए और सुने अब तक upload किये गये भगवान श्री कल्कि के भजन।

गुरुवर बालमुकुन्द जी
(हनुमान जी के आवेशावतार)
की संक्षिप्त जीवनी

श्री गुरुजी ऊँची धोती, कुरती, गले में दुपट्टा जिसे कभी-कभी वे कमर में कस भी लेते थे, गोल ऊँची कामदार टोपी, कंधे पर गदा, गले में माला, माथे पर रामानंदी तिलक और पैरों में कपड़े के जूते– यह उनकी वेशभूषा थी। शरीर हृष्ट-पुष्ट था।

श्री गुरु जी ने अपने निवास के बाहर एक नगाड़ा रखा हुआ था। जिसे वे ठीक मध्यान्ह के समय बजाते जाते और साथ ही गाते जाते थे–

आवन-आवन कह गए जी तुम, कर गए कौल अनेक।
माधुरि मुरत सुन्दरि सुरत, भीगीं-भीगीं रेख।।
ए संभलवाले! आना जी म्हारे देश।
देखत-देखत बाट थारी, म्हारे रूपा हो गए केस।
गिनत-गिनत म्हारी घिस गईं, आंगड़ियारी रेख।।
माधुरि सूरत लंबे केस, संभलवाले आना हमारे देश।

मरघट के हनुमान मन्दिर को टूटने से बचाया

बेला रोड जिसके एक ओर श्री हनुमान जी का मंदिर जो मरघट वाले हनुमान जी के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है, कभी श्री यमुना जी उससे सटकर बहती थीं। यह मंदिर मरघट के मध्य में हुआ करता था। धीरे-धीरे यमुना जी कुछ खिसकने लगीं और कुछ ताजे वाला तथा वजीरपुर का बाँध बनाकर उस समय की बिट्रिश सरकार भी श्री यमुना जी को खिसकाने लगी। (प्रमाण स्वरूप में लालकिला जो इसी सीध में है और त्रिपोलिया के तीन दरवाजे हैं, राजघाट प्रसिद्ध है ही, वे यमुना जी के तत्कालीन प्रवाह के अब भी साक्षी है। इन पर बना हुआ पुल तो अपनी

कथा कह ही रहा है।) अस्तु, सरकार ने पंजाब जाने वाली सड़क बनाने का कार्य आरंभ किया। बीच में यह श्री हनुमान जी का मंदिर आड़े आता देखकर, उसे हटाने की योजना बनाई गई। चारों ओर खुदाई होने लगी। योजना बनी कि किसी समय रात-विरात को श्री हनुमान जी का विग्रह उखाड़ दिया जाएगा। गुरुजी नित्य यमुना स्नान करने जाते ही थे। कुछ भक्तजनों ने उनसे समस्या का बखान किया। वे स्नान करके उधर की ओर चल दिये। देखा कि प्रधान इंजीनियर दो घोड़े वाली बग्घी में बैठकर निर्माण कार्य का निरीक्षण करने जा रहा है। उन्होंने दौड़कर पीछे का पहिया पकड़ लिया दौड़ते हुए घोड़े पैर उठाए रह गए। सईस पर हंटर फटकारे, घोड़े पूरी शक्ति लगा रहे किंतु बग्घी ऐसी जाम हो गई, मानो स्वयं धरती माता उसे बढ़कर, थाम कर बैठ गई हो। सईस ने उतर कर देखा कि श्री गुरुजी पहिया थामे खड़े है। आश्चर्य से उसकी आँखे फैली की फैली रह गईं।

प्रधान इंजीनियर ने बग्घी से उतर कर, अपना टोप उतार कर श्री गुरु जी को प्रणाम किया। अपने सईस के माध्यम से पुछवाया कि ''वे क्या चाहते हैं? गाड़ी का पहिया पकड़कर, उसे रुकवाने के पीछे उनकी क्या भावना है?'' श्री गुरु जी ने उत्तर दिया, ''तू मेरा मंदिर हटाना चाहता है, मैं उसे हटने नहीं दूँगा। तू पछताएगा।'' प्रधान इंजीनियर आश्वासन सूचक हाथ हिलाते हुए, पहिया छोड़ने की प्रार्थना करते हुए, बग्घी में जा बैठा। बग्घी अपने मार्ग पर चल पड़ी सड़क निर्माण के कार्य में लगे हुए मजदूरों ने यह दृश्य देखकर, काम करने से इंकार कर दिया। समस्त समाचारों से अवगत होते ही ईसाई समाज अपने धर्म का उपहास और हिन्दू धर्म का सन्मान ध्यान में रखकर भड़क उठा। उनके समूह के समूह एकत्रि हो-होकर लाट साहब मैटकाफ के पास प्रतिनिधि मंडल के रूप में जा-जाकर मंदिर को नष्ट करने की जोरदार मांग करने लगे। अंत में लाट साहब

मुसलमान मजदूरों की पल्टन लेकर, विध्वंस कार्य को तुरंत निबटाने के लिए अपनी बग्घी में अपनी मेमसाहब को साथ लेकर मंदिर की ओर मुंह अंधेरे चल पड़ा। अभी वह मंदिर के पास पहुँचा नहीं था कि बग्घी ऐसे उलट गई जैसे किसी बच्चे ने खिलौना औंधा कर दिया हो। साहब मेमसाहब सहित धरती पर आ गिरे। चोट तो विशेष नहीं आई किंतु किरकिरी बहुत जोरदार हुई। किसी प्रकार मजदूरों ने तिलमिला कर बग्घी को सीधा किया। लाटसाहब सिर नीचा किये लौटे गए किन्तु श्री हनुमान जी के प्रताप को मान गए। उसी का यह प्रभाव हुआ कि श्री रामलीला की सवारी उनके नेतृत्व-संचालन में जामा मस्जिद के नीचे से विधिवत् बाजे बजाते हुए निकलने लगी और तो क्या वह मस्जिद के पास खड़े होकर जनता को प्रेरणा देते थे कि ''जोर से बोलो सियावर रामचंद्र की जय-जय-जय'' मुसलमानों की भारी शिकायत के कारण उनका तबादला कहीं और कर दिया गया। इसपर उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

यही लाटसाहब मैटकाफ, मैटकाफ हाउस जो श्री हनुमान जी के मंदिर के समीप आज भी है रहते थे। स्नान करने के बाद श्री हनुमान जी की ध्वजा के दर्शन करने के पश्चात् ही वे कुछ ग्रहण करते थे। इस व्रत का निर्वाह उन्होंने जीवन पर्यन्त किया।

जामा मस्ज़िद की सीढ़ियों पर घोषणा

एक दिन श्रीगुरु जी यमुना स्नान करके लौट रहे थे। हाथ में यमुना जल का लोटा और कंधे पर गदा और गीली धोती थी। जामा मस्ज़िद निकलते हुए उन्होंने अजान की आवाज सुनी। वे दौड़कर उसकी सीढ़ियों पर चढ़ गए। चारों ओर यमुना जल छिड़क कर, गदा घुमाते हुए घोषण करने लगे–

राक्षस आए दूर से किया हिंद में वास।
अब दिन नेड़े आ गए, होगा सबका नास।।
हे माया सुन्दरी, मम आज्ञा अनुसार।

असुर से असुर को भिड़ाय के, कर डारो संहार।।
गौ माता के रोम-रोम का, बदला लेने हेतु।
आए हैं श्रीकल्कि हरि, सत्य धर्म के सेतु।।

–और थोड़ी ही देर में ''हक्कनिह: निष्कलंक गौरंडा: दुष्टा: नाशन पापा:'' का उद्घोष करते हुए कभी मस्जिद के दरवाजे तक और कभी नीचे तक उछलते हुए चक्कर लगाने लगे। नामाजी मुसलमान उन्हें मारने दौड़े किन्तु उनकी उग्र हुंकार सुनकर कोई उनके समीप नहीं आ पाया। यमुना स्नान से लौटती हुई हिन्दुओं की भारी भीड़ एकत्रित हो गई। भक्तवर श्री शिवशंकर जी उनके चरणों में लोट कर, उन्हें उतार लाए। मुसलमान 'पागल काफिर' कहते रह गए। इस प्रकार के अनेक दोहे भगवान की आज्ञामयी वाणियां वह दिल्ली के चौराहे पर ऐलान किया करते थे।

भूत-प्रेत-सैयद-मजारों का दमन

श्री गुरूजी एक चमत्कारी पुरुष हैं, वह हिन्दुओं से अधिक मुसलमानों में जामामस्जिद और मरघटवाले हनुमान जी की घटनाओं के कारण प्रसिद्ध हो चुके थे। इधर जामा मस्जिद के निकट हरे-भरे की दरगाह के विषय में भी प्रसिद्धि थी कि वहाँ हरे-भरे का जिन्न रात में निकलकर आस-पास ही नहीं दूरदराज तक चक्कर लगाता है। उससे कई हिन्दू चोट खा चुके थे। किन्तु किसी मुसलमान ने चोट खाई हो ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता था। श्री गुरुजी मुसलमानों का षड़यंत्र समझ गए।

अत: एक दिन वह रात्रि में निकल पड़े। उस समय दिल्ली में बिजली नहीं होती थी वे सीधे हरे-भरे की दरगाह जा पहुँचे। जहाँ 8-10 मुसलमान जुआ खेल रहे थे और कुछ नशा-पत्ता आदि कर रहे थे। उन्होंने जोर से 'हक्कनिह: निष्कलंक' का ज्यों ही उद्घोष किया कि वे भूतों की भाँति किलकारी मारते हुए, उनकी ओर दौड़े। परन्तु उनकी हुकार सुनकर वे खड़े के खड़े रह

गये। तभी एक सफेद लबादा पहने हुए छुरा लेकर उन पर लपका। श्रीगुरु जी ने उछल कर उसके सिर पर गदा दे मारी। वह हाय-हाय करता हुआ ज्यों ही गिरा कि श्री गुरु जी ने दौड़कर उसके हाथ से छुरा छीन कर, उसकी छाती पर चढ़कर बोले, 'बता, तू कौन है'? वह बोला 'मैं हरे-भरे का जिन्न हूँ'। श्री गुरुजी बोले 'अगर तू जिन्न है तो आज मैं तुझे तेरी इस योनि से मुक्त करूँगा और तेरे ही छुरे से करूँगा'। यह कहकर ज्यों ही उन्होंने छूरे वाला हाथ ऊँचा किया, वह तुरंत बोला, 'नहीं पंडित, नहीं-नहीं मैं तो अबदुल्ला हूँ। मैं तुम्हारी काली गाय हूँ। एक गरीब आदमी हूँ। मुझे मत मारो'। श्री गुरु जी बोले 'खड़ा हो। अपना लबादा उतार।' वह खड़ा हो गया किंतु लबादा नहीं उतारा। श्री गुरु जी ने ज्यों ही उसका लबादा उतारा तो देखा कि उसने पैरों के नीचे दो लकड़ी के पैर बाँधे हुए थे जिनके कारण वह आम आदमी से लंबा लगता था। उन पैरों के पंजे भी बहुत बड़े थे, जिनके कारण उनकी छाप सड़क पर पड़ती थी और लोग उन्हें देखकर वास्तव में ही जिन्न की कल्पना से भयभीत हो जाते थे।

श्रीगुरु जी के एक हाथ में गदा और दूसरे में छुरा लहराता देखकर उस तथा कथित जिन्न ने अपने दोनों पैर खोलकर उनके सामने रख दिए और 'जान की अमान' माँगता हुआ भाग खड़ा हुआ। श्री गुरुजी ने उसके दोनों पैर उठा लिए। प्रातः यमुना स्नान के लिए जाते समय एक पैर तोड़कर जामा मस्जिद के नीचे और दूसरा हरे-भरे की दरगाह के पास फेंक दिए। जनता उन टूटे पैरों को देखकर जिन्न का नाटक समझ गई। किंतु 'यह मैंने किया' इस पर श्री गुरुजी ने कभी होंठ नहीं खोले। केवल इतना ही कहा कि जब कभी भूत-प्रेत दिखे तो श्री हनुमान चालीसा का पाठ करते हुए, उस पर तब तक पत्थर बरसाते रहो जब तक कि वह भाग न जाए।

इसी निश्चित तरीके के अनुसार उन्होंने कितने ही भूत-प्रेतों

का इलाज कर दिया और करा दिया। शेष सभी नकली और केवल असामाजिक तत्व थे। उन्होंने 'नाम न खोलें' इस शर्त के अनुसार स्वयं तो भूतगीरी छोड़ी ही बल्कि अन्य भूतों के अड्डे भी बंद कराने में उनका सहयोग दिया। इस प्रकार श्री गुरु जी ने दिल्ली नगर को भयमुक्त कर दिया।

रामलीला की सवारी का श्रीगणेश

लालकिले की नाक के नीचे से निकलकर यह सवारी जामा मस्जिद चावड़ी बाजार होती हुई रामलीला मैदान आने लगी। श्री गुरू जी इस सवारी में सबसे आगे गदा घुमाते हुए प्रधान ध्वज के संरक्षक बनकर चला करते थे। अब 'निष्कलंक बन आजा' ही उनका प्रधान उद्घोष रहता था।

गुरुजी की भविष्यवाणियां

1. अंग्रेजी राज्य जाएगा–जिस दिन ब्रिटिश राज्य सूराखदार सिक्का निकालेगा वह इसकी अंतिम मुद्रा होगी।

2. स्वतंत्र भारत का प्रथम सिक्का वह होगा, जिस पर दौड़ते हुए घोड़े का चिह्न होगा। (छेकदार ताँबे का पैसा सन् 1940-41 के आस-पास निकला, वह अभी भी अनेक लोगों के पास है। वह ब्रिटिश राज्य का अंतिम सिक्का था। उस समय 1 रू. के 64 पैसे, 32 अधन्ने, 16 इकन्नी, 8 दुअन्नी, 4 चवन्नी, 2 अठन्नी चलती थीं। इसी प्रकार सन् 1947 के पश्चात् स्वतंत्र भारत का जो प्रथम पैसा निकला, उसके पीछे दौड़ता हुआ घोड़ा है। उनके चित्र दे रहे हैं।)

3. लालकिले पर हाथ के कते, हाथ के बुने सूत का तिरंगा झंडा जो सत-रज-तमका प्रतीक होगा, उसके मध्य में श्री नारायण का सुदर्शन चक्र होगा, वह ध्वज एक कश्मीरी

ब्राह्मण लहराएगा किन्तु भारत को मानसिक दासता से मुक्ति कुछ समय पश्चात् मिलेगी। (15 अगस्त, 1947 को पं. जवाहरलाल नेहरु ने लालकिले पर जो ध्वज लहराया, वह हाथ के कते-बुने सूत का था। वे कश्मीरी ब्राह्मण तो थे ही किन्तु अंग्रेजी-भाषा-भूषा, ब्रिटिश तर्ज का संविधान आदि सभी मानसिक दासता के ही तो प्रतीक हैं जो अभी तक समाप्त नहीं हुए हैं।)

4. महाभारत पर महाभारत आएँगी। भयंकर युद्ध होगें। घातक शस्त्रास्त्र चलेंगे। गौमांस भक्षी गौमांस भक्षियों से लड़ेंगे। खर-दूषण की भाँति परस्पर कटकर मरेंगे। भारतवर्ष नवीन शक्ति बनकर उभरेगा।
5. सुधार के मार्ग बंद हो चुके हैं, संहार होगा। (ये भविष्यवाणियाँ प्रथम विश्व युद्ध से भी पूर्व की हैं।)

श्री गुरुजी के पूर्ण विवरण के लिये पढ़ें, भगवान श्री कल्कि की प्रेरणादायक कहानियाँ पृष्ठ 13 से 27

卐 卐

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य बदरिकाश्रम ज्योतिष्पीठाधीश्वर

भगवान के अनन्त रूप और अनन्त नाम हैं। वे धर्म की स्थापना और अधर्म के उन्मूलन के लिये समय समय पर अवतार धारण करते हैं। वे हिरण्यकशिपु को मारने के लिये नरसिंह बनते हैं तो द्रौपदी की रक्षा के लिये वस्त्र रूप से अनन्त हो जाते हैं। मर्यादा पालन के लिये मर्यादा पुरुषोत्तम राम रूप से प्रगट हुए तो अजामिल जैसे पतित के उद्धारार्थ पतित-पावन नारायण रूप से अवतरित हुए। इसी लिये श्रीमद्भागवत में कहा गया है—

''अवतारा ह्यसंख्येया हरेः सत्व निधेर्द्विजाः''

प्रत्येक कलियुग में कल्कि भगवान का अवतार होता है। धर्म संस्थापन और अधर्मोन्मूलन के अपने स्वभाव को भगवान दोहराते रहते हैं। अतः उनके गुण, कर्म, स्वभाव का संकीर्तन भक्त करते चले आये हैं। प्रस्तुत पुस्तक परम वैष्णव पं. लक्ष्मीनारायण जी के भावोद्रेक हैं। भक्त व जिज्ञासु-जन इनके कीर्तन और गायन से लाभ उठा कर भगवान में अपनी निष्ठा स्थापित करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य बदरिकाश्रम ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज के आदेश से।

भवदीय

आचार्य श्यामलाल शर्मा एम.ए.

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

भगवान के असंख्य अवतार हैं, असंख्य नाम हैं। असंख्य रूप हैं। जीव भी असंख्य हैं। जिसे जो नाम, जो रूप, जो अवतार प्रिय हो वह उसी रूप नाम को लेकर ध्यान करके भगवान को पुकारे। 24 अवतार तो एक उपलक्षण मात्र हैं, वास्तव में अवतार तो असंख्य हैं। कोई भी एक सच्चा भक्त भगवान को प्रकट कर सकता है केवल एक भक्त की आर्त पुकार पर ही भगवान का अवतार हो सकता है। जितने अवतार हुए हैं, वह सब एक ही भक्त की पुकार पर ही तो हुए हैं। द्रौपदी को जब दुष्टों ने अत्यन्त पीड़ा पहुंचाई तो पाञ्चाली आर्त हो कर चिल्लाई। उसने करुण स्वर से प्रभु को पुकारा। भगवान ने वस्त्रावतार धारण करके उसके दु:ख को मिटाया। वस्त्र भी किसी देवता का नहीं। स्त्री के वस्त्र में प्रभु प्रकटे। वह वस्त्र भी उर्ध्व ऊपर का सिर का या दुपट्टा नहीं, स्त्री अधो वस्त्र। वह भी रजस्वला का वस्त्र जिसको छूना तो पृथक देखना भी पाप है। किन्तु शरणागतों के लिये भगवान शुचि अशुचि का भी भेद नहीं रखते।

कल्कि कीर्तन मण्डल के संस्थापक संचालक तथा सर्वस्व पंडित लक्ष्मी नारायण को मैं चिरकाल से जानता हूँ। उन्होंने देहली में भगवन्नाम संकीर्तन के प्रचार प्रसार में बड़ा सहयोग दिया है। वे बड़ी लगन से निष्ठा के साथ भगवान के कल्कि नाम का जाप, प्रचार, संकीर्तन करते हैं।

अत: मेरी कल्कि मंडल के प्रेमी भक्तों से प्रार्थना है कि आर्त हो कर भगवान कल्कि को पुकारें। वे आर्तत्राण परायण प्रभु भक्तों की आर्त पुकार को अवश्य सुनकर प्रगट होंगें।

संकीर्तन भवन वंशीवट–प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, वृन्दावन (मथुरा)

शु॰ श्रावण कृ॰ 11 सं॰ 2023 वि.

वत्स में इन्तजार करता रहा

आज सुबह सवेरे जब तुम जागे तो मैंने तुम्हे देखा और यह उम्मीद रखी कि तुम मुझसे अव**श**य बात करोगे। चाहे दो **श**ब्द ही बोलोगे और अपनी बीती जिंदगी में घटी बातों के बारे में सलाह लोगे। पर तुम तो उठते ही इधर-उधर भागनें लगे। काम पर जाने के लिए कपड़े पसंद करने में व्यस्त हो गए। लोगों से मिलने और काम की बातों की चिंता तुम्हें सतानें लगी। मुझे उम्मीद थी कि तुम कुछ पल निकाल कर प्यार से मुझे याद करोगे, एक मुस्कुराहट भरी नजर मुझ पर डालोगे पर दुनिया के कामों में उलझकर तुम इतना समय भी नहीं निकाल सके।

जब तुम कुछ समय के लिए कुर्सी पर खाली बैठे थे, तो मैंने सोचा कि अब तुम मुझे याद करोगे। परन्तु इतने में एक दोस्त का फोन आ गया और तुम झट-पट फोन उठाकर उससे द**श**ा के हालात पर चर्चा करनें मे लगे रहे। उसके बाद तुम काम पर चले गए और मैं सारा दिन तुम्हारा इंतजार करता रहा। तुम सारा दिन अपने काम में इतने व्यस्त रहे कि एक पल को भी मुझे याद नहीं किया। जब तुम दोपहर के भोजन के लिए मेज पर बैठे और इधर-उधर देखने लगे तो मुझे एक बार फिर आ**श**ा हुई कि तुम **श**ायद मुझे ढूंढ रहे हो। लेकिन तुम तो अपने दोस्त के इंतजार में बेचैन थे।

मैंने यह सोचकर संतो**ष** कर लिया कि अभी आधा दिन बाकी है। तुम **श**ायद घर जाकर मुझसे बात करोगे। **श**ाम को जब

तुम वापिस घर लौटे तो घर के कामों में व्यस्त हो गए। उन्हें निपटाने के बाद तुमने टी.वी. चला दिया। तुम्हें टी.वी. देखते समय मैं यह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर इस यंत्र में ऐसा क्या है जिसे देखकर तुम्हारे व्याकुल मन को **श**ान्ति मिलने वाली है। खैर देर रात तक टी.वी. देखने के बाद तुम थक हार कर घर वालों को **श**ुभरात्रि अभिवादन करते हुए बिस्तर पर लेट गए। इस पल में तुमसे मुझे फिर उम्मीद हुई कि अब तो तुम मुझे याद करोगे। पर सारे दिन की भागदौड़ ने तुम्हें इतना थका दिया था कि मेरे देखते ही देखते तुम सो गए।

हे मानव, मुझमें इतना धीरज है जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। मुझे तुम से इतना प्यार है कि मैं रोज तुम्हारी एक याद, एक इ**श**ारे, एक प्रार्थना, एक आभार, कृतज्ञता या धन्यवाद का इंतजार करता हूँ, कि मैंने तुम्हें सब कुछ दिया लेकिन तुम मुझसे बात तक नही करते। खैर तुम फिर सुबह नींद से उठने वाले हो - एक बार मैं सम्पूर्ण प्रेम सहित तुम्हारा इंतजार करूंगा - इस उम्मीद के साथ कि **श**ायद आज तुम मेरे लिए कुछ समय अव**श**्य निकाल लोगे।

वत्स मुझे दुःख है कि—

सब जगह ढूँढ़ा मगर पाया तेरा पता नहीं।
जब पता मेरा लगा तो अब पता तेरा नहीं॥

।। तुम्हारे सखा कल्कि भगवान ।।

卐 卐

श्री कल्किनाम प्रचारक पूज्यपाद गुरुवर
पं. लक्ष्मीनारायण जी की संक्षिप्त जीवनी

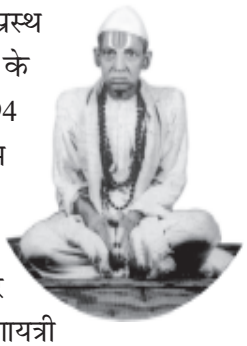

भारतवर्ष की महान पुण्य भूमि इन्द्रप्रस्थ में सनातन धर्म में अत्यन्त निष्ठावान दुर्गा के उपासक कान्यकुब्ज ब्राह्मण के घर सन् 1894 की दिवाली के दिन पूज्य गुरुदेव का जन्म हुआ। जन्म कुण्डली का नाम रोपण था। उस घर में आँखें खुलने पर गुरुजी ने नित्य प्रति माता-पिता को दुर्गा की पूजा और आरती करते हुए, चण्डी का पाठ और गायत्री का जाप करते हुए देखा। माता पिता में धर्म के प्रति, भगवान के प्रति अत्यन्त निष्ठा व प्रेम देखा। माता-पिता के विश्वास पूर्ण अटल विचारों का प्रभाव बालक (गुरुदेव) के मन को विकसित करने लगा। इसके अतिरिक्त माता-पिता की दिनचर्या में रामायण की कथा और पाठ भी था। उनके सम्पर्क में बालक रामायण सुनने लगा। परिणाम स्वरूप बालक का प्रेम प्रभु श्री राम जी के प्रति दिन-दूना रात-चौगुना बढ़ने लगा। दुख-सुख में भगवान् के ऊपर माता-पिता की आत्मनिर्भरता और उस निर्भरता का मूल कारण दुर्गा माता के द्वारा दी गई अनुभूतियाँ (अनुभव स्वप्न आदि) जो उन्हें भविष्य का ज्ञान करा देती थी उसने भी बालक के विश्वास को बढ़ाने में सहायता दी। गुरुदेव के पिता पं. रामदयाल जी तिवारी ने कानपुर में मालबाबू की नौकरी छोड़कर दिल्ली आ बसने का कठोर निर्णय केवल माँ दुर्गा के स्वप्न में आदेश के फलस्वरूप लिया था।

हिन्दी भाषा का ज्ञान रामायण से मिला। गुरुदेव ने अपने पिताजी से सुन-सुनकर सुन्दर काण्ड, किष्किन्धा काण्ड हिन्दी पढ़ने से पहले ही कंठस्थ कर लिए थे। गुरुदेव रात-दिन रामायण की चौपाईयाँ ही गाया करते थे। बारह खड़ी याद होते ही

रामायण में लग गए और रामायण ने हिन्दी सिखा दी। गुरुदेव के पिताजी ने गुरुदेव को पंडितों की पाठशाला में पढ़ाया। पंडित भी सौभाग्य से बड़े कर्मकाण्डी एवं निष्ठावान थे। जिनका तीन-तीन चार-चार घंटे तक पूजा में बैठने का नियम था। ये पंडित सब नियमों से निश्चिंत होकर ही भोजन करते थे। ये ब्राह्मण विद्यार्थियों को बड़े प्रेम व परिश्रम से पढ़ाते थे। उर्दू की पढ़ाई में इतिहास से बालक का काम पड़ा। बाबर और तैमूर के हमले, सोमनाथ के मंदिर का लूटा जाना, अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड़ पर आक्रमण, रानी पद्मावती को सताना आदि बातों का बालक के कोमल व सरल मन पर बड़ा शोक संवर्धक प्रभाव पड़ा, मन में घोर चिंता रहने लगी और इस बात की जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि सचमुच कोई हमारा भगवान् है, अवतार लेता है और अब लेगा तो कब लेगा? जबकि अब तक नहीं आया। बालक का बड़ी घोर निराशा, बड़ी घोर यंत्रणा में समय बीतने लगा। भगवान् के नाम में जी नहीं लगता था और इस असमंजस में था कि जीवन को किस बढ़िया से बढ़िया काम व मार्ग में लगाया जाए। एक दिन भोले व निर्मल हृदय बालक ने रास्ते चलते-चलते रो-रोकर ईश्वर से प्रार्थना करी कि हे भगवान! आप ऐसे हैं भी कि नहीं जैसे रामायण और भागवत में लिखे है? यदि आप ऐसे ही हैं जैसे रामायण और भागवत में लिखा है तो अवतार होना चाहिए। रामावतार व कृष्णावतार के पृथ्वी के भार से इस समय का भार क्या कुछ कम है? प्रार्थना के फलस्वरूप स्वप्न में प्रभु ने बालक के उद्धार का काम महर्षि बालमुकुन्द जी महाराज के द्वारा उनके शिष्य शिवशंकर जी महाराज को सौंपा। उन्होंने स्वप्न में मिली आज्ञा का पालन करते हुए कई आदमी पूज्य गुरुदेव के पीछे लगाए जो बालक से किशोरावस्था को प्राप्त हुए गुरुदेव को समझाने लगे कि रामायण भागवत और उनमें वर्णित अवतार और ये सब भक्त भक्ति भगवान् की लीलाएँ सब सत्य हैं और अब भी इस सनातन धर्म की रक्षा के लिए गीता में किए अपने

वायदे के अनुसार उन्होंने कल्कि अवतार ले लिया है। बालक को उपरोक्त बातें बड़े प्रेम से समझाकर भजन करने के लिए प्रेरित करने लगे। आखिर में महर्षि बालमुकुन्द जी महाराज ने स्वयं कल्कि भगवान् का नाम रास्ते चलते गुरुदेव को दिया। गुरुदेव के मन ने बड़े प्रेम व आदर, आशा व उत्साह सहित यह समझकर ग्रहण किया कि मानने में लाभ है। महर्षि बालमुकुन्द जी ने गुरुदेव को मंत्र के साथ वरदान व आशीर्वाद भी दिया कि इस कल्कि मंत्र को जपने से तुम भारत के व हिन्दू धर्म के शत्रुओं का सामूहिक संहार व उन पर मार पड़ती हुई देखोंगे।

गुरुदेव का आदि गुरुजी का साथ सन् 1910 से सन् 1915 के बीच रहा। महर्षि बालमुकुन्द जी महाराज पवनपुत्र हनुमान जी के आवेशावतार थे जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के भक्ति भाव को पोषित करने में बड़ी सहायता की। सन् 1915 के समीप में क्रान्तिकारी बनारस षड्यंत्र में जेल जाना पड़ा जहाँ जेल की कोठरी में उनके बताये मार्ग से मन को लगाने की चेष्टा गुरुदेव करते रहे जिसके फलस्वरूप भक्त वत्सल शरणागत वत्सल, महाप्रेमी, महादयावान व दुष्ट असुरों के लिए महाकराल श्री कल्कि भगवान् महाराज ने गुरुदेव को दर्शन देकर सफलता प्रदान करी और कल्कि नाम के उच्चारण से कलियुग की कटाई में जो काम हो रहा है वह दिखाया। साथ ही साथ उन्हें धीरज दिया, प्रेम दिया, उत्साह दिया, प्रकाश देकर मार्ग प्रशस्त किया और असंख्यों अनुभव अवतार के काम के दिए। उन्हें पूर्व जन्म का नाम बताया और पिछले जन्म के कार्यक्रम को इस जन्म के कार्यक्रम से जोड़ दिया और बताया कि अंग्रेजी माया जिसे अंग्रेजी सभ्यता के नाम से कलियुग के प्रेमी लोग पुकारते हैं उसका अंत करूँगा। श्री कल्कि भगवान् ने गुरुदेव से कहा कि मेरा ध्यान करके, मेरे अवतार के कार्यक्रम में ही मन, बुद्धि, वाणी व करणी (कर्मों) को बाँध कर, मेरे कीर्तनों को करने से भक्तों का उद्धार होगा। मेरे कीर्तन से, मेरे नाम के उच्चारण से

आसुरी सभ्यता पर दानवता पर प्रहार होगा और संहार होगा। एक साथ ही भारत का, हिन्दू जाति का, हिन्दी भाषा का व भारत खण्ड का उद्धार होगा।

कल्कि भगवान के लिए जिज्ञासा क्यों जागी?

गुरुदेव को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी रासबिहारी बोस के दाहिने हाथ दिल्ली के मास्टर अवध बिहारी जी के द्वारा मिला जिनके क्रांतिकारी विचारों का गुरुदेव पर प्रभाव पड़ने लगा। क्रांतिकारियों से सम्पर्क इतना बढ़ा कि उसकी चरम सीमा गुरुदेव को पाँच साल की कठोर कारावास के रूप में प्राप्त हुई। मगर इससे पहले प्रभु श्री कल्कि की पूर्व-नियोजित लीला के फलस्वरूप पवनपुत्र हनुमान जी के आवेशावतार महर्षि बालमुकुन्द जी के आदेश से श्री शिवशंकर जी महाराज ने गुरुदेव को कल्कि के मार्ग पर लाने का शुभ प्रयास चालू कर दिया था। गुरुदेव के पूर्व जन्म का अधूरा कार्य पूरा करने का वातावरण भगवान् श्री कल्कि ने तैयार किया। आदिगुरुजी ने गुरुदेव को यह भलीभांति समझा दिया कि जो काम तुम बम बनाकर करना चाहते हो वही काम कल्कि नाम के उच्चारण से होता है, बल्कि बहुत तेजी से होता है। मंत्र जाप के प्रभाव से जब गुरुदेव पूरी तरह आश्वस्त हो गए तब पूर्ण रूपेण अपने स्वांस के धागे में कल्कि नाम रूपी मणियों को अपनी अंतिम स्वांस तक रात-दिन पिरोते रहे। पुराने कल्कि भक्तों ने और हमने भी सदा गुरुदेव का कंठ चलता देखा।

मानो तो देव वरना गीत का लेख

श्री गुरु जी ने समय-समय पर बताया और अपने लेखों में लिख दिया कि जो काम मुसलमान शासक 900 वर्षों में नहीं कर सके वह काम अंग्रेजों न 150 वर्षों में कर दिखाया। उदाहरण के लिए भारतीय हिन्दू समाज को तलवार के जोर पर मुसलमान शासकों ने चोटी कटवाने तथा जनेऊ उतारने पर विवश किया

किंतु धर्म से नफरत या उपेक्षा का भाव पैदा नहीं कर पाए परंतु अंग्रेजों ने विकास (उन्नति) के नाम पर छल कपट की कूटनीति द्वारा भारतीय समाज के मन में हिन्दू धर्म के प्रति उदासीनता व घृणा का भाव भर दिया। हिन्दुओं ने ग्लानि महसूस करते हुए स्वयं ही जनेऊ उतार फेंके और चोटी कटवा दी।

मुगल साम्राज्य में हमारे संस्कारों व धार्मिक मान्यताओं पर इतना आघात नहीं लगा जितना अंग्रेजों की भौतिक प्रलोभनों की चमक-दमक व आधारहीन सिद्धांतों से लगा जैसे–

1. शोषक व दलित वर्ग का सिद्धांत (फूट डालने के लिए)
2. हिन्दू बाहर से आए हैं भारत वर्ष के मूल निवासी नहीं है
3. मनुष्य की पैदाइश बन्दरों से है (Darwin theory)
4. वेदों की उत्पत्ति का समय लगभग 6000 वर्ष है, हिन्दुओं का 4 हजार वर्ष पहले का कोई इतिहास नहीं है।
5. हिन्दू धर्म के 24 अवतार जैनियों के 24 तीर्थंकरों की नकल है।
6. जगत में उत्तरोत्तर विकास (उन्नति) हो रही है।

सत्संग में श्री गुरुजी द्वारा अंग्रेजों की कूटनीति की चालें

भी बताते थे जैसे 1857 में मंगल पांडे के विरोध पर (की बंदूक का छर्रा जो खींचा जाता है उसमें सूअर की चर्बी है) पर जो गदर हुआ उसमें अंग्रेज भारत में गाजर मूली की तरह काटे गए। तब इंग्लैंड की रानी इलेजावेथ ने विचारकों (Thinkers and thoughters) की सलाह पर रिटायर्ड चीफ जस्टिस लार्ड मैकाले को भारत में अंग्रेजी स्कूलों की नींव रखने भेजा। इस संदर्भ में उन्होंने मैकाले द्वारा अपने पिता को लिखे पत्र की प्रति भी दिखाई–

धार्मिक भावनाओं पर प्रहार व मंगल पाण्डे के कहने पर विद्रोह

मैकाले द्वारा अपने पिता को लिखे पत्र की प्रति

प्रिय पिताजी, हमारे अंग्रेजी स्कूलों की बड़ी आश्चर्यजनक प्रगति हो रही है। जरूरत भर के लोगों को अंग्रेजी शिक्षा देने की हम बहुत कोशिश कर रहे हैं। कहीं-कहीं यह कार्य-माध्यम ही बनाया जा सकता है। केवल हुगली नामक एक नगर में डेढ़ हजार लड़कों को शिक्षा दी जाती है। हिन्दुओं पर इस शिक्षा का गहरा व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कोई भी हिन्दू अपने धर्म में विश्वास नहीं रखता है। कुछ व्यक्ति ईसाई धर्म दीक्षित भी हो गए हैं। यदि हमारी शिक्षा योजना मजबूती के साथ प्रचलित रहेगी तो तीस साल के अंदर बंगाल के प्रतिष्ठित परिवारों में कोई मूर्ति पूजक नहीं रह जाएगा, इसका मुझे अटल विश्वास है। इस धर्म परिवर्तन की योजना के बिना ही ज्ञान एवं मनन से भी यह अनायास सिद्ध हो सकता है। धार्मिक स्वतंत्रता से इसका किसी तरह विरोध नहीं होगा। सुदूर भविष्य की इस सम्भावना में मैं हार्दिक आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ।

–आपका प्रिय पुत्र, मैकाले

अत: भोली भाली जनता ने चमक दमक भौतिक प्रलोभनों व आधारहीन सिद्धान्तों को स्वीकार किया। गुरुकुलों का देखते देखते दमन हुआ और उपरोक्त बातों को स्कूल कॉलेजों में बच्चों को पढ़ा-पढ़ा कर उन्हें मानसिक गुलाम बना दिया। आज

हमारे देश से अंग्रेजों को गए लगभग 63 वर्ष हो चुके परंतु अंग्रेजों के उत्तराधिकारी काले अंग्रेजों ने हमें आज भी मानसिक रूप से गुलाम बना रखा है। कल्कि भगवान् महाराज भूमि भार उतारने आए हैं। वह अंग्रेजों की पूरी चाल पहचानते हैं। इस विकराल समय में उन्होंने ऐसी विशेष कृपा की है जैसी की पिछले किसी भी युग में नहीं की है। वह जप-तप-हवन करने वालों के साथ खड़े हैं। समय-समय पर वह स्वप्न-जाग्रत वाणी अनुभव दे कर रास्ता दे रहे हैं। जैसा सत्यनारायण व्रत कथा में राजा चन्द्रचूढ़ को दिया।

अंग्रेज विचारकों द्वारा गुरूकुल का सर्वेक्षण

अहर्निश (हर समय) भजन में गोते लगाते थे

गुरुदेव ने प्रायः सत्संग में बताया कि निष्कलंक अवतार की लीला का प्रादुर्भाव स्थल भी किसी तीर्थ से कम नहीं है। श्री कल्कि अवतार की लीला का इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) उत्तम तीर्थ है। सौभरि ऋषि ने भी युधिष्ठिर से यही कहा था कि मथुरा से इन्द्रप्रस्थ उत्तम धाम है। क्योंकि यहाँ इन्द्र ने यज्ञ करके ब्राह्मणों को प्रस्थ-प्रस्थ (किलो-किलो) रत्नों की दक्षिणा दी थी। इन्द्र के यज्ञ में भगवान विष्णु ने प्रकट होकर अपने सारे तीर्थ यही स्थापित किये और शिवजी से कहा आप भी अपनी काशी यहीं ले आइये, इसलिये मुझे इन्द्रप्रस्थ से बहुत प्रेम है।

गुरु जी को कभी हमने सोते नहीं देखा। वह अगर लेटते भी थे तो नाम जाप करते हुए दोनों हाथ जोड़े हुए माथा जमीन पर टिकाकर पेट के बल लेटते थे। मेरी नानी का घर उनके घर के

नज़दीक ही है इसलिए यदा-कदा देर रात्रि उनके घर जाने का मौका मिलता रहता था।

जब भी हम जीना चढ़ते हुए आवाज लगाते भाई! तो एक दम वहाँ से पलटकर आवाज आती थी आओ! कमरे में घुसते ही गुरुदेव को सीधे बैठे भगवान का जप करते हुए पाया। गुरुदेव को यह अत्यन्त दुर्लभ सिद्धि यौवनावस्था में ही प्राप्त हो गई थी। बुजुर्ग कल्कि भक्तों के मुख से भी सुना है। प्रसंग विस्तार के भय से उनके गाँव काकरपुरा की घटना आगे बतादेंगें।

गुरुदेव ने आचरण में उपरोक्त कर्म को निभाया। रविवार को तो अनेक कल्कि भक्तों ने उन्हें महामंत्र के अखण्ड जाप संकीर्तन में संलग्न पाया।

अन्तिम रचना

श्री कल्कि दिग्विजय नाटक गुरुदेव की अन्तिम कृति थी जिसमें उन्होंने लिख दिया कि ''मैं अपना काम कर चुका। इससे किन्हीं को कुछ भी सुख मिला तो मैं अपना जन्म सफल समझूँगा।''

महाप्रयाण

7 नवम्बर, 1966 के दिन गौ रक्षार्थ विशाल जन समूह लालकिला मैदान से संसद तक पहुँचा जिसमें श्री कल्कि मंडल के सदस्य, कई पीठों के शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, माधवाचार्य, निम्बार्काचार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारीगण एवं अनेकानेक सन्यासी शिरोमणि अकाली दल के ग्रन्थी एवं अन्यान्य सिक्ख नेता, वैरागी नागे, उदासीन-यह कहिए कि सन्यासी से लेकर ब्रह्मचारी और ब्राह्मण समाज से लेकर वाल्मीकि वर्ग तक के सभी स्त्री-पुरुष बालक-वृद्ध सम्मिलित थे। वहाँ भारत सरकार ने साधु सन्त गौ भक्तों पर बेदर्दी से गोलियाँ तक चलवाई, अमानवीय व्यवहार किया जिसका गुरुदेव को बड़ा ही आघात पहुँचा। इसी दिन रात्रि में उन्होंने अपना शरीर

छोड़ दिया और हमारे बीच प्रत्यक्ष रूप में न होकर भी आज अप्रत्यक्ष रूप से साथ खड़े हैं। हमारी बातें भगवान तक पहुँचा रहे हैं, हर बात सुन रहे हैं - और हमारा सब काम कर रहे हैं।

卐 卐

यद्दोर्दण्डकरालसर्पकवलज्वालाज्वलद्विग्रहाः
नेतुःसत्करवालदण्डदलिता भूपाःक्षितिक्षोभकाः।
शश्वत् सैन्धववाहनो द्विजजनिः कल्किः परात्मा हरिः
पायात्सत्ययुगादि कृत्स भगवान्धर्मप्रवृतिप्रियः॥ 3॥

—श्री कल्कि पुराण, प्रथम अध्याय

भयंकर अत्याचार से पृथ्वी की शांति को नाश करने वाले राजाओं को जो अपनी भयंकर भुजाओं रूपी भुजंगों की विष की ज्वाला से भस्म करेंगे, जिनकी भयंकर तलवार की तेज धार से अत्याचारी राजाओं के शरीर कुचले जाऐंगे, ब्राहाण वंश में उत्पन्न, घोड़े की सवारी करने वाले, सत्यादि युगों में अवतार लेने वाले धर्म की प्रवृति जिन्हें प्रिय है, वे भगवान कल्कि, परमात्मा हरि कल्कि रूप में हमारी रक्षा करें।

श्री कल्कि ने गुरु रूप धरा

श्री कल्कि ने गुरु रूप धरा गुरु ने कल्कि दर्शाया है।
तुम एक रूप हो एक ही हो सब एक तुम्हारी माया है।
चेतना आपकी माया ने जड़ जग चैतन्य बनाया है।
इस जग में ऊधम मचा जभी तुमने ही किया सफाया है।
गुरु बालमुकुन्द ने मेहर करी वरदान का हाथ बढ़ाया है।
अंदर और बाहर प्रगट हुए कंचन सी कर दी काया है।
जड़ माया सत्य की आड़ बनी सब जग इसमें बौराया है।
युग में परिवर्तन करने को तुम्हें कल्कि रूप सुहाया है।

आभार

संसरति इति संसार। जो निरंतर परिवर्तित हो रहा है उसी को संसार कहते हैं। परमात्मा के सिवाए कुछ भी स्थिर नहीं है। इस परिवर्तित संसार में मुझ अज्ञानी को भी गुरुकृपा से ज्ञानवान और कर्मशील सदस्य मिले जिनके सहयोग से आज आपको महाक्रांतिकारी की खोज भगवान श्री कल्कि के भजन सरल अनुवाद में उपलब्ध हो रहे हैं। इसमें सहयोग देने वाली टीम निम्नलिखित है—

1. आदरणीय पंडित जयदत्त जोशी जो परम् भागवत् परम् वैष्णव व सरलता की मूर्ति हैं। सरल स्वभाव के अनुकूल उन्होंने अपने प्रिय शिष्य श्री विजय बंसल की धर्मपत्नी सुश्री इंदु बंसल के आग्रह पर इस पुस्तक का कल्कि भगवान के प्रति अनन्य आस्था से प्रभावित होकर सरल अनुवाद किया। परम् आदरणीय पंडित जोशी जी ने गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी के भजनों का पाठकों के लिये सरलता से अनुवाद ही नहीं किया अपितु भगवान श्री कृष्ण जो उनके इष्ट हैं उनको अपने समक्ष रखते हुए भजनों में छिपे हुए भावों का जो भावार्थ प्रकट किया है वह कल्कि समाज व जिज्ञासुओं के लिये वरदान होगा। भावार्थ पूरा होने के बाद जोशी जी को स्वप्न अनुभव हुआ कि उसे चौमुखा मंदिर में भोले बाबा के समक्ष समर्पित करो। श्री जोशी जी जनकपुरी निवासी हैं। वह इस स्वप्न अनुभव का अर्थ न समझ पाए। उन्होंने सुश्री इंदु जी को बताया, वह स्तब्ध रह गईं कि सरस्वती जी ही नहीं, इन भजनों व अनुवाद में तो शंकर भगवान भी गोपीश्वर बनकर सम्मलित होकर कल्कि समाज को आशीर्वाद देने आ गए हैं। अगले दिन सुश्री इंदु बंसल चावड़ी बाज़ार चौमुखा मंदिर में गौरीशंकर भगवान को अनुवाद समर्पित करने आईं। कमाल है उसी दिन गुरु पूर्णिमा भी थी। वहाँ से कूण्डेवालान मंदिर में गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी की पूजा करने गईं। इस सरल अनुवाद की मनियों की विलक्षण कड़ी पूजनीय जयदत्त जोशी, श्री विजय बंसल एवम् सुश्री इन्दु बंसल जी का हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

2. सुश्री मेघना गोयल जी ने एक किसान की भांति अपने साहित्यक प्रतिभा के बीज ऐसे बोए कि भगवान श्री कल्कि के साहित्य का काम चंद हाथों में न रहकर अनेक हाथों में पहुँच गया। उन्होंने सभी के यहाँ एक ही कम्पनी का फॉन्ट लगवाकर सभी को हिन्दी की टाईपिंग में माहिर कर दिया। वह उभरते कम्पोजर/ऑपरेटर हैं श्री राजेश गुप्ता, उनकी धर्मपत्नी सुश्री पूजा गुप्ता, कुमारी आकांशा जैन, सुश्री रमणी अग्रवाल, कुमारी स्वाती जैन, कुमार अनिरुद्ध, कुमार विष्णु गोयल जिनके हम सभी के साथ आभारी हैं।
3. श्री राजेश गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी पूजा गुप्ता ने सरल अनुवाद में जो मुझे सहयोग दिया है उसका मैं बहुत आभारी हूँ। यदि उनके स्थान पर कोई भी ऑपरेटर होता तो वह इस भावार्थ सरल अनुवाद के जटिल संशोधन पर कई बार हाथ जोड़ देता कि बाबूजी बेशक पैसे न देना आपका काम हम से नहीं होगा। इस दम्पत्ति के सकरात्मक मदद से ही श्री गुरुजी के भजनों का यह सरल अनुवाद आपको उपलब्ध हुआ है। इस दम्पत्ति का मैं बहुत आभारी हूँ।
4. सुश्री अलका गोयल ने तीन वर्ष इस भजनावली की सेटिंग, प्रिंटिंग, डिजाईनिंग के कार्य में जो सकरात्मक सहयोग दिया है। उसी वजह से यह आपके समक्ष है।
5. सुश्री निधी क्रिस्टन के द्वारा इस भजनावली के कवर की डिजाईनिंग के आभारी हैं।
6. श्री विनय साहू व रमेश चंद ने श्री राजेश गुप्ता व सुश्री पूजा गुप्ता के यहाँ से संशोधन के पेपर लाने लेजाने का काम किया है, उनका आभार प्रकट करते हैं।
7. श्री नीरज गोयल व श्री विकास गोयल की प्रस्तुत पुस्तक के मैटर एवं चित्रों की सराहनीय सैटिंग के लिये हम आभारी हैं।
8. सर्व श्री पदम् गोयल इन्होंने भजन, गुरुजी की जीवनी की सैटिंग में सहयोग दिया है, इनके हम आभारी हैं।
9. सर्व श्री अशोक सिंघल व श्री आदर्श सिंघल द्वारा पेपर प्रिंटिंग बाईन्डिंग में समय समय पर दी गई सलाह व सहयोग के हम आभारी हैं।

सरस्वती जी द्वारा प्रदत पद संग्रह

1. कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई

कल्कि जी मैंने तुम्हरी शरण लई,
उर अंतर जब कल्कि नाम की
प्रज्वलित ज्योति भई॥
कमल नयन कलि कुल हंता की,
सूझी झलक नई॥
शत्रु समूह संहारन स्वामी,
मूरति तब छवि मई।
अधम उधारन नहीं सूझत कोई,
संगी साथी सही।
धर्म धाम या भरत खंड के,
अधिपति जग विजयी।
शरणागत वत्सल प्रभु तुम बिन,
सूनी लगत मही।
वज्र प्रहार नाम कल्कि ते,
कलि की अवधि दही।
सुर मुनि संत समुझि मुस्काने,
माया विगत भई।
विकट विशाल अश्व आरोही के,
खड़ग की दमक छई।
फट गए घन निराश के कारे,
(बादल फटे निराश के कारे)।
(विदरे घन निराश के कारे,)
जय-जयकार भई।
कल्कि जी मैंने···

महिमंडल भुजदंड तिहारे की,
महिमा मुदित मई॥
भक्त भूमि भूसुर सुरभिन में,
आशा उदित भई॥ कल्कि जी मैंने···
बालमुकुन्द गुरु आश लगाई।
आशिष सहर्ष दई।
करत करत तव चरण वंदना,
बिगड़ी बनत गई। कल्कि जी मैंने···

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कहा है कि कल्कि जी जब से मैं आपकी शरण में आया हूँ, तभी से आपके नाना प्रकार के चमत्कार व अनुभव हो रहे हैं—

हे कल्कि भगवान! जब से मैंने आपकी शरण ली, मेरे मन के भीतर आपके नाम की ज्योति प्रज्वलित हो गई है। हे कमल नयन भगवान कल्कि, आप कलिकुल एवं शत्रु समूह के मारने वाले हैं। मुझे आपकी अनोखी झलक दिखाई दे रही है। आपकी झलक मेरे हृदय में समा गई है। मुझे आपके अलावा कोई सही संगी साथी नहीं नज़र आता, जो मुझ जैसे दीन हीन का उद्धार कर दे। आप भरत खण्ड (ऋषियों की तपो भूमि युगों से आपकी अवतार भूमि) के सम्राट हैं। हे शरणगत वत्सल प्रभु! तुम्हारे बिना यह संसार सूना लगता है। कल्कि नाम रूपी वज्र प्रहार से कलि (इस युग के महाराजाधिराज) की उम्र समाप्त होती जा रही है। सुर-मुनि और संत आपके द्वारा कलियुगी माया को मिटाने की बात समझकर मुस्कुराने लगे हैं। हे श्री कल्कि तीव्र गति वाले चंचल अश्व पर सवार हाथ में भयंकर तलवार थामें हैं। जिसकी चमक चारों ओर छा गई है। आपकी तलवार की चमक से निराशा के घने काले बादल फट गए और चारों ओर आपकी जय-जयकार हो रही है।

2. सतयुग रवि सम नभ बढ़न लगा

सतयुग रवि सम नभ बढ़न लगा
कलियुग तम जग से कढ़न लगा
हरि नाम का रंग जब चढ़न लगा
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम कहो कल्कि नाम सुनो
कल्कि नाम पढ़ो कल्कि नाम गुनो
कल्कि नाम के मोती मन से चुनो
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम के सम नहीं कोई सगा
कल्कि नाम से बेड़ा किनारे लगा
कल्कि नाम से दुष्टों का काल जगा
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम ने कलियुग ह्रास किया
कल्कि नाम ने युग बल ग्रास किया
कल्कि नाम ने दुष्टों को त्रास दिया
कल्कि नाम जपो कल्कि नाम जपो
कल्कि नाम की ध्वनियाँ गरज रहीं
कुकरम से बचो तुम्हें बरज रहीं
अधरम की दीवारें लरज रहीं
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम स्वयं हरि विग्रह है
कलियुग का कर रहा निग्रह है
असुरन को महामारी ग्रह है
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि नाम अनुभव का द्वारा है

भूमि भार उतारन हारा है
जिन्ने काल रूप अब धारा है
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
कल्कि के द्वार पुकार करो
पद वंदन बारंबार करो
सब तन-मन-धन बलिहार करो
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो
गुरु बालमुकुन्द जगाय रहे
उठो श्री कल्कि अब आय रहे
शरणागत दर्शन पाय रहे
कल्कि नाम रटो कल्कि नाम रटो

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि नाम का भजन करने के लिए कहा गया है—

सूर्य के समान सतयुग इस संसार रूपी आकाश में बढ़ रहा है। कलियुग रूपी अंधकार खत्म होने लगा है। हरि नाम का रंग भक्तों के मन में छाने लगा है। अत: तुम सब कल्कि का ही नाम रटते रहो, कल्कि नाम ही जुबान पर लाओ। उन्हीं के नाम को कानों से सुनो। उन्हीं का नाम पढ़ो। उन्हीं के नाम का चिंतन करो। समय को बेकार मत जाने दो। प्रतिपल कल्कि नाम के मोती मन से चुनो। उन्हीं का नाम रटते रहो। कल्कि नाम के समान हमारा कोई सगा नहीं है। उन्हीं के नाम से हमारी जीवन नैय्या का बेड़ा किनारे लगा है। उन्हीं के नाम से दुष्टों का काल जगा है। उन्हीं का नाम रटो। कल्कि के नाम लेने से कलियुग कटता है। कल्कि नाम ही कलियुग की इतनी लम्बी आयु को खा गया। उनके नाम ने दुष्टों को भयभीत किया हुआ है, अत: उन्हीं के नाम को जपते रहो। कल्कि के नाम

की ध्वनियाँ बुरे कार्यों से बचने के लिए तुम्हें सावधान कर रही हैं। अधर्म की दीवारें गिर रही हैं। तुम कल्कि का नाम रटते रहो। कल्कि नाम स्वयं भगवान का शरीर है, जो कलियुग का विनाश कर रहा है। कल्कि नाम असुरों के लिए अशुभ ग्रह है, जो कि उनमें महामारी फैला रहा है। कल्कि नाम ही रटते रहो। कल्कि नाम अनुभव का द्वार है। कल्कि नाम भूमि का भार उतारने वाला है। उसने अब कलियुग के पापियों के लिए साक्षात काल का रूप धारण किया है। उनका नाम रटते रहो। तुम कल्कि के द्वार पर अपनी पुकार करो, अपने दुख-दर्द दूर करने की प्रार्थना करो। उनके चरणों की बारम्बार वंदना करो। अपना सब कुछ तन-मन-धन उन पर न्योछावर करो और उनका नाम रटो। गुरु बालमुकुन्द जी तुम्हें जगा रहे हैं कि कल्कि जी जल्दी ही प्रकट होने वाले हैं। उनके आने की तैयारी करने के लिए उठो। जो उनकी शरण ग्रहण करेंगे वही लोग उनका दर्शन पाएँगे अत: तुम हर समय कल्कि नाम की रटन में लग जाओ।

3. शिव दहे काम जेहि बलते

शिव दहे काम जेहि बलते, बल नाम के बड़े प्रबल ते,
कलि कटेहु हार छल बलते जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
लज्जित ठाड़े मन मारे, कंदर्प कुसुम सर डारे,
लखि आयत नयन तुम्हारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
कानन में दमकत कुंडल जगमग जगमग मुख मंडल,
विभवे कोटिन आखंडल जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
तब प्रखर किरन प्रतपंति, तपि असुर संघ विलयन्ती,
धग धग धग लपट ज्वलन्ती जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
अरि संघ दहन भुज ज्वाला, शिर शोभित ज्वाला माला,
दश दिशि में होत उजाला जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

तब खर असि दमक-दमक रही, चंचल चपला-सी चमक रही,
कलानल मनहु दहक रही जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
हृदयेश्वर हृदय बिहारी, हृदयांधकार अपहारी,
तुम ब्रह्म संपदा कारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
काटनहारी रौरव की, रक्षक भारत गौरव की,
तब चरण कमल सौरभ की जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
गुरु बालमुकुन्द पायक की, कल्कि मंडल नायक की,
जग दुर्लभ सुखदायक की जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भगवान कल्कि से प्रार्थना की गई है कि आप प्रकट होकर कलिकाल के इस असुर दल का संहार उसी तरह कर दो, जैसे भगवान शंकर ने कामदेव को भस्म किया था:—

जिस सामर्थ्य से भगवान शंकर ने कामदेव को भस्म किया था वैसे ही हे कल्कि जी आप असुरों का दमन करो। हे कल्कि जी! आप कलियुग के कपट को अपनी शक्ति से काट दीजिए। आपकी जय हो। जैसे कामदेव भगवान शिव के सम्मुख मन मारकर, कुसुम के सर को गिराकर लज्जित-सा खड़ा था वैसे ही आपके विशाल नयनों को देखकर उसकी भी वही दशा हो रही है। आपकी जय हो। आपकी विशाल आँखें, कानों में कुण्डल की दमक, जगमगाता हुआ मुख मण्डल, करोड़ों भूमण्डलों की वैभवता को कम कर रहा है। आपके तेज की प्रखर किरणों से तपकर असुरों के समूह पिघलकर नष्ट हो रहे हैं। आपके तेज की धधकती ज्वालाओं मे असुर विलीन हो गए हैं। आपकी जय हो। हे श्री कल्कि दुश्मन के समूह को जलाने के लिए आपकी भुजाओं मे तलवाररूपी ज्वालामुखी और शिर में आग की मालाऐं सुशोभित हो रही हैं, जिससे दसों दिशाओं में उजाला फैल रहा है। आपकी जय हो। आपके हाथ में तलवार

चंचल बिजली की तरह चमक रही है। उसमें से ऐसी आग की लपटें निकल रही हैं, मानो कालाग्नि दहक रही है। आपकी जय हो। हे हृदयेश्वर! मेरे हृदय में विहार करने वाले कल्कि जी आप ही मेरे हृदय के अज्ञानांधकार को मिटाने वाले हो। आप ही ब्रह्म का ज्ञान कराने वाले हो। आपकी जय हो। हे श्री कल्कि जी आप ही नरक के कष्टों को काटने वाले और भारत के गौरव की रक्षा करने वाले हो। आपके चरण कमल की सुगंध चारों ओर फैल रही है, आपकी जय हो। श्री हनुमानजी के अवतार गुरुवर बालमुकुन्द जो कल्कि मण्डल के नायक और इस जग को दुर्लभ सुख देने वाले को, आपने हमें रास्ता दिखाने के लिये भेजा है, हे प्रभु आपकी सदा जय हो।

4. प्रह्लाद की विपद निहारी

प्रह्लाद की विपद निहारी, तुम से नहीं गही सहारी,
प्रगटे निज विरद संभारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
तब कड़क दिगंत गुँजावे, झट खंभ मध्य फट जावे,
ब्रह्माण्ड धड़ाका खावे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
श्री हरि कोपे जिन जानी, सब ने अपने मन मानी,
निज धाम की प्रलय निशानी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
तुम युद्ध असुर संग कीना, कियो उदर फाड़ तन हीना,
निज नाम सुयश रख लीना जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
तब विकट नयन नख दंता, नर हरि स्वरूप भगवंता,
जय हो हिरनाकुश हंता जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
ग्रीवा पे सटा फहरावें मुख क्रोधवंत जमुहावें,
असि सम जिभ्या लहरावें जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
गर्जन गर्भांभक काढ़ें दिग गगन में कटी कराड़े,
असुरन हृदि पड़ी दराड़ें जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

ब्रह्मादिक सुर यश गावें, शंकर से खड़े मनावें,
कमला समीप नहिं जावें जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
नरसिंह तेजोमय झूमें, प्रह्लाद का मुखड़ा चूमें।
दश दिशि में मच गई धूमें जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
सुर संत अभय कर डारे, युग-युग में कष्ट निवारे,
हम भी हैं नाथ तुम्हारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
गुरु बालमुकुन्द लखाए, अब हरि कल्कि बन पाए,
शरणागत जन यश गाए जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भगवान कल्कि को नृसिंह का ही अवतार मानकर यह प्रार्थना की है कि जिस प्रकार से प्रह्लाद की रक्षा के लिए भगवान ने नृसिंह का अवतार लिया था, आज उन्हीं कल्कि जी ने हमारी रक्षा के लिए अवतार लिया है—

पिता हिरण्यकश्यप द्वारा प्रह्लाद को दी जाने वाली यातनाओं, विपत्तियों को देखकर आप उसके कष्ट को सहन नहीं कर पाए। अपनी भक्तवत्सल प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए आप प्रगट हुए। आपकी सदा जय हो। आपकी भयंकर गर्जना ने संपूर्ण दिशाओं को गुँजा दिया। आप जब गर्जना करते हुए खंभा फाड़कर प्रगट हुए तो उससे सारा ब्रह्माण्ड घबरा गया। आपकी जय हो। जिन्होंने श्री हरि को क्रोधित होते देखा, उन्होंने अपने मन में मान लिया था कि अब उनके लोक में प्रलय आने वाली है। ऐसे भयंकर प्रभु आपकी सदा जय हो। नृसिंह रूप भयंकर आँख, नख और दाढ़ों वाले भगवान आपने असुर हिरण्यकश्यप के साथ युद्ध किया और उसके पेट को फाड़ कर अपने भक्तवत्सल नाम के यश को कायम रखते हुए प्रह्लाद को बचाया। आपकी सदा जय हो। आपकी गर्दन पर बाल लहरा रहे हैं, आप क्रोधित मुख से जम्हाई ले रहे हैं। तलवार के समान जिह्वा निकालने वाले प्रभु आपकी सदा जय हो। आपकी गर्जना से गर्भवती स्त्रियों के

गर्भ गिरने लगे। दसों दिशाओं और आकाश में बिजलियाँ कड़कने लगीं और असुरों के हृदय फटने लगे। आपकी सदा जय हो। ब्रह्मा आदि देवता आपका यश गाने लगे। भगवान शंकर भी डर के मारे समीप न जाकर अपने स्थान पर खड़े-खड़े आपको मनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आपके क्रोध के डर से लक्ष्मी जी आपके पास जाने से डर रही हैं, तब उन्होंने भक्त प्रह्लाद को आपका क्रोध शांत करने के लिये आपके आगे कर दिया। झूमते हुए क्रोधित नृसिंह भगवान आप अपने भक्त प्रह्लाद को गोद में लेकर उसका मुख चूमने लगे। हे नृसिंह भगवान दसों दिशाओं में आपकी कीर्ति की गूँज गूँजने लगी। आपकी सदा जय हो। हे सुर और संतों को अभय करने वाले नारायण युग-युगों से आपने अवतार लेकर भक्तों के कष्टों को इसी तरह दूर किया है। हे नाथ! हम भी आपके भक्त हैं (हमारे पर भी ऐसी कृपा करें) आपकी सदा जय हो। गुरु बालमुकुंद जी ने देखा कि वही श्री हरि अब कल्कि अवतार में आए हैं इसलिये उनकी शरण में आने वाले भक्त उनके गुणों का गान करते हुए निर्भय हो जाएंगे और कहेंगे हे कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो!

5. अधरम के अँधड़ में उड़े औसान उनके

अधरम के अँधड़ में उड़े औसान उनके
जिन्होंने खाए केवल किताबों में धक्के हैं

कल्कि जिन सार कियो माद्दियत पे मारी लात
कल्कि ने देकर प्रकाश किए पक्के हैं

पक्के प्रह्लाद भए प्रबल प्रकाश पाय
भीतर से भए निहाल जब छक्के हैं

हरि को आधार धार हरि की लीला निहार
देकर गए आदर्श बड़े पक्के हैं

भयो अचँभा बीच खम्बा से प्रगट भए

नरहरि स्वरूप ये ही कल्कि कड़क्के हैं

अँधा धुँध धाँधली निहार कलियुगियन की
अबकी आय फेर कल्कि रूप धर धमक्के हैं

अपने जनन को निज रूप दर्शाय रहे
अनुभव दिखाय लय कर रहे लपक्के हैं

कल्कि के नाम की शरण है जिसने गही
रोम-रोम खिलो चाल चलत झमक्के हैं

पक्के प्रह्लाद किए अगले जमाने में
अब भी शरणागत अनेकों किए पक्के हैं

आगम की वार्ता से मुदिता है संतों में
सुन-सुन घबराय रहे कलियुगी उचक्के हैं

नही गुँजाइश मन में अनुभव आधार नही
चाहत जो करन अपने मन को सुधार नही

वे ही सुन कल्कि नाम उठत तमक्के हैं
शरणागत बनके जिन हरि में लगायो ध्यान

अंदरहू बाहरहू भानु सम चमक्के हैं
आँख मूँद बैठे तो सविता को दोष नही

पक्के पथ जग को लखाय रहे पक्के हैं

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि की महिमा का गुणगान करते हुए उन लोगों को चेतावनी दी है, जो उनपर विश्वास नहीं कर रहे हैं—

जिन्होंने केवल किताबी ज्ञान ही पाया है, भगवान श्री कल्कि जी का वास्तविक अनुभव नहीं हुआ है। अब सब तरफ झूठ कपट

(अधर्म) की आँधी में उनका विश्वास अब डगमगाने लगा है। इसके विपरीत जिन भक्तों का कल्कि पर अटल विश्वास है, उन्होंने लोभ लालच आदि (अधर्म के ढकोसलों को) ठोकर मार दी है, उनको कल्कि भगवान ने वास्तविक ज्ञान का प्रकाश देकर भक्ति मार्ग में पक्का कर दिया है। भगवान का पक्का प्रकाश (ज्ञान) पाकर वे लोग भक्त प्रह्लाद की तरह भगवान की भक्ति अपने अंतर्मन में पाकर निहाल हो गए और भगवत कृपा से युक्त हो गए हैं। भगवान पर भरोसा करके, उनकी दैवी लीला देखकर ये भक्त औरों को पक्के आदर्श दे रहे हैं। जो भगवान भक्त प्रह्लाद के विश्वास को पक्का करने के लिए नृसिंह रूप में खंबे को फाड़कर प्रकट हुए थे, वही कलिकाल के पापियों को मारने हेतु कल्कि के रूप में प्रकट हुए हैं। कलियुगी आकाओं (पापियों) की अंधाधुंध धाँधली, बेईमानी देखकर अबकी बार वही नृसिंह भगवान ने कल्कि भगवान का रूप धारण कर समय सीमा की परवाह किये बिना अवतार लिया है अर्थात कल्कि अवतार जो 4 लाख 32 हजार वर्ष बाद होना था (जिस प्रकार गऊ, विप्र, धर्म पर गोरी व काली अंग्रेजी कौम ने कूटनीति से इन पर कुल्हाड़ी चलाई है) उसे देखते हुए इस देश के सच्चे स्वामी हिरण्याकश्यप को मारने वाले ने समय सीमा की परवाह किये बिना अवतार लिया है। श्री कल्कि जी अपने भक्तों को अनुभवों द्वारा अपना रूप दिखाकर उन्हें पक्का बना रहे हैं। जिन लोगों ने भी कल्कि के नाम की शरण ली है उनका रोम-रोम प्रसन्नता से खिल उठा है और वह निडर होकर प्रभु की भक्ति करते हुए अपने कर्तव्य निभा रहे हैं। पिछले जमाने में जिस प्रकार प्रह्लाद को अपना पक्का भक्त बनाया था, आज भी अनेकों भक्तों को, जो उनकी शरणागत हुए हैं, उन्होंने पक्का किया है और कर रहे हैं। उनके आने की बात सुनकर संतों के मन में प्रसन्नता छाई है और कलियुगी आका (पाप फैलाने वाले) उनके अवतार लेने की बात सुनकर घबरा रहे हैं। ऐसे लोगों

के मन में न तो भरोसा ही है और न भगवान का कोई अनुभव है। जो मनुष्य अपने मन को सुधारना ही नहीं चाहते, ऐसे लोग कल्कि का नाम सुनकर तमक उठते हैं (क्रोध फालतू की बहस करने लगते हैं) अपने से छोटों पर तो वह बात-बात पर क्रोधित होते हैं। जिन्होंने भगवान की शरणागति ग्रहण करके उनका ध्यान लगाया है, वे मन के भीतर और बाहर सूर्य की तरह चमकने लगे हैं। यदि कोई व्यक्ति अपनी आँखें बंद कर ले और कहे कि मुझे तो उजाला नज़र नहीं आ रहा है तो इसमें सूर्य का तो कोई दोष नहीं है। इसके विपरीत जो भगवान के पक्के भक्त हैं, उन लोगों को कल्कि भगवान का पक्का रास्ता दिखाई दे रहा है।

6. लीलाधारी शक्ति निधान

लीलाधारी शक्ति निधान,
अवतारों में कल्कि महान।
खर खड़्ग धार दमकित दिगंत,
कंदर्प कोटि सम द्युति अनंत।
अति ललित तिलक, दग दगित भाल,
अरविंद नयन उर भुज विशाल।
झम झमित वस्त्र चमिकतास्त्र,
मणि-रत्न भास, भूषण प्रकाश।
अश्वाधिरूढ़ हर भूमि भार,
चितवन उदार गल सुमन हार।
सुर-वृन्द-नमित, पद-कंज द्वन्द,
दर्शन से कट रहे यम के फँद।
है कोटि-जन्म, अघ-राशि नाश,
कर रहे अघ्रि हृदि तिमिर ह्रास।
हे म्लेच्छ-वंश तापन प्रचंड,

मध्याह्न काल रवि सम उद्यन्त।
झल झलित दिव्य ज्योति विभांत,
हो रही धरातल समाक्रांत।
दुर्गुण दुष्चरित्र के शमित्र,
कल्कि मण्डल के परम मित्र।
हे कारुणीक! कल्कि कृपाल,
प्रगटो—प्रगटो दुष्टों के काल।
तब चरण शरण ही हैं आधार,
कर रहे आपकी ही पुकार।
हम नाम आपका रहे टेर,
आवो-आवो! मत करो देर।
जो नमन करें प्रत्येक याम,
यश कीर्ति बढ़ें हों पूर्ण काम।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि के स्वरूप का वर्णन करते हुए उनसे अवतार रूप मे प्रकट होने की गुहार लगाते हुए कहते हैं—

हे लीलाधारी शक्ति के भण्डार भगवान श्री कल्कि, आप सब-अवतारों में महान हैं। आपके हाथ में जो तलवार है उसकी तेज़ धार की चमक से समस्त दिशाएँ चमक रही हैं। आपके खड़ग की चमक करोड़ों कामदेव के समान है। आपके भाल पर सुंदर तिलक चमक रहा है। आपके कमल से नयन हैं। आपकी विशाल भुजाओं और छाती पर जो वस्त्र, अस्त्र-शस्त्र, आभूषण मणिरत्नों से जड़े हुए हैं उनकी चमक का प्रकाश चारो ओर फैल रहा है। हे कल्कि जी आप घोड़े पर सवार भूमि-भार हरने वाले, उदार दृष्टि वाले, गले में फूलों का हार पहने हैं। आपको सब देवों का समूह नमस्कार कर रहा है। आपका यह सुंदर स्वरूप भक्तों का द्वन्द मिटाने वाला और यम के फँदों को काटने वाला है। यह करोड़ों जन्मों के पाप समूह का नाश

करने वाला और अज्ञान रूपी अंधकार को हृदय से मिटाने वाला है। हे म्लेच्छ वंश को भयंकर दुख देने वाले आपका तेज पापों का नाश करके भी सूर्य की तरह चमचमा रहा है। आपकी दिव्य ज्योति की आभा संपूर्ण धरातल में झलक रही है। आप दुर्गुण और पापियों के शत्रु हैं और कल्कि मण्डल के परम मित्र हैं। हे करुणा निधान कृपालु कल्कि आप दुष्टों के साक्षात् काल हैं। आप जल्दी प्रकट हो जायें। आपके चरणों की शरण ही हमारा एकमात्र सहारा है। हम आपकी ही पुकार कर रहे हैं। अब देर मत करो। हे कल्कि जी! जो हर प्रहर (तीन घन्टे की एक प्रहर) आपको नमस्कार करता है, उसका यश व कीर्ति बढ़ती है और उसकी हर मनोकामना पूरी होती है।(एक स्वप्नानुभव के अनुसार हर तीन घंटे बाद भगवान श्री कल्कि को नमस्कार करना याद न रहे तो सुबह अथवा जब दिन में समय मिले एक ही बार में आठ बार की नमस्कार कर लें)।(यवन इसे इबादत (नमाज़) कहते हैं और इसे याद दिलाने के लिये मस्ज़िदों से सायरन बजाते हैं ताकि नमाज़ पढ़ने वाले मस्ज़िद में आ जाऐं वरना जो जहाँ है वहीं इबादत कर लें।)

7. गउअन गरीबन किसानन की विपता मिटें

गउअन गरीबन किसानन की विपता मिटें
पिट कर मक्कारी शकलें बदल जाए भोली में
भोली-भाली जनता या हिंद की मनावै फाग
बदलो जमाना दीखै आँख की मिचौली में
दृष्टि हो मेहर की कल्कि भगवान की
उतर जाय भार उनकी ठठ्ठा ठठोली में
गऊअन के बैरियन के वन के वन भस्म होय
मचै धुधमारी आनंद मनें होली में
होवै स्वतंत्र यदि भारत तो रंग बँधैं

सबके दही मिश्री व मक्खन हो झोली में
ऊँचे आदर्श और प्रेम में उभरत फिरै
नर और नारी रंगें केशर व रोली में
एक मन एक प्राण एक सुर एक तान
लय हों अनंत रूप सागर झकोली में
कल्कि भगवंत के दिगंत व्यापी यश गाय
मन को रमावैं कल्कि नाम अनमोली में
प्रेम महकार से मुखड़ा खिले जात होंय
हित के हेत सदा हृदय कमल हो फुटौबली में
पर पीड़ा करन हारी वासना अमीरी की
परदा कर बैठ जाय मुख छिपाय डोली में
कल्कि को रूप समझ एक से एक मिलैं
कपट कौटिल्य न लखाय पड़े टोली में
भारत भगवान में भगवान होंय भारत में
भासैं सब मस्त कल्कि नाम प्रेम होली में

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद गुरुदेव ने भारत आजाद होने से पहले लिखा था कि अंग्रेजों की गुलामी के बाद प्रजा, गऊ,संतों की कैसी हालत होगी—

भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त होने के बाद दुष्ट, धोखेबाज, मक्कार लोगों को दंड देकर शरीफ बन जाऐं। गऊ, गरीब जनता, किसानों की मुसीबतें दूर हो जाऐं। इस हिंदुस्तान की भोली-भाली जनता खुशियाँ मनाए। आँख झपकते ही ज़माना बदल जाए। कल्कि भगवान की दया बरसाने वाली दृष्टि से, खेल-खेल में फिर इस भूमि का भार उतर जाए। गउओं के दुश्मनों का दमन हो जाए। हुल्लड़, खौफ सज्जनों के मन में मचा है, वह बदल कर होली के

आनंद रूप में बदल जाए। यदि भारत स्वतंत्र हो जाए तो सबकी झोली में दही, मिश्री व मक्खन आ जाए और आनंद आ जाए। ऊँचे आदर्श और प्रेम में डूबकर सभी नर-नारी केसर व रोली के रंग में रंग जाएँ। सभी अपने आपसी भेद-भाव मिटाकर एक मन, एक प्राण, एक सुर और एक तान के रूप में हो जाएँ। जैसे सागर की अनंत लहरें एक रूप में मिल जाती हैं, वैसे ही सभी कल्कि भगवान के सर्वत्र व्याप्त यश का गान करें। अनमोल कल्कि के नाम में अपने मन को रमाकर, प्रेम की महक (खुशबू) से मुख प्रफुल्लित हो जाएँ। भलाई के लिए सदा हृदय कमल खिला हो। दूसरे को पीड़ा देने वाली अमीरी की वासना समाप्त हो जाए। सब लोग एक-दूसरे को कल्कि का रूप समझकर आपस में मिलें। कपट कुटिलता एक दूसरे में न दिखाई दें। भारत भगवान में और भगवान भारत में दिखाई दें। सभी कल्कि प्रेम की होली में मस्त हों।

8.बढ़ संत पियारे कल्कि के गुण गाई

बढ़ संत पियारे कल्कि के गुण गाई
निर्गुण ब्रह्म कहावे जो सो कल्कि की परछाई
कल्कि चरन से अलग हटावैं सोई है माया भाई
पोथी तेरी बैरन बन गई गुरु बन गए कसाई
कल्कि नाम से विमुख करत मे, जिन्हे दया नहीं आई
कल्कि नाम कलियुग का घाती भक्तों का चिर साथी
श्री कल्कि से मिलन करावैं माया काट प्रमाथी
काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह बैरी बन मनहि भ्रमावैं
तैसई कल्कि नाम से श्रद्धा कलियुगी गुरु हटावैं
कोई कहे हम कर्ता-धर्ता हम सतगुरु भगवाना
हिरण्याकुश की तरह खड़े हैं काम फकत बहकाना
भक्ति को निष्फल बतलावे अपनी महिमा गावैं

डाँट-डाँटकर धौंस जमावे और औसान डिगावैं
गुरु गिरी की चाह नचावै हरि से विमुख बनाए
बन बैठे भगवान बीच में अपना ठाठ रचाए
साँपन जिमि कुंडल को बाँधे निज बच्चन को खावे
कल्कि नाम गहि या कुंडल से कढ़े सो दर्शन पावें
शुक्राचार्य गुरु बलि के वामनहि देखि कुढ़ियाने
बलि ने सुनी न एकौ उनकी हरि ने कर दिए काने
कल्कि नाम द्रोही गुरु पंडित द्रोही कलियुगी संता
खुली बगावत लख धरती पर आए हैं भगवंता
कल्कि-कल्कि-कल्कि जपना कल्कि-कल्कि रटना
धोखा मत खइयो मेरे प्यारे कल्कि विमुख नहीं अपना
कल्कि प्रेम में बाधक के सिर लात धरो मेरे भाई
युगांतकारी कल्कि की भक्ति ही है चतुराई
कल्कि जी कलि कुल वन हंता त्राता हैं त्रिभुवन के
भुवनेश्वर प्राणेश दुरित हर्ता अपने भक्तन के
ब्रह्मादिक सुर शीश नवावै हनुमत शंकर ध्यावै
नारदादि सनकादिक निश दिन लोकपाल यश गावैं
विष्णु द्रोहकारी पथ जितने सब कलियुग संग जैहै
भक्तवास प्रभु निष्कलंक और धर्म सनातन रहिहै
कल्कि मंडल बहुत दिनों से तुम्हें रहा चेताई
जिनके हो सोइ आय रहे हैं जागो मेरे भाई

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुवर ने कहा है कि तुम कल्कि भगवान के गुणों का गान करो, वही एक सार तत्व है। जो कोई भी तुमको भगवान की भक्ति से विमुख करने की कोशिश करता है, वह धोखा दे रहा है, इसी संबंध में कहा है—

हे सीधे, सच्चे, भोले मनुष्य! तुम कल्कि भगवान के गुणगान करते हुए आगे बढ़ो। कल्कि भगवान की परछाई को शास्त्रों में निर्गुण ब्रह्म कहा गया है। जो हमें कल्कि के चरणों से दूर करती है, उसी का नाम माया है, (माया ही जीव को भगवान से दूर ले जाकर संसार की ओर खींचती हैं)। किताबी ज्ञान बैरी बन गया है (क्योंकि यह अवतार समय से पहले हुआ है)। इस समय इस रहस्य को तुम्हारे गुरु भी नहीं जानते यदि जान भी गए हैं तो वह जानकर अनजान हैं, जब इस अमर मार्ग की तरफ वही नहीं जा रहे हैं तो तुम्हें कैसे जाने देंगे? अत: तुम अमर कर देने वाले श्री कल्कि नाम से विमुख हो जाओगे क्योंकि कल्कि नाम जपने से स्वप्न, जाग्रत, वाणी अनुभव होते हैं जिसमें नारायण आपका अगला पिछला पाप पुण्यों का ब्यौरा दिखाकर मार्ग प्रदर्शन करते हैं। इससे गुरुओं की दुकानदारी में बहुत फर्क पड़ता है। (जैसे चाइना का माल भारत में आने से भारत के उद्योग जगत पर बहुत फर्क पड़ा है) वह गुरु गुरु तक सीमित नहीं रहना चाहते। वह तो भगवान बनना चाहते हैं। सो गुरुदेव कहते हैं कि तुम ऐसे ग्रंथों और गुरुओं के फँदे में मत फँसों। केवल कल्कि भगवान का नाम ही कलियुग के पापों का नाश करने वाला है और भक्तों का हमेशा सच्चा साथी है। यही कल्कि नाम का जाप प्रबल माया को काटकर श्री कल्कि से मिलन कराने वाला है। जिस प्रकार मन को नाना प्रकार के विकार (काम, क्रोध, घमंड, लोभ, मोह शत्रु बनकर) मन को भ्रम में डाल रहे हैं, वैसे ही कलियुगी गुरु कल्कि भगवान के नाम से श्रद्धा हटा रहे हैं,अभी कल्कि कहाँ? अभी तो कलियुग का पहला चरण है, कल्कि तो 4 लाख 32 हजार साल बाद आऐंगे अभी तो 5030 वर्ष ही बीते हैं। ऐसे बताकर (समझाकर) जानकर बने अनजान गुरु किताबी ज्ञान द्वारा अपने भोले भक्तों को घेरे में घेरकर बैठ गए हैं। कोई तो हिरण्यकश्यप की तरह एकमात्र काम के वश में होकर छाती ठोक कर कहते हैं कि हम ही तुम्हारे

कर्ता-धर्ता हैं, हम ही तुम्हारे सतगुरु भगवान हैं, हमारा ही ध्यान करो। भगवान की भक्ति को निष्फल बतलाते हैं और अपनी महिमा गाते हैं। नाना प्रकार के भय दिखाकर अपनी घौंस जमाते हैं और भोले भक्तों के विश्वास को डिगा देते हैं। अपनी गुरुगिरी की इच्छानुसार अपने चेलों को नचाते हैं और भगवान के विरुद्ध बहकाते हैं। अपनी मौज मस्ती के लिए भगवान के बीच के दलाल बनकर स्वयं ही भगवान बन बैठे हैं। जिस प्रकार साँपन कुण्डली मारकर अपने ही अंडों (बच्चों) को प्रसव के बाद तीव्र भूख लगने के कारण खा जाती है (सिर्फ वही अंडे जो साँपन की कुण्डली मारने से पहले लुढ़ककर बाहर निकल जाते हैं, फूटने पर साँप साँपन बनते हैं), जो भक्त रामावतार में भगवान राम के साथ रहे वही कृष्ण अवतार में भगवान कृष्ण के साथ रहे और वही भक्त अब कल्कि अवतार में भगवान कल्कि का कार्य करेंगे। सो उसी तरह इन कलियुगी गुरुओं की कुण्डली से जो बाहर निकल पाता है वही कल्कि भगवान के नाम के प्रताप से कल्कि प्रभु की शरणागति को प्राप्त कर उनके दर्शन कर पाता है। राजा बलि के गुरु शुक्राचार्य जब भगवान वामन को देखकर कुढियाने (चिढ़ने) लगे तो महाराज बलि ने अपने गुरु की एक भी नहीं सुनी (इसलिये तो शुक्राचार्य जी मक्खी बनकर गंगाजली की नलकी में बैठ गए कि जब संकल्प के लिये जल निकलेगा ही नहीं तो तीन पग ज़मीन दी ही नहीं जाएगी)। वामन भगवान ने एक तिनका उठाकर गंगाजली में डाला। इससे गंगाजली से जल निकलने लगा लेकिन तिनका आँख में घुसने के कारण शुक्राचार्य जी की एक आँख फूट गई। सो गुरु शुक्राचार्य की एक आँख फोड़कर वामन भगवान ने भगवान के विरोध का अच्छा पाठ आसुरी समाज को दिखाया। फिर भी कलियुग के ऐसे गुरु, जो कल्कि भगवान के नाम के द्रोही हैं, पंडितों, संतों के द्रोही बनकर पुस्तकों का उल्लेख करते हैं। भगवान ऐसे द्रोही गुरु पंडितों की खुले आम

बगावत देखकर धरती पर कल्कि अवतार लेकर आए हैं। मेरे प्यारे भक्तों, दिन-रात कल्कि भगवान का नाम जपते रहो और उसी के नाम की रटन लगाए रहो। ऐसे गुरु-घँटालों के बहकावे में धोखा मत खाना और कल्कि के विमुख मत होना। ऐसे लोगों के सिर पर ठोकर मारो, जो तुम्हें कल्कि नाम में, प्रेम में बाधा पैदा कर रहे हैं। तुम्हारी इसी में होशियारी है कि तुम कलियुग का अंत करने वाले कल्कि की ही भक्ति करो (जिस प्रकार हमारे देश की पार्लियामेंट में 526 एम.पी. हैं, राहुल गांधी भी जिसमें से एक हैं। लेकिन सबकी निगाह राहुल गांधी पर टिकी है क्योंकि वह होने वाले प्रधानमंत्री हैं)। कल्कि भगवान ही कलियुग के पापों और पापियों को मारकर तुम्हारी इन राक्षसों से तीनों लोकों में रक्षा करेंगे। हे भुवनेश्वर! हे प्राणेश्वर! श्री कल्कि तुम ही अपने भक्तों के दुखों को दूर करने वाले हो। आपको ब्रह्मा आदि देवता भी अपना शीश नवाते हैं। हनुमान जी और शंकर जी आपके ध्यान में मग्न रहते हैं। नारद सनक, सनातन, सनंदन, सनत्कुमार और दसों लोकपाल रात-दिन आपका यशगान करते हैं। भगवान विष्णु का द्वेष-द्रोह करने वाले जितने पंथ, सम्प्रदाय, मत हैं, उन सबका भी कलियुग के साथ खात्मा हो जाएगा। भगवान के साथ निष्पाप भक्त और सनातन धर्म कलियुग के अंत हो जाने पर भी रहेंगे। कल्कि मण्डल बहुत दिनों से तुम्हें सावधान कर रहा है कि तुमने जिन कल्कि भगवान के लिये जन्म लिया है वे ही कल्कि भगवान आ रहे हैं। हे मेरे भाई! जाग जाओ और कल्कि जी की शरण ग्रहण करो।

9. श्री कुबेर के कनिष्ठ भ्राता

श्री कुबेर के कनिष्ठ भ्राता धर्म नीति दर्शाने वाले,
बुद्धि बृहस्पति के सम जिनकी वानर कुल हर्षाने वाले।
रामचन्द्र के सखा सुहाने लंका नगरी ढाने वाले,

ब्रह्मा जी से मनवांछित भक्ति वरदान के पाने वाले।
करुणामय निष्काम प्रेम प्रभुता से भक्त बनाने वाले,
कल्कि की भक्ति वितरणकर आश की ज्योति जगाने वाले,
अधर्म से थी घृणा सदा शुभप्रद उपदेश सुनाने वाले,
मुझ जैसे विचलित प्राणी को अमर मार्ग में लाने वाले।
शान्त विभीषण सदा अभीषण शिव शंकर कहलाने वाले,
करें वन्दना सत-गुरु तुमको श्री कल्कि से मिलाने वाले।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में पं. लक्ष्मी नारायण जी ने अपने गुरु श्री शिव शंकर जी, जिन्हें पूर्व जन्म का विभीषण बताते हुए उनकी असीम कृपा का वर्णन करते हुए कहा कि—

हे सत्गुरु! मैं आपकी वंदना करता हूँ, आप श्री कुबेर के छोटे भाई हैं। आप धर्म की नीति दिखलाने वाले हैं, बुद्धि में आप साक्षात बृहस्पति के समान (बृहस्पति देवताओं के गुरु) के समान है। आप हनुमान जी (बालमुकुंद जी) को हर्षित करने वाले परम मित्र हैं अर्थात् विभीषण की सहायता के बिना न तो हनुमान जी रावण की लंका को जलाने में समर्थ होते और न राम लंका पर विजय पाते। आपने विभीषण के रूप में ब्रह्मा जी से अपना मनवांछित (भक्ति का) वरदान प्राप्त किया। आप इस जन्म में भगवान श्री कल्कि की भक्ति का प्रचार-प्रसार करके म्लेच्छों के अत्याचारों से निराश लोगों के मन में आशा की ज्योति प्रज्वलित करने वाले हैं। गुरूदेव कहते हैं कि हे शांत विभीषण! आप सबका मंगल करने वाले शिव शंकर हैं। आपने मेरे जैसे विचलित प्राणी, जो दोराहे पर खड़ा था (जिस अंग्रेज ने हमारे देश को गुलाम बना रखा है उसे आज़ाद कराने के लिये रास बिहारी बोस जैसे क्रांतिकारियों के साथ मिलकर बम बनाऊँ या गुरु बालमुकुंद जी के कहे अनुसार कल्कि नाम जपूँ जिससे

अंग्रेज भारत से चला जाएगा और भारत स्वतंत्र होगा) क्रांतिकारी से श्री कल्कि भगवान के अमर मार्ग में लाने वाले हैं। हे सत्गुरु हम सब आप कल्याणकारी की वंदना करते हैं।

10. गुरु गणेश गौरी गिरजापति

गुरु गणेश गौरी गिरजापति गुहः की शरण में गमन करुँ,
शरणागत वत्सल शिवशंकर शम्भु चरण में नमन करुँ।
निष्कलंक के अग्रदूत गुरु बालमुकुन्द का ध्यान धरुँ,
चरण कमल में नमो निरन्तर बारम्बार सम्मान करुँ।
श्री कल्कि महाराज की नित नूतन महान महिमा गाऊँ,
ध्यान धारणा भक्ति और अनुरक्ति विरक्ति मुक्ति पाऊँ।
नमो नमः श्री कल्कि प्रभु भू भार हरण को आए जो,
म्लेच्छ वंश विध्वंश करन को प्रलयानल प्रगटाए जो।
नित्य निरंतर श्री कल्कि के गुण ग्रामों का गान करुँ,
कलि मल हारी असुरारी को बारम्बार प्रणाम करुँ।
सुर समूह सुखकारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
कल्कि कलि-कुल संहारी को बारम्बार प्रणाम करुँ।
तुम मत्स्य बने और कूर्म बने वाराह वामनाकार बने,
बलि को बंधन में बाँधन हित निज भक्ति के दातार बनें।
छोटे-छोटे से चरण दिखाकर विराट रूप बढ़ाय दियो,
उंगली पकड़ी पहुँचा पकड़ा और अपना भक्त बनाय लियो।
बलि द्वारे पर बलिहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
प्रिय प्रेमी के प्रतिहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
तुम कोप क्रूरता रूप धरे भृगुपति क्षत्रिय कुल दलन बनें,
लोभी नृशंस नृप दहन हेत हो चंड प्रज्जवलित ज्वलन बनें।

देहाभिमान के हारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
पशुबल पर प्रबल प्रहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
तब क्रोधानल ज्वाला भड़की तब असुरन के दल थर्राए,
खंभ फटा नरसिंह प्रकट भए अट्टहास घन गहराए।
दुंदुभी नगाड़े बजन लगे देवन में आरती सजन लगी,
फन्द कटे सुर-नर-मुनि के भक्तन में नूतन लगन लगी।
नरसिंह रूप के धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
दुर दानव उदर विदारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
भस्मासुर से भयभीत भये जब भाग पड़े त्रैलोक्य धनी,
भव भीम भयंकर शिव शंकर प्रलयंकर प्राण पर आन बनी।
तब नाच नचाय के मायापति ने मार्ग में वृक मार लियो,
वरदान के दाता सरल सौम्य मृत्युंजय को दुख टार दियो।
कमल नयन असुरारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
दुष्ट दहन दनुजारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
जब देवन की पंगत बैठी हरि अमृत आप परोस रहे,
उन लाभ लहै हैं जीवन में जो उनके आस भरोस रहे।
मोहिनी रूप के धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
दैत्य विमोहन कारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
अप्सरा प्रगट करि जंघा से और रूप की हाट लगाय दई,
कंदर्प को दर्प हरो हरि ने और गर्व की ग्रीवा झुकाय दई।
नारायण नर के सहचारी को बारम्बार प्रणाम करुँ,
बद्री विशाल बनवारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
दुरनीति धरी दुर्वासा ने हरि भक्तहि खड़े सताय रहे,
अम्बरीष को शीश झुको देखो तब हरि के नयन रिसाय गए।

प्रभू पाणि ते चक्र छुटो जब हीं दुर्वासा भगदड़ भाई है,
नहिं शरण मिली दश दिशि कितहू भक्तहि ते क्षमा मगाई है।
चक्र सुदर्शन धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
हरि भक्तन के भयहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
जब शक्ति विभीषण उर में हनी रावण ने क्रोध अपार कियो,
तब मृत्यु के मुखते आगे बढ़ रघुवंश मणि ने उबार लियो।
रण अजिर में विरद संभारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
मारीच के मृगयाकारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
सरयू तट के संचारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
रघुवंशी अवध बिहारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
जब रास रचो वृज में हरि ने तव शिव की समाधि भंग भयी,
व्याकुलता उपजी हर हिय में देखन को मूर्ति अनंगमयी।
तब रूप त्रिया को धर धाए त्रैलोक्य विभूषण त्रिपुरारी,
गोपेश्वर नाम पुकार उठी सुर-नर-मुनि की सृष्टि सारी।
गोपेश्वर के मन हारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
गिरि गोवर्धन धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
प्रिय पवन अनल सम लगन लगी हरि विरह में अधर सुखाय गए,
जिन प्रेम पियासे नयन किए और विलख विलख मुरझाय गए।
हरि सह न सके हरि रह न सके उनके सन्मुख हरि आय गए,
यही कल्कि हमारे कृष्ण बने तब प्रेम का पंथ निभाय गए।
रुक्मणी के संकट हारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
राधा के प्रेम पुजारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
सांदीपन सुत सागर समाय सूनो संसार सिखाय गए,
गुरु दक्षिणा में हरि के हाथन यमराज सदन से आय गए।
साँदीपन सुत संजीवन को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
भारत भूमि के जीवन को मैं बारम्बार प्रणाम करूं।

प्राचीन वर्हि से नारद ने जब अकर्म पशुवध यज्ञ कहा,
तब यज्ञ कराने वालों को भी परम धर्म से अज्ञ कहा।
जब भोग पिपासा वश प्राणी पशुवध में एकाकार बने,
नहीं वैष्णव रहे न भक्त रहे निर्दय लालच के सार बने।
सूने सिद्धांत में उलझ गए नर गण भूमि का भार बने,
वैराग्य, दया, दर्शावन को तुम बुद्ध रूप साकार बने।
निर्वाण समाधि धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
पाखण्ड प्रमाद निवारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
जब म्लेच्छ समूह बढ़े जग में भारत भूमि पर छाय गए,
बन कल्कि नाम पावक प्रचंड संहार करन को आए गए।
युग परिवर्तनकारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
निष्कलंक अवतारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
गौ ब्राह्मण हितकारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
म्लेच्छ संघ संघारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
गंभीर पीर के हारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
श्री कल्कि दुधारा धारी को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।
नव नियति के निर्माता को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ,
भारत के भाग्य विधाता को मैं बारम्बार प्रणाम करुँ।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी ने गणेश जी, शिव-पार्वती एवं गुरुवर बालमुकुन्द जी का आशीर्वाद लेकर भगवान श्री कल्कि की महिमा का गुणगान महाविष्णु के विभिन्न अवतारों का स्मरण करते हुए किया है—

बुद्धि के देव, विघ्न हर्ता, ऋण हर्ता, सिद्धि विनायक गणेश जी, श्रद्धा एवं विश्वास की मूर्ति पार्वती जी, आशुतोष भगवान शंकर

की शरणागति लेकर, कल्कि भगवान का संदेश देने वाले विभीषण जी व श्री हनुमान जी का ध्यान करते हुए, सबके चरण कमलों का सम्मान करते हुए मैं हमेशा नमन करता हुआ बार-बार श्री कल्कि महाराज की नित नई महान महिमा का गुणगान करता रहूँ। इनका भक्तिपूर्वक ध्यान करते हुए मैं भवसागर के, राग-द्वेष से छुटकारा पा जाऊँ। जो भगवान कल्कि पृथ्वी का भार हरने के लिए प्रकट हुए हैं, उनको मैं बारम्बार नमन करता हूँ। श्री कल्कि ने म्लेच्छ वंश को विध्वंश करने के लिए प्रलय कालीन अग्नि को प्रकट किया है। मैं भगवान कल्कि के गुणों का नित्य गुणगान करता रहूँ। कलिकाल के मल को हटाने वाले भगवान श्री कल्कि को बारम्बार प्रणाम करता हूँ। देव समूह को सुख देने वाले कल्कि जी को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। कलियुग की समस्त बुराइयों का संहार करने वाले कल्कि भगवान को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। हे प्रभु! आपने मत्स्यावतार, कूर्मावतार, वाराहावतार लिया और भक्तों की इच्छा पूर्ति के लिए आपने राजा बलि को वचनबद्ध करके बंधन में बँधने के लिए आपने वामन अवतार लिया। वामन बनकर आपने अपने छोटे-छोटे चरण दिखाकर बलि से तीन पग धरती का दान देने के लिए उससे संकल्प लेकर आपने विराट रूप धारण कर त्रिलोकी को नाप लिया। अँगुलि पकड़कर आपने बलि का पहुँचा (कलाई) पकड़ लिया और उसको शुक्राचार्य के चंगुल से छुड़ा कर अपना भक्त बना लिया। उसने आपसे वरदान मांगा कि आप हमेशा मेरे द्वारपाल बने रहें सो बलि के द्वार पर दरबान बनने में भी आपने संकोच नहीं किया और आज भी पाताल में उसे दिया वचन निभा रहे हैं। ऐसे भक्त-वत्सल भगवान को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। क्षत्रिय कुल का नाश करने केलिए हे नारायण! आपने परशुराम जी के रूप में क्रोध और क्रूरता का रूप धारण किया। इस रूप में आप लोभी, निर्दयी राजाओं का नाश करने के लिए प्रचंड अग्नि रूप बन गए (जिस प्रकार सरदार पटेल ने

स्वतंत्रता के बाद छोटी-छोटी रियासतों को मिलाकर पूर्ण भारत बनाया) इस प्रकार उन देहाभिमानी राजाओं के अहंकार को चूर करने वाले को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। पशुबल पर प्रबल प्रहार करने वाले परशुराम जी को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। हे प्रभु! जब आपके क्रोधानल की ज्वाला भड़की तो सभी असुरों के समूह काँपने लगे। तभी आप नृसिंह रूप धारण कर खम्बा फाड़कर प्रकट हुए और भयंकर अट्टहास करने लगे। इसे सुनकर असुर काँपने लगे और देवी-देवता दुदुंभि, नगाड़े बजाते हुए आपकी आरती सजाने लगे। सभी देव, मनुष्य और मुनियों के बंधन कट गए और भक्तों में आपके प्रति फिर से नई लगन लग गई। ऐसे नृसिंह रूप धारण करने वाले भगवान को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। भयंकर हिरण्यकश्यप दानव के पेट को फाड़ने वाले भगवान को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। भगवान शंकर ने भस्मासुर को वरदान दिया कि वह जिसके सिर पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जाएगा (राक्षस तो राक्षस ही होता है उसने भगवान शिव के ऊपर हाथ रखकर उन्हें भस्म करके पार्वती जी को ले जाना चाहा)। उससे भयभीत होकर जब भगवान भोलेबाबा भागने लगे, (जरा सोचें इस समय तो संसार का संहार करने वाले स्वयं आशुतोष शिव शंकर के प्राणों पर बन आई), तब प्रभु आपने भस्मासुर को अपनी माया से नचाकर मार्ग में ही उसे भस्म करके भस्मासुर को वरदान देने वाले सरल भोले बाबा मृत्युंजय (शिव) का दुख दूर करके सृष्टि के क्रम को बचाया। असुरों के शत्रु कमल नयन भगवान विष्णु को मै बारम्बार प्रणाम करता हूँ।

समुद्र मंथन से जो अमृत निकला, उसको देवताओं की पंगत में बाँटने के लिए हे प्रभु आपने मोहिनी रूप धारण किया क्योंकि देवताओं को एकमात्र श्री हरि आप पर ही भरोसा है। जो दैत्यों को भी मोहित करने वाले हैं, उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ। इंद्र के घमंड को हरने एवं उसके अभिमान की गर्दन को झुकाने के लिए हे भगवान

आपने अपनी जांघ से अप्सराओं को प्रकट कर सुन्दरियों का बाज़ार सजा दिया। ऐसे नारायण जो अर्जुन के भी साथी हैं, उनको मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। बद्री विशाल बनवारी को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। दुर्वासा ऋषि ने गलत मंशा से अम्बरीष की परीक्षा लेने के लिए श्री हरि के भक्त को सताया। उसे प्रतीक्षा करने के लिए कह दिया और स्वयं प्रदोष व्रत के समाप्त होने तक नहीं आए। जब राजा ने उनके आने से जरा पहले ही केवल जल से अपना व्रत तोड़ा तो इस पर दुर्वासा क्रोधित हो गए। उनके सम्मुख राजा ने अपना शीश झुका लिया। दुर्वासा ऋषि के क्षमा न करने पर भगवान को दुर्वासा पर क्रोध आ गया। दुर्वासा को मारने के लिए भगवान के हाथ से सुदर्शन चक्र छुटा तो दुर्वासा उससे बचने के लिए तीनों लोको में भागे। परंतु दसों दिशाओं में उन्हें किसी ने भी शरण नहीं दी। अंत में दुर्वासा को राजा अम्बरीष से ही क्षमा माँगनी पड़ी। इस तरह प्रभु ने भक्त की रक्षा की। ऐसे शरणागत भक्तों के भय को दूर करने वाले श्री हरि को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। राम-रावण युद्ध में जब रावण ने क्रोध में आकर विभीषण के हृदयपर शक्ति से वार किया तो भक्त वत्सल भगवान राम ने आगे आकर उसके प्रहार को स्वयं ले लिया और विभीषण को मृत्यु के मुख से निकाल लिया। युद्ध भूमि में भी अपनी भक्त वत्सलता को निभाने वाले भगवान को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। मृगरूप मारीच का शिकार करने वाले श्री राम को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। सरयू नदी के तट पर अयोध्या में विचरण करने वाले प्रभु को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। रघुवंशी अवध बिहारी श्री राम को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। जब भगवान श्री कृष्ण ने ब्रजभूमि में यमुना तट पर रास रचा, तब कैलाश पर्वत पर शिव की समाधि टूट गई। उस **आनंदमयी (अलौकिक) रासलीला को देखने के लिए** शिव के हृदय में व्याकुलता आ गई। तब भगवान शंकर मर्यादा निभाते हुए गोपी का रूप धारण कर रास में सम्मिलित होने के लिए

दौड़ पड़े। इसलिये तीनों लोकों के भूषण त्रिपुरारी **भगवान शंकर का नाम गोपेश्वर पड़ा**। उन गोपेश्वर का मन हरने वाले श्री कृष्ण को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। गोवर्धन पर्वत धारण करने वाले श्री कृष्ण को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। भगवान कृष्ण के विरह में ठंडी सुहावनी हवा भी आग के समान लगने लगी। उनके होंठ सूख गए। अपने प्रियतम के दर्शन की प्यास में गोपियों की आँखें रो-रोकर मुरझा गईं। गोपियों की इस विरह दशा को प्रभु सहन नहीं कर सके। प्रभु अब उनसे दूर रह नहीं सके, तब वह उनके मध्य में प्रकट हो गए। यही कल्कि भगवान द्वापर में श्री कृष्ण बन कर प्रेम निभाना सिखा गए। ऐसे भगवान कृष्ण, जो रुक्मणी के भी संकट हरने वाले हैं, मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। भगवान कृष्ण जो राधा के प्रेम के पुजारी हैं, मैं उन्हें बारम्बार प्रणाम करता हूँ। भगवान कृष्ण के गुरु सांदीपन का एकमात्र पुत्र जब सागर में डूब गया, तो सांदीपन का पूरा संसार पुत्र वियोग से सूना हो गया। गुरु-पुत्र को यमराज के घर से लौटाकर गुरु जी को सौंपकर भगवान श्री कृष्ण ने गुरु-दक्षिणा दी। ऐसे सांदीपन के पुत्र को पुनः जीवित करने वाले भगवान श्री कृष्ण को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। इस भारतभूमि (जीवनाधार) के प्राण-स्वरूप भगवान को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। राजा प्राचीन बर्हि जो हर दिन यज्ञ मे ही लगे रहते थे और उसमें पशुबलि दिया करते थे। उनसे नारद जी ने कहा कि हे राजन यज्ञ के नाम पर जो तुम पशुवध कर रहे हो, यह अकर्म (निषेध) है, कर्म नहीं है। इसे बंद करो। ऐसे भोग लालसा वाले यज्ञ कराने वालों को भी आपने परम धर्म से अज्ञानी बताया। जब लोग भोग की लालसा के वशीभूत होकर पशुवध में ही लगने लगे तो वे न वैष्णव (विष्णु के उपासक) रहे और न ही भक्त रहे, वह केवल निर्दयी लालची बन गए। ऐसे राजा तत्वहीन सिद्धांतों में ही उलझकर रह गए और इस धरती पर बोझ बन गए। तब ऐसे लोगों को वैराग्य-दया का मार्ग

सिखाने के लिए कर्मकांडों का विरोध करने के लिए आपने बुद्ध भगवान का अवतार लिया। ऐसे निर्वाण मार्ग के धारक को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। उस समय के समाज में से पाखण्ड, मक्कारी, धूर्तता को हटाने वाले बुद्ध भगवान को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। जब म्लेच्छ (अंग्रेज़ कौम) पाश्चात्य सभ्यता—खाओ पियो मौज करो के, समूह की ताकत बढ़ गई, (जो जब भारत भूमि में याचक बनकर आए थे अब शासक बनकर छा गए)। ऐसे समय में प्रभु आपने श्री कल्कि रूप में प्रचण्ड अग्नि बनकर भारत भूमि से धर्म विरोधी पाश्चात्य सभ्यता को समूल नष्ट करने के लिए अवतार लेने का मन बनाया। ऐसे समय से पहले (भगवान श्री कृष्ण को धराधाम से गए अभी मात्र 5035 वर्ष हुए हैं जबकि कल्कि अवतार चार लाख बत्तीस हजार साल बाद होना था) आऐ युग परिवर्तन करने वाले भगवान श्री कल्कि को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। ऐसे निष्कलंक अवतारी श्री कल्कि को मैं प्रणाम करता हूँ। गायों, ब्राह्मणों के हित करने वाले प्रभु को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। म्लेच्छों के समूह का संहार करने वाले को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। जन मानस की गंभीर पीड़ा को मिटाने वाले प्रभु श्री कल्कि को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। तलवार धारण करने वाले भगवान श्री कल्कि को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। भारत के भाग्य का नवनिर्माण करने वाले भगवान श्री कल्कि को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ।

11. गोपाल तुम्हारी गउओं का

गोपाल तुम्हारी गउओं का, अब बैरी बना है कण कण,
कब छोड़ोगे असुरों पे, प्रभु जी अपना चक्र सुदर्शन।
जो वचन दिया है गीता में तुमने आने का भगवन,
कल्कि के रूप में खड़ग लिए पूरा कर दो अपना प्रण।

भारत भी म्लेच्छ स्वरूप बना, संसार तो था ही द्रोही,
ये धर्म रसातल चला कि जिसका तुम बिन नहीं है कोई।
दुष्टों में दावानल बन भड़को, दहन हेत दानव वन,
और काल रूप धर गर्ज उठो हरि प्रलय काल के घन बन।
असुरों में धू धमार हो हाहाकार मचे और क्रंदन,
गो विप्र भक्त मन नंदन नंदक, खड्ग का हो अभिनंदन
हो पांचजन्य घनघोर दिवसप्रक, शब्द गर्जना गुंजन,
जिस शब्द के आश्वासन से होवें, भक्तों का भय भंजन।
एक आश निराशा में तुम्हीं, जो विनती सुनो हमारी,
प्राणों में प्राण हमारे आवें, महिमा बढ़े तुम्हारी।
अघहारी अभयदान दर्शन दो, नाच उठे जन जन मन,
घर-घर में मंगलाचार ध्वनि हो, घट-घट में तव पूजन।
विश्वास बढ़ावन हार विश्व के, वन्द्य आपके हनुमन,
गुरु बालमुकुन्द के चरणों में हो तन मन धन ये अर्पण॥

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में प्रभु से गीता में दिये अपने वचन निभाने और गऊओं की रक्षा करने का आग्रह किया है। अब वह समय आ गया है कि आप प्रकट होकर इस धरा-धाम का उद्धार करें—

हे गोपाल! धरती के लोग तुम्हारी गायों के बैरी बन गए हैं। वे उनको मार रहे हैं, काट रहे हैं, खा रहे हैं। प्रभु आप इन राक्षसों (असुरों) को मारने के लिए अपना सुदर्शन चक्र कब छोड़ेंगे? आपने अपने बार-बार अवतार लेने का गीता में जो वचन दिया है, अब अश्व पर चढ़े तलवार लिये कल्कि के रूप में प्रकट होकर अपना प्रण पूरा कर दो। आज भारतभूमि में रहने वाले लोग भी राक्षसों, म्लेच्छों की तरह के आचार-व्यवहार वाले हो गए हैं। सारा विश्व

तो सनातन धर्म का द्रोही था ही, अब भारत में भी उसका विरोध होने से हमारा धर्म रसातल (पाताल) में जा रहा है। आपके अलावा कोई भी इसको नहीं बचा सकता। आप दुष्टों को मारने के लिए दावाग्नि बनकर इस दानव वन को जला डालो। हे प्रभु! प्रलयकालीन बादल बनकर (दुष्टों के काल बनकर) गर्जन करो, जिससे इन असुरों में बेचैनी हो जाए। उनमें हाहाकार मचे और उनकी चीखें निकलें। हे नंद के नंदन कृष्ण! इससे गौ, ब्राह्मण और भक्तों का मन आनंदित हो जाएगा और तुम्हारी खड़ग का अभिनंदन और प्रशंसा होगी। आपके पांचजन्य शंख की घनघोर शब्द की गर्जना का गुँजन दसों दिशाओं में गूँज उठे। आप द्वारा यह करने से ही भक्तों का भय मिट जाएगा। हम निराश लोगों के मन में आशा की एकमात्र किरण आप ही हो। आप हमारी विनती सुनो, जिससे हमारे प्राणों में प्राण आ जाएँ और आपकी महिमा बढ़े। हे पापों का नाश करने वाले प्रभु आप हमें अपने दर्शनों से अभयदान दो, जिससे जन-जन का मन नाच उठे। प्रत्येक घर में मंगलाचार ध्वनि सुनाई दे। हर घर में आपकी पूजा हो। आपमें विश्वास बढ़ाने वाले विश्व के वंदनीय और आपके भक्त हनुमान जी के आवेशावतार गुरु बालमुकुन्द जी के चरणों में हमारा तन-मन धन समर्पित है।

12. श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो

श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो॥ टेक॥
अपने मन विचार कर देखो, तुम बिन कौन हमारो।

आशा दई बाँह गहि लीनी प्रेम श्रोत संचारो।
सब कुछ दियो स्वरूप लखायो अब कहाँ खड़े निहारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो॥ 1॥

सरसिज लोचन सखा सनातन, सुंदर सुयश तुम्हारो।

सत्यनाम गोपाल करो प्रभु, गौवन को रखवारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सभारो॥ 2॥

संतन पे संकट छायो है, कलि रूपी अँधियारो।
हे कल्कि! कलि-कुल संहारी, वेग ही कष्ट निवारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो॥ 3॥

बाना विरद निहार के अपनो, भूमि भार उतारो।
राज सिंहासन होय तुम्हारो लोकन को उजियारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो॥ 4॥

कलियुग के बंदी घर टूटें, होन लगे निस्तारो।
कल्कि नाम सिर सुरन चढ़ायो, फँद छुड़ावन हारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो॥ 5॥

सहज स्नेह कियो सतगुरु ने, डूबत दियो सहारो।
जड़ विद्या की गहन धार से कर दीनो छुटकारो।
श्री कल्कि हमारे अब तो सुरत सँभारो॥ 6॥

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में प्रार्थना की गई है कि हे कल्कि भगवान हम आपकी शरण हैं, आप हमारी सुधि नहीं लेंगे तो हमें कौन सहारा देगा?

हे श्री कल्कि अब तो हमारी पुकार सुनकर हमारी सुधि लो और हमें सहारा दो। (विश्वास करें हम सपेरे नहीं हैं। हमें साँपों के समूह मे गेर कर देखें, हमारा शरीर नीला पड़ जायेगा)। ऐसे में स्वामी अपने मन में विचार कर देखो कि आपके सिवा हमारा कौन है। आपने हमारे मन में आशा जगाई है, हमें संसार की विषय वासनाओं से बाँह पकड़कर निकाला है। आपने हमारे मन में भगवत प्रेम के स्रोतों का संचार किया है। आपने सब कुछ दिया, अपने स्वरूप को

भी दिखाया, परंतु अब आप कहाँ छुपकर हमें देख रहे हो ? हे कल्कि जी, अब तो आप हमारी सुरत सँभालो। हे कमल नयन! आप हमारे सनातन (सदा से ही) राम अवतार, कृष्ण अवतार और अब कल्कि अवतार में हमेशा से ही सखा रहे हो। हे करुणा निधान आपके सुंदर सुयश, भक्त वत्सल, दीनबंधुत्व को सभी जानते हैं। आप अपने गोपाल नाम को गायों की रक्षा करके सत्य करो। संतों पर संकट आया है, कलिकाल का घोर अँधियारा छाया हुआ है। हे कल्कि आप कलि के समस्त पापों को दूर करके संतों के कष्ट दूर करो। अपने भक्तों की रक्षा करने की आदत को याद करके भूमि का भार उतार दो। आपने प्रतिज्ञा कर रखी है कि जब-जब धर्म की हानि होगी, आप संतों की रक्षा के लिए अवतार लेंगे। आपका राज सिंहासन हो और आप सारे लोकों में उजाला फैलाओ। देवताओं ने आपको शिरोधार्य किया है। कलियुग के पापों के किले तोड़कर भक्तों को राक्षसी शक्तियों के बंधनों से छुटकारा दिलवाइये। सतगुरु ने सहज स्नेह करके हम सब को इस अज्ञान रूपी कुएं में से बाहर निकाला है।

13. मना तेरी बन जावेगी बना ले कल्कि नाम से

मना तेरी बन जावेगी बना ले कल्कि नाम से
वे बातें सूझेंगी तुझे जो नहीं सुझाई देती हैं
जिनके सूझे बिन दुनिया सब लूट कमाई लेती है
अंधे कहलाते जिसके बिन, ध्यान लगा उस काम से
मना तेरी···

जिसको जाने बिन यहाँ से कंगाल बने सब जाते हैं
कुकर्म करके इस दुनिया में यम के डंडे खाते हैं
यह सब कष्ट मिटेंगे प्यारे कल्कि की पहचान से
मना तेरी···

जिसको देखे बिन सब जग दिवाना-सा बन जाता है

चलता है उस मारग पर जिसको जोई भा जाता है
होश बने रहते हैं कायम श्री कल्कि के ध्यान से
मना तेरी···

रटना से कल्कि की सही सालम बुद्धि कहलाती है
आतम मन और करम वचन सबकी शुद्धि हो जाती है
कपट कुटिलता छोड़ के नाता जोड़ ले मन विश्राम से
मना तेरी···

कल्कि-कल्कि-कल्कि बस एक सार सुझाई देता है
माया की एवज घट को ईश्वर ही अपना लेता है
जीव ब्रह्म सम होता है, नहिं रहे अलग निर्वाण से
मना तेरी···

कल्कि नाम की महिमा से यह दुनिया नई बन जाएगी
तू पलटा खावेगा और यह दुनिया पलटा खाएगी
राम-कृष्ण नाता जोड़े रहियो कल्कि भगवान से
मना तेरी···

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुदेव अपने मन से कहते हैं कि कल्कि नाम एकमात्र ऐसा सहारा है, जिससे मन की हर इच्छा की पूर्ति हो जाती है। अलौकिक किंतु हमारा अनुभवगम्य सत्य है कि इस भजन की प्रत्येक पंक्ति पर लेखक भक्तिमय व प्रेरणादायक कहानियाँ लिख सकता है—

हे मन कल्कि नाम से तेरे मन की हर इच्छा पूरी हो जायेगी। तुझे कल्कि के नाम के प्रभाव से ऐसी बातें असानी से सूझने लगेंगी, जिनका कभी समाधान नहीं हो सकता था। इन बातों के जाने बिना दुनिया तेरी सारी कमाई लूट लेती थी। तू कल्कि जी के काम से ध्यान लगा। जिस प्रभु को जाने बिना सब अंधे कहलाते हैं और कल्कि

जी को जाने बिना हर मनुष्य यहाँ से कंगाल बनके जाता है। क्योंकि समाज के लिये शुभ कार्य, पुण्य कार्य किए नहीं होते। यहाँ की धन-दौलत तो यहीं छूट जाती है। अत: अगले जीवन के लिए पुण्य अधिक होते नहीं हैं। **पाप एवम् बेकार किया गया समय का परिणाम यमलोक की यातना भोगनी पड़ती है। यम के डण्डे खाने पड़ते हैं। ये सारे कष्ट तेरे तभी मिटेंगे, जब तू कल्कि को जानेगा, उनकी भक्ति करेगा**। कल्कि जी के दर्शन के बिना सारा संसार पागल-सा बन जाता है, अपने मनमाने कार्यों को करता है। केवल कल्कि के ध्यान से ही मनुष्य को अपना होश बना रहता है, अर्थात् अपने जीवन में सही कार्य कर पाता है। कल्कि का नाम जाप करने से ही बुद्धि शुद्ध और सही रहती है। उनके नाम की रटन से आत्मा, मन और कर्म शुद्ध हो जाते हैं। तू हर समय संसार की कपट कुटिलता को छोड़ दे। समय निकाल कर भगवान से अपना नाता जोड़ ले, इससे तेरे मन को परमशांति, सच्चा सुख मिलेगा। इस जीवन में केवल कल्कि का नाम ही सार है। कल्कि नाम से जीवन व हृदय माया से मुक्त होता है और उसमें ईश्वर निवास करने लगता है। जीव ब्रह्म के समान हो जाता है, उसे मुक्ति मिल जाती है। कल्कि के नाम लेने की महिमा है कि हे मन तुझे, यह दुनिया नई लगने लगेगी अर्थात् ईश्वरमय नज़र आएगी। राम-कृष्ण परमहंस कहते हैं कि कल्कि भगवान से नाता जोड़े रहना इससे हे मन तेरी सारी इच्छाऐं पूरी हो जाएंगी।

14. कल्कि के रूप में निमग्न

कल्कि के रूप में निमग्न निशि-वासर रहत
कलियुग की जड़ पे कुठाराघातकारी हैं
कल्के: संसप्तक सहकार्य सव्य बांह सतगुरु
बालमुकुन्द गदाधारी सदाचारी हैं
सीधे और सरल संत असुरन पे कोपवंत

धर्म के कवच कल्कि नाम के पुजारी हैं
अनुभव विज्ञान क्षीर सागर समान जिनका
सुरन की समाज में शिव सम सन्मान जिनका
तेजवंत समरप्रिय संत हितकारी हैं
रुद्र अवतार सतमारग के त्राता भए
भविता प्रमाथी भय के प्रथम बाँधकारी हैं
पृथ्वी धर्म विप्रन के अभयदान दाता आप
आश नई देकर सुरन के त्रास हारी हैं
जमघट निशाचरों की घोर घटा से घिरे
ध्वांत नभ मंडल में प्रखर तर तमारी हैं
असुरन के काटन को भय की भयावनी में
पाँव जिन सब से प्रथम धरो अगारी है
धर्म के बैरियन के वन भस्म करन हेत
हाथ में धरे कल्कि नाम की अंगारी है
कल्कि के नाम के अंगार से लगाई आग
लहकी नभ गई जड़ें कलियुग की पंजारी है
जय हो हनुमान शिवरूप सुर त्राणकारी
भीषण भयानक कठिन करनी तुम्हारी है
कल्कि दई आस से निराश में जमाए पग
वैष्णव विरोधी जग में गाढ़े अकलंक ध्वज
आसुरी जग को भयानक महामारी है
दूत बन आए नई लीला का संदेश लाए
नए राज्य शासन अटल छत्र के दरबारी हैं
क्या ही ये सुंदर संदेश सुखकारी हैं
भक्तन के मन में मानो नई जान डारी है
निष्कलंक बनकर कलंक का करेंगे नाश
थे कभी कृष्ण जो अब कल्कि खड़गधारी हैं

अपनो स्वरूप दर्शाय कर कृतारथ कियो
चरणन में झुकी नाथ गरदन हमारी है
करें नमस्कार बारंबार प्रभू आपको हम
आपका स्वरूप हृदय ध्वांतापहारी है
कल्कि के तन स्वरूप कल्कि के मन स्वरूप
कल्कि की दृढ़ता मानो प्रगट देह धारी हैं
सत्य, विश्वास और आस की तव प्रतिमा ने
माया की काँटी मन की काटी हमारी है
कल्कि के रूप का निवास तुमने हमें किया
श्रृंगाल से सिंह का लिबास तुमने हमें दिया
निहाल किया अब तक कृपा का स्रोत जारी है
करी थी कृपा तुलसी दास पर कृपालु कभी
अबकी बार बाँह तुमने पकड़ी हमारी है
बाँह के गहे की लाज रखियो भक्तन सरताज
शरण आपकी के बिना ख्वारी ही ख्वारी है
रामकृष्ण नामधारी जीव को जगाया तुमने
भटकत भए को धुर मुकाम से लगाया तुमने
दृष्टि से सुधा की रूह अमर कर डारी है

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में श्री हनुमान जी के आवेशावतार गुरु बालमुकुन्द जी की महिमा का गुणगान करते हुए कहा है—

हे हनुमान जी के आवेशावतार सतगुरु बालमुकुंन्द जी आप रात-दिन भगवान श्री कल्कि के ध्यान में ही डूबे रहते हो। आप कलियुग की बुराइयों की जड़ों पर कुठाराघात करने वाले हैं। हे गदाधारी बालमुकुंद जी आप भगवान श्री कल्कि के दुष्टों को समाप्त करने वाले कार्यों में सहयोग करने वाले कल्कि जी के दाएं हाथ हैं।

आप स्वभाव से सीधे और संत हैं परंतु असुरों पर क्रोध करते हैं। आप धर्म की रक्षा करने के लिए कवच हैं और कल्कि नाम के पुजारी हैं। आपके ज्ञान-विज्ञान का अनुभव क्षीर सागर के समान अथाह है। आपका देवताओं के समाज में शिव जैसा सम्मान है। आप तेजस्वी, युद्ध प्रिय, संतों का हित करने वाले हैं। आप रुद्र के अवतार हैं। आप सत्यता की रक्षा करने वाले भविष्य दृष्टा हैं। आप भय दूर करने वालों में सब से आगे हैं। आप पृथ्वी, धर्म और ब्राह्मणों को अभयदान देने वाले हैं। आप नई आशा देकर देवताओं के भय को हरने वाले हैं। जिन निशाचरों के जमघटों ने अपने दुष्ट कार्यों से भारत के नभ में घोर घटाओं से अंधकार फैला रखा है, आप उस अंधकार के शत्रु बनकर उसका नाश करने वाले हैं। आपने असुरों को काटने के लिए असुरों के भय की अँगारी नगरी में सर्व प्रथम पाँव रखा है।आपने डर-भय, धर्म के बैरियों के जंगलों को भस्म करने के लिए, अपने हाथ में कल्कि नाम की मशाल पकड़ी हुई है। आपने कल्कि नाम से जो आग लगाई है, उसकी लपटें आसमान तक फैल गई हैं, इससे कलियुग की जड़ें भस्म हो रही हैं। हे हनुमान, शिव रूप, सुरों (देवताओं) की रक्षा करने वाले सतगुरु आपकी जय हो। आपकेसारे कार्य ही अत्यंत भीषण (तेज), भयानक और कठिन हैं। आपने भगवान श्री कल्कि का सहारा लेकर निराश जन मानस में आशा की किरण फैलाई है। विष्णु (भगवान) के विरोधी संसार में आपने अकलंक (निष्कलंक-नहीं है दोष जिनमें) कल्कि भगवान के झंडे गाड़ दिए हैं और आसुरी प्रवृति वालों में भयानक महामारी फैला दी है। आप भगवान के दूत बनकर प्रकट हुए हैं। आप भगवान की लीला के नए अवतार के संदेश लेकर आए हैं। आप इस नए राज्य शासन, जो सदा बना रहने वाला (अटल छत्र) है, उसके दरबारी हैं। आपका यह सुंदर संदेश कि कल्कि जी आ रहे हैं, बहुत सुख देने वाला है। इस संदेश ने भक्तों के मन में नई जान डाल दी है।

आपने संदेश दिया है कि कल्कि भगवान निष्कलंक बनकर, कलियुग के कलंक का नाश करने के लिए, जो द्वापर में कृष्ण थे, कलियुग में खड़गधारी कल्कि के रूप में आ रहे हैं। आपने अपना स्वरूप दिखाकर हमें कृतार्थ किया है। आपके चरणों में हे नाथ हमारी गरदन झुकी हुई है। हे हनुमान जी! हम बारम्बार आपको नमस्कार करते हैं। आपका स्वरूप सचमुच में हृदय के समस्त दुखों का नाश करने वाला है। कल्कि जी के तन का स्वरूप, कल्कि जी के मन का स्वरूप और कल्कि जी की दृढ़ता तीनो साकार होकर आपके रूप में हमारे सामने आई हैं। हे गुरुदेव सत्य, विश्वास और आशा की प्रतिमा ने हमारे मन में जो माया का फँदा कसा था, उसको आपने काट दिया है। आपने हमारे मन में कल्कि का रूप बसा दिया है। आपने हमें सियार की तरह डरपोक से सिंह की तरह साहसी बना दिया है। आपने हमें निहाल कर दिया है। आज भी आपकी उस कृपा का स्रोत हम पर बह रहा है जो आपने सदियों पहले तुलसीदास पर बहाया था। हे कृपालु! अबकी बार आपने हमारी बाँह पकड़ी हैं। भक्तों के सरताज बाँह पकड़ने की लाज रखना। आपकी शरण के बिना जीवन व्यर्थ है। आपने पिछले जन्म के रामकृष्ण परमहंस (गुरुवर लक्ष्मीनारायण) को भगवान श्री कल्कि जी का सच्चा रास्ता दिया था। हे गुरुदेव! आपने अपनी अमृतमयी दृष्टि से हमारी आत्मा को अमर कर दिया है।

15. भई प्रकट हुए कल्कि भगवान

भई प्रकट हुए कल्कि भगवान
बालमुकुन्द जी को दिया था ज्ञान
भई सपने में आकर दर्शन दिया
अपने आने का वायदा किया
भई बालमुकुन्द जी ने पकड़ी गदा

कल्कि अवतार की लगाई सदा
भई कल्कि के हेत तपस्या करी
कल्कि मंडल की नींव धरी
भई कल्कि का झंडा दिया था गाड़
पापों की बस्ती होगी उजाड़
भई गली-गली में किया ऐलान
आवेंगे कल्कि भगवान
भई कल्कि नाम का यश फैलाया
नसीब वालों के मन को भाया
भई रटा जिन्होंने कल्कि नाम
मिल गया उनको सुंदर श्याम
भई कल्कि नाम ने आँखें खोलीं
घटों में प्रभू की प्रतिमा बोली
जो मनों की घुंडी खोलते गए
वह कल्कि की जय बोलते गए
भई हुए प्रफुल्लित और निहाल
जब दिक्खे दुष्टों के काल
भई धन्य है कूचा पाती राम
जहाँ पे उपजा कल्कि नाम

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी ने कल्कि जी के प्रकट होने की बात कह कर गुरु बालमुकुन्द जी के उस अनुभव का वर्णन किया है, (जब भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य था और हमारा देश गुलाम था) जिसमें भगवान ने उनसे अपने आने की बात स्वप्न में दर्शन देकर कही है—

गुरुवर बालमुकुन्द जी को सपने में दर्शन देकर भगवान ने

कल्कि रूप का ज्ञान देकर अपने आने का वायदा किया। तभी से बालमुकुन्द जी ने गदा पकड़कर कल्कि अवतार की सदा घोषणा की। उन्होंने कल्कि के निमित्त तपस्या करी और कल्कि मण्डल की नींव रखी। उन्होंने कल्कि का झंडा गाड़ा और यह आश्वासन दिया कि कल्कि भगवान ने अवतार ले लिया है अर्थात अंग्रेजों को इस भारत भूमि से जाना होगा। कल्कि भगवान जल्दी प्रकट होंगे। इसका ऐलान उन्होंने हर गली-गली में किया। जिन भाग्यवान लोगों ने श्री कल्कि नाम की रटन लगाई उन्हें भगवान श्री कल्कि ने अपने अवतार लेने के अनुभव दिये, उनको अपने स्वरूप के दर्शन दिये। जो भक्त कल्कि जी द्वारा दिये अनुभवों पर विश्वास करके चलते गए वह कल्कि जी की जय बोलने लगे और कल्कि नाम का प्रचार करने लगे। कलियुग का नाश करने वाले भगवान श्री कल्कि के मिलन से तो उनके लोक परलोक दोनों बन गए। **उनका मन आनंदित हो गया और वह निहाल हो गए अर्थात जैसा सपने में भी नहीं सोचा था उससे कहीं ज्यादा धन-दौलत, ऐश्वर्य, परिवार आदि का सुख मिला, मिल रहा है।** कूचापाती राम धन्य है जहाँ से अपार वैभवता (धन, दौलत, ऐश्वर्य) बरसाने वाला कल्कि का नाम निकला।

16. बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय
अपनी ओर निहार कल्कि पार लगा देना
साधु-संत के तुम रखवारे असुरन के वन काटनहारे
कर में तीक्ष्ण खड़ग संवारे कल्कि पद्मानाथ मुरारे
अपने जनन की बिगड़ी दीनानाथ बना लेना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

अपनन ने अपनाई छोड़ी भक्तन में प्रीति भई थोड़ी
सत संगत से पीठ है मोड़ी माया ने श्रद्धा है तोड़ी
इस माया को शीघ्र काट कर हमें बचा लेना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय
असुरन की माया फैली है, सब के पीछे भूल लगी है
पग-पग पे बाधा ठाड़ी है, पाँव धरन को जगह नहीं है
सोये पड़े भक्तन को अपने आप जगा लेना
बेड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय
टूटे हाल हैं भक्त तुम्हारे असुरन की आफत के मारे
घोर विपत में पड़े बिचारे तुम बिन उनको कौन उबारे
हे संभल सरकार, विपत्त के भार हटा देना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय
दुर्बल के तुम परम सहारे भक्तन के दुख काटन हारे
मात-पिता गुरु सखा हमारे संतन के मन के उजियारे
भक्तन को अपने मिलने की राह बता देना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय
भूमि भार उतारन हारे युगन-युगन तुम पतित उबारे
रूप अनेकन तुमने धारे कमलनयन चंद्रानन प्यारे
अवगुण किए बिसार स्वामी हृदय लगा लेना
बेड़ा पड़ा बीच मँझधार खेवनहार कोई है नाय

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भक्त भगवान से अपने उद्धार की प्रार्थना करते हुए कहता है—

हे कल्कि भगवान! मेरे जीवन की नाव संसार सागर के बीच मँझधार में फंसी है। आपके सिवा इसका कोई खेवनहार (चलाने

वाला) नहीं है। आप मुझपर कृपा करके मेरी जीवन नैया को पार लगा देना। आप अपने भक्तों का उद्धार करने की प्रतिज्ञा को याद करके मेरी नैया पार लगा देना। हे पद्मानाथ मुरारी! आप हाथ में तेजधार की तलवार लेकर साधु-संतों की रक्षा करते हो और असुरों के वन काटते हो। हे दीनानाथ आप अपने भक्तों की बिगड़ी बना देना। संसार में जो अपने कहलाने वाले हैं, उन्होंने अपनापन छोड़ दिया है। भक्तों में भी प्रेम कम हो गया है। सत्संग में भी नहीं जाते, यदि जाते भी हैं तो मन नहीं लगता। माया ने श्रद्धा को तोड़ दिया है। हे कल्कि ! इस माया को काटकर हमें बचा लेना। हमारी जीवन नैया बीच मँझधार में पड़ी है। असुरों की माया फैली है। सभी जन इसी माया के छलावे से अपने प्रभु को भूल रहे हैं। भक्ति मार्ग में बढ़ने के लिए मार्ग में हर कदम पर बाधा खड़ी है। कहीं पाँव रखने को जगह नहीं है। आप सोऐ हुए भक्तों को स्वयं जगा देना। आपके भक्तों की हालत असुरों द्वारा सताए जाने के कारण बहुत बुरी हो गई है। ये बेचारे भयंकर विपत्ति में पड़े हैं। आपके सिवा कोई इनको उबारने वाला नहीं है। हे संभल सरकार श्री कल्कि! अपने भक्तों की विपत्तियों को दूर कर दीजिए। इनकी जीवन नैया बीच मँझधार में है। इन कमज़ोरों के एकमात्र तुम ही सहारे हो। आप भक्तों केदुख को काटने वाले हो। हमारे माता-पिता-सखा सब-कुछ आप ही हो। आप ही संतों के मन में आशा का प्रकाश करने वाले हो। भक्तों को अपने मिलने का रास्ता बता दीजिये। हे स्वामी! आप ही अब इस भूमि का भार उतारेंगे। युग-युग में आपने ही दुखी भक्तों का उद्धार किया है। हे कमलनयन, चँद्रमुख प्यारे! आपने अलग-अलग अवतारों में अलग-अलग रूप धारण किए हैं। हे स्वामी! हमारे अवगुणों को भुलाकर हमें अपने हृदय से लगा लीजिये। हमारी जीवन नैया का बेड़ा संसार समुद्र के बीच मँझधार में डूबने वाला है। आप इसे पार लगा दीजिये।

17. गुरु बालमुकुन्द गदाधारी

गुरु बालमुकुन्द गदाधारी जय हो तुम्हारी जय हो।
कल्कि अवतार के प्यारे, संदेश सुनावन हारे,
मन प्राण में बसो हमारे जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
कल्कि के नाम प्रचारक, सतगुरु संसार सुधारक,
तुम ब्रह्म विभव के धारक जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
जिसको यह दुनिया तरसे, बजरंगि छटा मुख बरसे,
तब कृपा बिना नहि दरसे जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
गज भरसी चौड़ी छाती भुज दण्डन प्रभा लखाती,
सुर संतन के चिर साथी जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
मृगराज ठवनि सुखकारी, आशा की गिरा उचारी,
हृदयान्धकार अपहारी जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
घट में कल्कि जी जागें, धग-धग लपटें-सी लागें,
लखि अघ अवगुणगण भागें जी जय हो तुम्हारी जय हो॥गुरु॥
तब कंचन वरण सुहाना, जहाँ रुद्र रूप भयो भाना,
अकलंकी तेज समाना जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
आगे कल्कि की भक्ति, विच नाम की जोत लहकती,
पीछे कल्कि की शक्ति जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
लखि हाथ में गदा तुम्हारे, आशा उमंग को धारे,
सुर-नर-मुनि भए सुखारे जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
मन चीती करी हमारी, कलियुग की जड़ें पंजारी,
ले कल्कि नाम अंगारी जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
भई प्रकट नाम की ज्वाला, नभ मण्डल डोलाहाला,
जब तुमने किया कसाला जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
जिनके घट के पट खोले, वे कल्कि की जय बोले,
फिर नहीं कहीं भी डोले जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

संशय सागर से त्राता, हे सत विश्वास के दाता,
नूतन जीवन निर्माता जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
हनुमानबली को ध्यावें, हम सब मिल शीश झुकावें,
अंगद-सी दृढ़ता पावें जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥
हे सब समरथ सब लायक, हे जग दुरलभ सुखदायक,
कल्कि मंडल के नायक जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ गुरु॥

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में सत्गुरु श्री बालमुकुन्द जी (हनुमान जी के अवतार) की अपार महिमा का गुणगान करते हुए कहा है कि—

हे गदाधारी आदि गुरु बालमुकंद जी! आपकी सदा जय हो! आपने हम सबको भगवान श्री कल्कि (जो महाविष्णु के 24वें अवतार व बड़ो में दसवें अवतार हैं) के अवतार लेने के विषय में प्रिय संदेश सुनाऐं। आपने ही हम सबको यह प्रिय संदेश सुनाया है कि भगवान श्री कल्कि जल्दी ही इस धरा-धाम में अवतार लेकर अन्याय अत्याचार का नाश करेंगे। आप हमारे मन-प्राण में हमेशा निवास करो। आप कल्कि के नाम का प्रचार करने वाले सत्गुरु हैं। आपने संसार का सुधार करने के लिए जन्म लिया है। आप परमात्मा के वैभव (अपार अन्तरंग ऐश्वर्य) को धारण करने वाले हैं। आपकी सदा जय-जयकार हो। हे बजरंगी (हनुमान के अवतार) आपके मुखारविंद की सुंदर छटा का दर्शन करने के लिए यह दुनिया (सभी लोग) तरसती है, परंतु वह दर्शन आपकी कृपा से ही संभव है। हे गदाधारी आपकी जय-जयकार हो। गुरूदेव ने इन पंक्तियों में बालमुकुन्द जी का रूप-सौंदर्य दर्शाते हुए लिखा है कि आपका सौंदर्य दर्शनीय है। आपकी गजभर की चौड़ी विशाल छाती व बड़ी-बड़ी भुजाओं में अपार शक्ति है। आप देवताओं और संतों के चिरकाल से साथी हैं। आपकी सदा जय हो। आपकी सिंह जैसी चाल देखने में सुख देती है। आपकी

वाणी लोगों में आशा जगाती है और हृदय का अंधकार (अज्ञान, निराशा) हटाती है। आपकी जय हो। आपकी वाणी से मन में कल्कि भगवान की ज्योति जागती है और उसकी धधकती लपटों से पाप रूपी अवगुणों का समूह भाग जाता है अर्थात् आपका वर्णन सुनते ही मनुष्य के मन में जो अवगुण (काम, क्रोध लोभ, मोह, माया, मत्सर) हैं, वे दूर हो जाते हैं। हे गुरुदेव आपका सोने जैसा निखरा हुआ सुंदर स्वरूप मन को मोह लेता है। आपने ही रुद्र रूप में अवतार लिया है। आप में निष्कलंक तेज समाया है। हे गुरुदेव आपकी जय हो। आपके आगे भगवान कल्कि के नाम की भक्ति की ज्योति प्रज्वलित हो रही है और पीछे कल्कि की शक्ति समायी है। आपकी जय-जयकार हो। भक्त लोग जब आपके हाथ में गदा देखते हैं तो उनके मन में आशा की उमंग पैदा होती है, जिसे देखकर देवता, मनुष्य, मुनिगण सुखी होते हैं। आपकी जय-जयकार हो। आपने हमारे मन की इच्छा पूरी करी है। कलियुग की जड़ों को कल्कि भगवान के नाम रूपी अंगारों से जलाया है। आपकी सदा ही जय हो। आपके प्रयत्नों से जब कल्कि भगवान के नाम की ज्वाला प्रकट हुई तो समस्त नभ-मंडल थर्रा उठा, और उसमें हलचल पैदा हो गई। आपकी सदा जय हो। आपने जिन लोगों के हृदय के कपाट कल्कि भगवान के नाम से खोले हैं, वे कल्कि जी की जय-जयकार कर रहे हैं। उनका मन इस संसार सागर में नहीं भटक रहा है। हे गुरुदेव आपकी सदा जय हो! हे सत्गुरु! आपने भक्तों की शंकाओं को दूर करके उन्हें सत्यता और विश्वास दिलवाकर उनका नया जीवन बना दिया है। आपकी जय हो। हम सब मिलकर हनुमान जी का ध्यान करते हुए आपके चरणों में शीश झुकाकर नमन करते हैं। आपकी कृपा से अंगद के अटल पाँव की तरह हम भगवान श्री कल्कि का नाम स्मरण करें। आपकी जय हो। हे गदाधारी हनुमान जी! आप सभी प्रकार से समर्थ, योग्य और इस जग को दुर्लभ सुख देने वाले

हैं। आप कल्कि मंडल के नायक हैं। आपकी सदा जय हो।

18. भई घोड़े पे कल्कि हुए सवार

भई घोड़े पे कल्कि हुए सवार
हाथ में जिनके है तलवार
भई जिनका जिस्म जगमगा रहा
उसने लखा जो लगा रहा
मुख पे करोड़ों हैं बलिहार
चंदा सूरज की चमकार
भई खड़ग की आभा दमक रही
मानो बिजली चमक रही
मुख मंडल की ऐसी आब
मानो छूट रही महताब
कंठ में जिनके झूलें हार
कमर में जिनके फेट कटार
पीले दुपट्टे ने भरी उड़ान
चाल में घोड़ा है तूफ़ान
कानों में कुंडल दे रहे बहार
मस्तक मलयागिरि महकार
सब अंगों में है सुनहरा साज
धरा है सिर पर जड़ाऊ ताज
वस्त्रों में हो रहा काम खरा
अंग-अंग में तेज भरा
जवाहारात कर रहे प्रकाश
सब भक्तों की पूजी आश
संतों तुम कर लो सम्मान
झुकेगा एक दिन सभी जहान

कल्कि नाम ने किया सवेरा
दूर किया कलियुग का अँधेरा
कल्याणकारी कल्कि का ध्यान
जीते जी दे पद निर्वाण

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए योद्धा वाली मूर्ति मन में बैठाकर ध्यान करने के लिए कहा है—

भगवान श्री कल्कि घोड़े पर सवार, हाथ में तलवार लिये हैं। जो प्राणी उनके नाम जाप, ध्यान में लगा हुआ है वह भगवान श्री कल्कि जी का जगमगाते शरीर (रूप) के दर्शन कर रहा है। वह प्राणी कल्कि जी का है। कल्कि जी का मुख चाँद-सूरज की तरह चमचमा रहा है जिस पर करोड़ों भक्त बलिहारी जा रहे हैं। उनके हाथ में तलवार ऐसी दमक रही है, मानो बिजली चमक रही हो। उनके मुखमण्डल की ऐसी आभा है, मानो तेज की किरणें छूट रही हों। उनके कंठ में हार झूल रहे हैं। उनकी कमर के फेंटे में कटार बँधी है और पीला दुपट्टा हवा में लहरा रहा है। उनका घोड़ा तूफ़ान की चाल में दौड़ रहा है। भगवान श्री कल्कि जी के कानों में कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं, मस्तक से मलयागिरी चंदन की महक आ रही है, समस्त अंगों में सुनहरा साज सुशोभित है, सिर पर जड़ाऊ ताज सुशोभित है, उनके वस्त्रों में खरे सोने से कढ़ाई का काम हो रहा है, अंग-प्रत्यंग से तेज चमक रहा है, वस्त्र और जड़े हुए जवाहरात प्रकाश फैला रहे हैं। कल्कि भगवान का ऐसा रूप और साज देखकर भक्तों की अभिलाषा पूरी हो रही है। (भाग्यवान भक्तों अभी सिर्फ तुम्हें ही मालूम है क्योंकि अभी कल्कि जी के पास भीड़ नहीं है, वहाँ सोफ्ता है)। तुम कल्कि जी का सम्मान कर लो आगे चलकर एक दिन ऐसा आएगा कि उनका सम्मान पूरा संसार करेगा तब तो

लाइनों में लगना पड़ेगा। कल्कि का नाम कलियुग की अंधेरी रात हटाकर सूर्य की तरह सुप्रभात लाता है। भक्तों ऐसे कल्याणकारी कल्कि जी का ध्यान जीते जी निर्वाण पद और मुक्ति देता है।

19. श्री कल्कि नाम का प्रताप

रट लो भाइयो कल्कि नाम
इससे बनेंगे बिगड़े काम
भई रटा गया जब कल्कि नाम
बिगड़े बनने लग गए काम
चढ़ी मुसीबत भाग उठी
हिंद की किस्मत जाग उठी
गिरा सितारा चढ़ने लगा
दिन दूना बल बढ़ने लगा
असुरों पर ऐसी मार पड़ी
मुल्कों में हाहाकार पड़ी
जल्लाद बगलें झाँकने लगे
उलटी भीख-सी माँगने लगे
ये देखो कल्कि के खेल
असुर आग में दिए धकेल
फँदे हिंद के टूटने लगे
दुष्टों के सिर फूटने लगे
घातक मन मन ऐंठ रहे
जबरान बताशे से बैठ रहे
कल्कि नाम से माया फिरी
असुरों की सारी शक्ति घिरी
कल्कि नाम का प्रबल प्रताप
हमें संभाल रहे हरि आप

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि जी के नाम का प्रताप बताते हुए कहा गया है कि उनका नाम लेने से सभी परेशानियाँ दूर हो जाती हैं—

अरे भाइयो! कल्कि का नाम रटते रहो, इसको रटने से तुम्हारे सारे बिगड़े काम बन जाएँगे। हमारा अनुभव है कि जब से हम कल्कि का नाम लेने लगे हैं, हमारे बिगड़े काम बनने लगे हैं। जब से कल्कि के नाम का आसरा लिया है, तब से आई हुई मुसीबत दूर हो गई हैं। हिंदुस्तान की किस्मत जाग गई है इसके भाग्य का सितारा जो गिर गया था, वह इससे फिर चढ़ने लग गया है, अर्थात् अब भाग्य चमक रहा है। इससे प्रतिदिन बल बढ़ने लगा है। असुरों पर ऐसी मार पड़ी है कि सारे मुल्कों में हाहाकार मची है। ज़रा देखो तो भगवान कल्कि की कैसी लीला है! अभी तक जो जल्लाद भारत देश के लोगों को सता रहे थे अथवा दाता बनकर हमें कर्ज़ा, दान, देते दिखाई दे रहे थे (अर्थात सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश को बल व कूटनीति से लूटकर ले गए थे), वे कल्कि नाम के प्रबल प्रताप से अब बँगले झाँक रहे हैं और अपनी रक्षा की एवं अन्य पदार्थों व ज्ञान की भीख माँग रहे हैं। यह कल्कि जी बड़े कराल हैं, उन्हें अपनी गउओं की निर्मम हत्या का बदला लेना है। सो जिन्होंने उनकी गउओं की निर्मम हत्या की है उनको वह आग में धकेल रहे हैं। हिंदुस्तान के सारे बंधन टूटने लगे हैं। दुष्टों का नाश होने लगा है। दुष्ट (दूसरे को चोट पहुँचाने वाले) जो मन-ही-मन ऐंठ (अकड़े हुए) रहे थे, अब वे कल्कि नाम के प्रभाव से बतासे की तरह बैठ रहे हैं। कल्कि नाम की ऐसी माया फिरी है कि असुरों (राक्षसों) की सारी शक्तियाँ मुसीबतों में घिर गई हैं। वे बेबस से हो गए हैं। कल्कि नाम का ऐसा प्रताप है कि प्रभु हमें, भक्तों, संतों, सज्जनों को स्वयं सँभाल रहे हैं।

20. बब्रावाहन टेसू आए

बब्रावाहन टेसू आए
कृष्णचंद्र के मन भाए
महाभारत के बीच मैदान
करतब की दिखलाई शान
देखे जब टेसू बलवान
बोले मुख से श्री भगवान
शीश दान हमको दे दीजे
क्षत्री धर्म का यश रख लीजे
केशव जी का रखा मान
शीश काटकर कर दिया दान
कृष्णचंद्र का वचन निभाया
विराट रूप का दर्शन पाया
माया के परदे चाक किए
कृष्ण-ही-कृष्ण सुझाई दिए
टेसू को मिल गई ज्ञान की आँख
जगत में उनकी जम गई साख

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में श्याम बाबा (बब्रावाहन) टेसू की कथा का वर्णन किया है और भगवान की उनपर कृपा दिखाई है—

महाभारत के युद्ध के समय कुरुक्षेत्र के मैदान में जब बब्रावाहन टेसू आए तो भगवान कृष्ण ने कहा तुम इन तीन तीरों से कैसे युद्ध जीत पाओगे? इस पर बब्रावाहन बोले, एक तीर ही पेड़ के सारे पत्तों को छेदकर पुन: तरकश में आ जाएगा। श्री कृष्ण ने पेड़ से गिरा एक पत्ता अपने पैर के नीचे दबा लिया और उससे तीर का प्रभाव देखने को कहा। कमान से निकला तीर पेड़ के एक-एक पत्ते

को छेदता हुआ श्री कृष्ण के पैर के पास आ गया। बब्रावाहन ने कहा कृष्ण पैर हटाओ वरना यह तुम्हारे पैर में भी छेद कर देगा। इस पर उनकी वीरता देखकर श्री कृष्ण स्तब्ध रह गए कि मैं तो धर्म की रक्षा के लिये युद्ध कर रहा हूँ, बब्रावाहन कह रहा है कि मैं हारने वाले की तरफ से लड़ूँगा जब कि इसके तरकश में सिर्फ तीन तीर हैं)। तीर चलाने का कौशल देखकर श्री भगवान उससे बोले तुम तो बहुत बड़े योद्धा और दानी हो, मुझे भी कुछ दान दे दो। बब्रावाहन के हां कहने पर श्री कृष्ण ने कहा हमको अपना सिर काटकर दान दे दो और अपना वचन निभाकर क्षत्रिय धर्म के यश की रक्षा कर लो। बलवान टेसू ने केशव का मान रखा और अपना सिर काटकर उनको दान कर दिया। जब उसने श्री कृष्ण को दिया अपना वचन निभाया तो भगवान ने उसपर प्रसन्न होकर उसको अपने विराट रूप का दर्शन कराया। उसकी आँखों में जो माया का पर्दा पड़ा था, उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इससे टेसू को सर्वत्र कृष्ण-ही-कृष्ण दिखाई दिए। टेसू को भगवान की कृपा से ज्ञान की आँखें मिल गईं और संसार में अपने इस कार्य से उनकी साख जम गई। उनका नाम अमर हो गया। (आज भी वह श्याम बाबा के नाम से विख्यात होकर भक्तों के कष्ट दूर करके उनपर अपनी कृपा बरसा रहे हैं।

21. जय हो भगवान कल्कि जी जय हो

जय हो भगवान कल्कि जी जय हो तुम्हारी जय हो॥ टेक।

तब नाम की अग्नि भड़की, शक्ति बिजली सम कड़की,
कलिकाय कांच सम तड़की जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

तब कमल नयन रतनारे, मद मयन के मारन हारे,
सुषमा के अयन अनियारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

भृकुटि लखि रिपुबल टूटें, जहां काल अनल झल फूटें,
प्रलयंकर किरनें छूटें जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

मुख कोटि भानु छवि सोहे, जहाँ काल चक्र गति मोहे,
माया विनीत रूख जो है जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

सिर मुकुट झमाका खावे, मणिमय प्रकाश बरसावे,
मन लगन की लौ भड़कावे जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

कुडंल किरीट की शोभा, लखि रवि शशि आनन क्षोभा,
शंकर मन मानस लोभा जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

सुंदर विशाल है छाती, गज मस्त चाल मदमाती,
केहरि सम कटि बल खाती जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

मोतिन की झालर झमकें, जहाँ जड़े जवाहर चमकें,
शोभा दामिनि सम दमकें, जय हो तुम्हारी जय हो॥

केसरिया जामा साजे, गल फूलन गजरा छाजे,
शोभा श्रृंगार विराजे जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

सर्वांगे महकत चंदन, अंग अंग सुनहरे मण्डन,
दुख द्वन्द फंद के खंडन जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

भुज दंडन की छवि न्यारी, गरदन नाहर अनुहारी,
माथे पे तिलक द्युतिकारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

कर कमल वरद असिधारी, है शंख सुभग रव भारी,
युग के परिवर्तनकारी जी जय हो तुम्हारी जय हो॥

है आदि पुरुष तब प्यारी, चंचल घोड़े की सवारी,
जिसने है मोहनी डारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

तब चरण कमल नख ज्योति, जो हृदय पटल मल धोती,
जहाँ दिव्य दृष्टि है होती जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

गुरु बालमुकुन्द ने जानी, कलियुग की नास निशानी,
तब लीला नई सुहानी जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भगवान कल्कि के सुंदर स्वरूप का चित्रण करते हुए- भक्तों के ध्यान के लिए भगवान की वेश-भूषा, रंग-रूप, हाव-भाव और अंग प्रत्यंग के स्वरूप को अंकित करते हुए लिखा है—

हे कल्कि भगवान आप समस्त कांच रूपी बुराइयों को तोड़ने वाले हैं।आपकी सदा जय हो। आपके नाम की अग्नि हमारे प्राणों में प्रज्वलित हो गई है। आपकी शक्ति बिजली की कड़क के समान कलिकाल की काया (बुराइयों) को काँच के समान तोड़ने वाली है। आपकी जय हो। आपके सुंदर रतनारे कमल नयन कामदेव के घमण्ड को चूर-चूर करने वाले हैं। आप सौंदर्य के अनुपम घर हैं। आपकी जय हो। आपकी टेढ़ी भृकुटि को देखकर शत्रु का बल टूट जाता है, उनमें कालाग्नि प्रकट हो जाती है। ऐसा लगता है मानो उनमें से प्रलयंकारी किरणें निकल रही हैं। हे प्रभु आपकी सदा जय हो। आपके मुख पर करोड़ों सूर्य के तेज का सौंदर्य झलकता है। उस पर कालचक्र (समय) की गति भी मोहित हो जाती है,(आपके सम्मुख समय ठहर जाता है) माया भी आपके आदेश की प्रतीक्षा करती है। आपकी सदा जय हो। आपके सिर पर मुकुट झलक रहा है, जिससे मणियों का प्रकाश बरस रहा है। बार-बार मन में आपकी भक्ति की लौ लग जाती है। आपकी जय हो। आपके कुण्डल और मुकुट की चमक के सामने सूर्य और चंद्र का मुख फीका लगता है। आपका स्वरूप भगवान शंकर के मन को भी मोहित कर रहा है। आपकी जय हो। आपकी भुजाएँ सुंदर और विशाल हैं। आपकी हाथी जैसी मतवाली चाल और सिंह की-सी कमर बलखाती है। आपकी सदा जय हो। आपके गले में मोतियों की झालर, जिसमें जवाहरात चमक रहे हैं, बिजली दमक रही है उसकी शोभा निराली है। हे प्रभु आपकी जय हो। आप पर केसरिया नव वस्त्र सज रहे हैं, गले में फूलों की माला शोभित हो रही है। आपकी शोभा व शृंगार अतुलनीय है।

आपकी सदा जय हो। आपके सभी अंगों में चंदन की महक है और प्रत्येक अंग सुवर्णमय है। आप भक्तों के दुख और परेशानियों को मिटाने वाले हैं। आपकी सदा जय हो। आपके भुजदण्डों की अनोखी शोभा है। आपकी गरदन शेर जैसी है। आपके माथे पर चंदन चमक रहा है। आपकी जय हो। आपके कर-कमल में श्रेष्ठ तलवार सुशोभित हो रही है और शंख की सुंदर ध्वनि गूंज रही है। आप युग के परिवर्तन करने वाले हैं। आपकी सदा जय हो। हे आदि पुरुष! आपको चंचल घोड़े की सवारी प्रिय है। आपके स्वरूप की इस सुंदरता ने सबको मोहित किया हुआ है। आपकी जय हो। आपके चरण कमल के नखूनों की ज्योति भक्तों के हृदयों पर जमे हुए काम, क्रोधादिक मैल को धो डालती है और उन्हें दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। आपकी जय हो। गुरु बालमुकुंद जी ने जब से जान लिया कि आप ही कलियुग का नाश करने वाले हैं, तब ही से उन्होंने आपकी सुंदर लीला का गुणगान करना शुरु कर दिया। हे प्रभु श्री कल्कि जी आपकी सदा जय हो।

22. जनम कल्कि के हेत भयो

जनम कल्कि के हेत भयो
अंधकार में लख प्रकाश को जीवन भयो नयो।
कलि की माया काँपी वाको सटको कटक अपार।
कल्कि नाम ने दहन कर दई लंका-सी दई जार।
कटक माया को कटत गयो॥ जनम···
अंधकार के बादल फाटे आशा ने गहयो हाथ।
दुनिया वाले अलग हट गए अपनन ने दियो साथ।
नाम कल्कि को खड़ग गहयो॥ जनम···
निष्कलंक की माया ने सब माया कीनी ग्रास।
फँद कटे कड़ियाँ-सी चटकी दुष्टन को भई त्रास।

तेज अकलंकी प्रकट भयो॥ जनम···

थाना पद्मापति ने कीनों अंतष्करण हमार।
वा थाना में बैठे प्रभु ने दे दीने दीदार।
समंदर दया को उमड़ गयो॥ जनम···

भूमि भार उतारन के हित उद्यत हैं करतार।
खबरें उनकी प्यारी-प्यारी आई बेशुमार।
नाम ने प्रेम उजाल दियो॥ जनम···

नाम सुमर के नाता जोड़ो होय शक्ति संचार।
अब भारत के फँद कटेंगे होगा बेड़ा पार।
नाम कल्कि है जाग गयो॥ जनम···

पराधीनता मिटै हिंद की भक्ति के परताप।
दीनानाथ पियारे कल्कि हमें सँभारे आप।
जिनन को है परताप बड़ो॥ जनम···

नाम की महिमा प्रगटी मन से संशय दूर भयो।
रोम-रोम में अब तो प्यारो कल्कि छाय रहयो॥ जनम···

कल्कि नाम अमोघ हो रहा जिन ढूँढ़ा उन जाना।
प्रगट करें मिल-जुल कल्कि को अब ये ही प्रण ठाना।
प्रेम ने बाना बदल दियो। जनम···

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुदेव ने भक्तों को मनुष्य जीवन में जन्म लेने का एकमात्र उद्देश्य कल्कि की भक्ति बताते हुए कहा है—

यह जन्म भगवान श्री कल्कि की भक्ति करने के लिए मिला है। इस मानव देह का उद्देश्य कल्कि भगवान ही है। कल्कि की भक्ति के प्रकाश से अज्ञान व निराशा का अंधकारमय जीवन अब नया हो गया है। कल्कि नाम से कलियुग की माया डर के मारे काँपने लगी है। इस माया को कल्कि ने ठीक उसी तरह जलाकर खाक कर दिया,

जैसे हनुमान ने लंका जलाई थी। निराशा के बादल फट गए और आशा ने हाथ थाम लिया। कलियुगी लोगों ने भक्तों से किनारा कर लिया और जो इस भक्ति मार्ग के (कल्कि मंडल के सदस्य) संगी-साथी थे, उन्होंने भक्ति के मार्ग में बढ़ने के लिए साथ दिया। बंधन की कड़ियाँ चटक गईं हैं। दुष्ट लोग भयभीत हो गए हैं। भक्तों के मन से दुष्टों का भय समाप्त हो गया। जब से निष्कलंक भगवान कल्कि का तेज प्रकट हुआ है, पद्मापति भगवान कल्कि ने हमारी आत्मा में निवास कर लिया है। इसी हृदय स्थान में बैठे हुए प्रभु ने हमें अपने दर्शन दिए जिससे मन में उनकी दया का समुद्र उमड़ रहा है। श्री कल्कि पृथ्वी का भार उतारने के लिए (पापियों का नाश करने) तैयार हैं। भगवान कल्कि के अवतार लेने की प्यारी-प्यारी खबरे बेशुमार (अनगिनत) आ रही हैं। कल्कि नाम ने प्रेम का प्रकाश फैला दिया है। भक्तों व जिज्ञासुओं भगवान का नाम स्मरण करके उनसे अपना रिश्ता जोड़ो। तुम्हारे मन में शक्ति का संचार होने लगेगा। अब भारत के सारे बंधन कट जाएँगे और सबका कल्याण होगा)। अब कल्कि के नाम की सर्वत्र जय-जयकार हो रही है। भक्ति के प्रताप से हिंदुस्तान की गुलामी मिटी (लेकिन समय के प्रभाव से राज्य गोरे अंग्रेजों के हाथों से हटकर काले अंग्रेजों के हाथ में आ गया)। ऐसे बड़े प्रतापी दीनानाथ प्यारे कल्कि जी आप हमारी जीवन नैया को सँभाले रखिये। जब से मन में कल्कि नाम की महिमा प्रकट हुई है, मन की सारी शंकाऐं (संदेह) दूर हो गई हैं। अब तो हमारे रोम-रोम में प्यारे कल्कि जी ही छाए हुए हैं। कल्कि नाम राम बाण की तरह कसौटी पर खरा उतरने वाला, शाश्वत सत्य है। जिन्होंने भी कल्कि जी को पाने का प्रयत्न किया है वे कल्कि नाम के प्रताप को जान गए हैं। हमने अपने मनों में यह प्रण ठान लिया है कि हम (कल्कि मण्डल के लोग) सब मिल-जुलकर कल्कि जी को प्रकट करके रहेंगे। हमने अपना स्वरूप बदल दिया है (संसार की परवाह न करके कल्कि जी की ही भक्ति करेंगे)।

23. जय हो भय के भय कल्कि

जय हो भय के भय कल्कि, जय असुरन के क्षय कल्कि
सुर संत अभय जय कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
जय त्रिभुवन शासक कल्कि, जय कलि कुल नाशक कल्कि,
निज रूप प्रकाशक कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो॥
जब रूप की चमकी ज्वाला, घट भीतर हुआ उजाला
सूझा सब काम सुखाला जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
सतगुरु की महिमा दरसी, जब कृपा की वर्षा बरसी,
सूखी आशा भई सरसी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
जय हो पितु माता कल्कि, सुख के निर्माता कल्कि,
निर्बल के त्राता कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
जय हो धन प्राण कल्कि, संतन के त्राण कल्कि,
जन के निर्वाण कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
जय पतित उधारन कल्कि, जय कष्ट निवारन कल्कि,
शरणागत तारन कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
जय असुर निकंदन कल्कि, जय हो जग वंदन कल्कि,
भक्तन उर चंदन कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
तुम धर्म के हो रखवारे, सतमारग के उजियारे,
पद्मा पति प्राणाधारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
दुष्टन के काल कल्कि, संतन प्रतिपाल कल्कि,
प्रगटो गोपाल कल्कि जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
परताप प्रचंड तुम्हारा, दुख द्वन्द निवारण हारा,
जिसने यह हिंद उबारा जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
मुख कमल खिले हैं सबके, हैं पाप कटे जब तब के,
ली शरण आपकी जब के जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

कल्कि मंडल के प्यारे, हे स्वामी सखा सहारे,
तुम ही सौभाग्य हमारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी ने भगवान कल्कि की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है—

हे कल्कि जी आप भय को भी भयभीत करने वाले हो। आप असुरों का दलन करने वाले हो। आपकी कृपा से सुर और संतों को अभय मिलता हैं। आपकी सदा जय हो। आप तीनो लोकों के शासक हैं। आप कलियुग के दोषों को मिटाने वाले हैं। जब भक्तों के मन में आपके रूप की ज्वाला चमकती है, तब उनके हृदय में आपका प्रकाश फैल जाता है। इससे भक्तों को सुख देने वाले समस्त कार्य स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं, अर्थात् अंदर का अज्ञानांधकार छूटते ही आपके ज्ञान के प्रकाश से सही राह दिखाई देने लगती है। आपकी जय हो। सत्गुरु (विभीषण जी) की कृपा से हे कल्कि जी आपकी कृपा की वर्षा मेरे ऊपर बरसने लगी है। इससे मेरे मन से निराशा के बादल छँट गए और सूखी हुई आशा हरियाली में बदल गई। हे कल्कि जी! आप ही हमारे माता-पिता हो। आप ही हमारे सुख के निर्माता हो और आप ही निर्बलों की रक्षा करने वाले हो। आपकी सदा जय हो। हे कल्कि जी आप ही हमारे धन और प्राण हो। आप ही संतों की रक्षा करने वाले हो। आप ही भक्तों को परेशानियों से निकाल कर अनंत सुख प्रदान करते हुए उन्हें मुक्त (तनाव रहित) रखते हो। आपकी जय हो। आप दुखियों के कष्ट दूर करने वाले हो। हे शरणागतों का उद्धार करने वाले श्री कल्कि, आपकी सदा जय हो। हे श्री कल्कि जी आप असुरों का नाश करने वाले और भक्तों के हृदय में शीतलता देने वाले हैं। आपकी सदा जय हो। हे कल्कि जी आप धर्म के रखवाले, सच्चा रास्ता दिखाने वाले, पद्मापति

जी, लक्ष्मी जी के प्राणों के प्यारे हो। आपकी सदा जय हो। आप दुष्टों के काल हो, संतों के रक्षक हो। हे गोपाल कल्कि जी प्रकट हो जाइये। आपकी जय हो। आपका विशाल तेज दुखों और झंझटों को मिटाने वाला है। आप ही इस हिंदुस्तान को म्लेच्छों से स्वतंत्र कराओगे। आपकी जय हो। हे कल्कि जी जब से हमने आपकी शरण ली है, हमारे मुख कमल खिल गए हैं। हमारे पिछले व इस जन्म के पाप कटने शुरु होकर पुण्यों का फल मिलने लगा है। आपकी सदा जय हो। आप कल्कि मण्डल के प्यारे हैं। आप ही हमारे स्वामी, सखा, सहारे और सौभाग्य हैं। आपकी सदा जय हो!

24. मेरे तो कल्कि गोपाल दूसरा न कोई

मेरे तो कल्कि गोपाल दूसरा न कोई,
म्लेच्छ वंश ध्वंश हेत अवतरो है जोई।
प्राणाधार प्राणपाल अनुभव दे माला माल,
कर दीनो अति निहाल ऐसो को सगोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल···
भक्ति बेल हरी करी प्रीति की रीति भरी,
हिय की सब पीर हरी हाथ को गहोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल···
चंद्र सम मुखारविंद चलत मत्त जिमि गयंद,
आदि पुरुष श्री गोविंद माया पति सोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल···
घुड़सवार खड़गधारि कमल नयन कृपाकारि,
पद्मापति श्री मुरारि धरा पंक धोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल···
कंठ झूलें फूल हार मोतियन मुकुट शृंगार,
चंदन द्युति चंद्रसार येही मन हरन हार।

ये ही है करणधार पार करे गोई॥
मेरे तो कल्कि गोपाल…

असुरन को कालरूप सुषमा सागर अनूप,
भारत भवि तव्य भूप (भू मंडल भुवन भूप)
निरखि सुगति होई।
मेरे तो कल्कि गोपाल…

कल्कि नाम तेजो राशि घट में कीनो प्रकाश,
शीघ्र दई कुमति नाश गुहा में बसोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल…

ठाढ़ो अहसान मंद कल्कि मंडल स्वछंद,
काटे हैं द्वन्द फंद शंका सब खोई।
मेरे तो कल्कि गोपाल…

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुवर ने बताया है कि कल्कि नाम का जाप करने वाले भक्त उनके कलेजे हैं और वह उन्हें अनुभव दे-देकर (श्री कल्कि बाल वाटिका) मालामाल कर रहे हैं—

कल्कि गोपाल ही मेरे सब कुछ हैं, मुझे उनके अलावा किसी और का भरोसा नहीं है। श्री कल्कि जी म्लेच्छ वंश के नाश के लिए अवतरित हुए हैं। कल्कि भगवान ही मेरे प्राणों के आधार हैं, प्राणों के पालक हैं। उन्होंने अपने अनुभव व चमत्कारों से हमें मालामाल कर दिया है। उनके अतिरिक्त कौन ऐसा सगा होगा, जो अपने भक्तों को निहाल कर दे। उनकी कृपा से हमारी भक्ति की बेल हरी हुई है। उन्होंने हमें प्रेम की रीति सिखाई और हमारे मन के सारे दुख दूर किये हैं। वही आदि पुरुष (नारायण) श्री गोविंद ही मायापति हैं । उनका चंद्रमा के समान सुन्दर मुख और मतवाले हाथी की सी चाल है। वही घोड़े पर सवार, खड़गधारी, कमल-नयन, कृपा करने वाले पद्मा (लक्ष्मी

जी) के पति श्री मुरारी धरती के पाप को मिटाने वाले हैं। भगवान श्री कल्कि के गले में फूलों के हार, मोतियों से जड़ा मुकुट, माथे पर चंदन, चाँदनी की चमक से युक्त रूप भक्तों के मन को हरने वाला है। ये ही हमारी जीवन नैया के कर्णधार हैं जो इसको पार लगाएँगे। वह राक्षसों के लिये काल हैं। भगवान श्री कल्कि सौंदर्य के सागर हैं। वह भारत के ही नहीं तीनों लोकों के राजा हैं। उनका ध्यान करने से कल्याण होता है। भगवान कल्कि के नाम से हमारे हृदय मण्डल में अनन्त प्रकाश हुआ है। उस प्रकाश ने हमारे हृदय में बस कर दुर्बुद्धि का नाश किया है। कल्कि मंडल आपका अहसानमंद है, कि आपने हमारी सभी परेशानियों को काटकर सारी शंकाए मिटा दी हैं।

25. भयो कारागार उजागर

भयो कारागार उजागर, जब वासुदेव नटनागर,
प्रगटे करुणा के सागर जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
तुम अघा बकासुर मारे, पूतना प्राण संहारे,
केशि यम घाट उतारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
बरसत जल अगम खपाए, गरजत घन गहन हटाए,
तुम इंद्र घमंड घटाए जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
हे गिरि गोवर्धन धारी, हे कालिय मर्दन कारी,
हे यमुना तट संचारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
दृढ़ बंध तोड़ दिए सारे, सब कंस सुभट हिय हारे,
जब सभा में आप पधारे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
विदुषन विराटमय चीना, मल्लन ने मल्य प्रवीना,
सब नगर भयो लवलीना जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
चाणूर से धरणी धंसाये, मुष्टिक यम फँद फँसाये,
शल तोशल मार गिराए जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
लखि कंस के काल विराजे गह-गहे बाजने बाजे,

जय कृष्ण चंद्र सब गाजे जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
हर्षित नर नारी कीने, जब केश हाथ गहि लीने,
हनि कंस पटक महि दीने जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
यदुवंश की विपदा टारी, ब्रज मंडल कियो सुखारी,
मुरलीधर रास बिहारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
अक्रूर को दरश दिखाए, अर्जुन रथवान कहाए,
तुम साग विदुर घर खाये जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
गुरु पत्नी शोक नशाए, जग बिछड़े पुत्र मिलाए,
जो यम घर से लौटाए जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
सब असुर चमू मथ डारी, सागर जिमि मगर मुरारी,
जब रुक्मणी रथ बैठारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
हे कमल नयन असुरारी, भारत अति भयो दुखारी,
अब सुध लो नाथ हमारी जी, जय हो तुम्हारी जय हो।
गुरु बालमुकुंद घट खोला, दे कल्कि नाम अनमोला,
कल्कि मंडल ने बोला जी, जय हो तुम्हारी जय हो।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भगवान कल्कि को कृष्ण का अवतार मानकर उनके गुणों और कार्यों का वर्णन करते हुए कहा है—

भगवान कृष्ण के प्रकट होते ही कारागार (जेल) में उजाला हो गया। आपने कृष्णावतार में अनेक राक्षसों का वध किया। आपने अधासुर, बकासुर को मारा, पूतना के प्राण हरे, कंस को यम के घाट उतारा, आपकी जय हो। आपने इंद्र द्वारा भयंकर वर्षा से बृज वासियों की रक्षा की, आपने ही गर्जना करने वाले बादलों को हटाकर इंद्र का घमण्ड चूर किया, आपकी जय हो। गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले, कालिया नाग को मारने करने वाले, यमुना तट पर लीला रचाने वाले प्रभु आपकी जय हो। आपने कंस के द्वारा बनवाए गए

मजबूत बांधों को तोड़ दिया। पागल हाथी, मुष्टिक-चाणूर पहलवान, जिसको कंस ने आपको मारने के लिए नियुक्त किया था, उन्हें आप हरा कर कंस की सभा में पहुँचे। आपके मंच पर उपस्थिति होते ही जिसकी जैसी भावना थी, उनको आप वैसे ही दिखने लगे। विद्वानों को आप विराट रूप में दिखाई दिए। योद्धा आपको महान योद्धा के रूप में देखने लगे। समस्त नगरवासी आपसे प्रेम करने लगे। आपकी जय हो। चाणूर पहलवान को युद्ध में आपने धरती पर पटक दिया। अपनी मुट्ठी के प्रहार से चाणूर को आपने यमलोक भेज दिया। शल और तोशल को मार डाला। आपकी जय हो। आपको कंस के काल रूप में देखते ही अनेक प्रकार के बाजे जोर-जोर से बजने लगे। कृष्णचंद्र भगवान की सभी जय जयकार करने लगे। जब आपने कंस को केश पकड़कर घसीटा और उसे मारकर धरती पर पटका तो सभा में सभी नर-नारी आनन्दित हो गये।

आपने संपूर्ण ब्रजमण्डल को सुखी किया। हे मुरलीधर रास बिहारी आपकी जय हो। बृज से मथुरा जाते समय अक्रूर को आपने अपने भगवत स्वरूप के दर्शन कराए। आप अर्जुन के सारथी बने। आपने दुर्योधन के छप्पन पकवानों को छोड़कर अपने भक्त विदुर के घर प्रेम विह्वल विदुरानी द्वारा केले के छिलके खाये। आपकी जय हो। आपने मरे हुए गुरु पुत्र को यमराज के घर से लौटाकर गुरु माता से मिलाकर उनका शोक दूर किया। आपकी जय हो। आपने रुक्मणी हरण के समय जिस प्रकार मगरमच्छ सागर को मथ डालता है, उसी प्रकार संपूर्ण असुरों की सेना को मथकर रुक्मणी को रथ में बैठाकर ले आए, आपकी जय हो। हे असुरारी कमल नयन प्रभु आज भारतवासी बहुत दुखी हैं। हे नाथ! हमारी भी सुधि लीजिए। गुरु बालमुकुन्द जी (हनुमान जी के आवेशावतार) ने अपने हृदय में विराजमान अनमोल कल्कि नाम को कल्कि-मंडल के भक्तों को बताया और जपवाया है। हम सभी कल्कि-मण्डल के भक्त आपकी जय-जय कार करते हैं।

26. जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो

जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो,
उस भूमि को लाख प्रणाम।
वह संभल वह क्षीर समंदर,
करें उजाला बाहर अंदर
करदे घट को कल्कि मंदर,
उस भूमि को लाख प्रणाम।

जहाँ पे कल्कि...

उदयाचल पहाड़ सम जो है,
सत युग भवन पाड़ सम जो है।
दुष्टन दहन भाड़ सम जो है,
उस भूमि को लाख प्रणाम॥

जहाँ पे कल्कि...

संत सरोज खिलावन हारी,
दंभी दिल दहलावन हारी।
श्री कल्कि से मिलावन हारी,
उस भूमि को लाख प्रणाम।

जहाँ पे कल्कि...

इसकी धूरि हम सिर पर धारें,
अपने मन का मैल उतारें।
कल्कि नाम रट संशय टारें,
उस भूमि को लाख प्रणाम॥

जहाँ पे कल्कि...

दश दिश ब्रह्म विभव बरसावें,
कल्कि की लीला दरसावैं।
जो ध्यावै सो निश्चय पावैं
उस भूमि को लाख प्रणाम॥

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में जहाँ भगवान श्री कल्कि का नाम जपा-रटा जाता है वहीं भगवान की जन्मभूमि सम्भल बन जाती है—

जहाँ भगवान श्री कल्कि का नाम जपा-रटा जाता है उस भूमि को हम सब प्रणाम करते हैं। वह भूमि संभल, क्षीर सागर, के समान है। वह भूमि भगवान का प्रकाश हमारे बाहर और भीतर करती है। वही हमारे हृदय को कल्कि का मंदिर बना देती है, उस भूमि को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।

वह भूमि उदयाचल के पहाड़ के समान है, जहाँ से भगवान भास्कर (सूर्य) प्रकट होते हैं। वह सतयुग रूपी भवन की पाड़ के समान हैं जो, दुष्टों को जलाने के लिए चना भूननेवाला भाड़ के समान है। उस भूमि को हम लाख प्रणाम करते हैं। जिस भूमि पर संत रूपी कमल खिलते हैं उस पर घमंडियों के दिल दहलते हैं। ऐसी श्री कल्कि से मिलाने वाली भूमि को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं। इस भूमि की पवित्र धूल को हम सिर पर धारण करते हैं। इससे हमारे मन के पाप धुल जाएँगे। वह भूमि कल्कि के नाम की रटन से संशय को भगाने-मिटाने वाली बन जाती है। उस भूमि पर दसों दिशाओं से ब्रह्माण्ड अपना अनन्त वैभवता (धन-दौलत, ऐश्वर्य, भक्ति, ज्ञान) की वर्षा करते हैं। उस भूमि को हम लाख प्रणाम करते हैं। जहाँ भक्त कल्कि भगवान की भक्ति करके निश्चित रूप से उनकी लीलाओं के दर्शन कर रहे हैं, उस भूमि को हम लाख प्रणाम करते हैं।

27. निष्कलंक, नहीं कलंक तुमको

निष्कलंक, नहीं कलंक तुमको,
कलु काल के अवतारी।
दलन करो दुष्टों के दल का,

धूम तुम्हारी है भारी।
कमल नयन सरकार सम्भली,
छत्तर मुकुट सिर खड़ग धरे।
युग-युग में अवतार धार कर,
भक्तजनों के कष्ट हरे।
क्षीर सिंधु के वासी जागो,
हुई सृष्टि गौ हत्यारी।
असुर संहारन संत उबारन,
दुखों भरी परजा सारी।
योग यज्ञ मख दान तपो व्रत,
जप भक्ति और ज्ञान नहीं।
रामायण के पाठ भागवत,
गीता और पुराण नहीं।
वेद विप्र अरु देव धर्म,
गउवें साधु विष्णु पूजन।
बंद हुए, सत्कर्म, स्थापना,
करो शीघ्र भू-भार-हरण।
अटल छत्र दरबार, अश्व,
असवार, विकट तेजो धारी।
प्रलय काल की अग्नि-ज्वाल,
बन रही नाम की अगियारी।
तड़िताँश तड़क भूषण की भड़क,
कुण्डल की दमक माथे पे तिलक।
झाँकी की झलक, शस्त्रों की चमक,
मुख-बिम्ब-मयंक मनोहारी।
है कंठ-माल-उर, भुज-विशाल,
करवाल जिन्हों की काल अनी।

चमक उठा भारत का भाल,
जब कल्कि की तलवार तनी।
उठो-उठो महाकाल बनो,
विकराल दण्ड को धारो अब।
सम्वर्त काल के मेघजाल की,
गरज की गूँज गुँजा दो अब।
होए कलियुगी त्रसित, भक्त,
उल्लसित, खचित मूरति प्यारी।
समय और इतिहास चित्रपट,
घट में दीखो असुरारी।
सम्भार विरद बाना धारो,
बन जाओ स्वामी काल वरण।
आ जाओ भगवान पने पे,
हो जाए दुष्टों का निधन।
आखेट की भांति विदार धरो,
हरि रेद-रेद कर मार धरो।
धर्म द्रोहकारी व प्रजा पीड़को,
का प्रभु संहार करो।
चढ़ो बजा कर शंख होए,
विध्वंस मचे हा-हा कारी।
घटा निराश की हटें दुष्ट,
सब कटें मिटें अत्याचारी।
बजे विजय के बम्ब गड़ें ध्वज,
खम्ब होए मंगलाचारी।
गायें आपके नाम गुणों के,
ग्राम सभी मिल नर नारी।
सात द्वीप नव खण्ड में दमकें,

कल्कि नाम की उजियारी।
अखण्ड भू मंडल के राजा,
निष्कलंक संकट हारी।
हम आए आपकी शरण पकड़ लिये,
चरण चित्त में वास करो।
भक्त वास शरणागत वत्सल,
अभय दान का हाथ धरो।
ये कल्कि मंडल शरणागत,
खड़े आपके दरबारी।
टेर सुनो महाराज भुवन,
सिरताज लाज के रखवारी।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भक्तों की पुकार है कि भगवान आप कल्कि रूप में प्रकट होकर हमारे कष्टों को दूर करके अधर्म का नाश करके, धर्म की स्थापना करो—

हे निष्कलंक भगवान श्री कल्कि! आप 64 कलाओं के सम्पूर्ण अवतार हैं। आप सम्पूर्ण राक्षसों का नाश करोगे पर आप को कोई दोष नहीं लगेगा कि आपने मारा। आप कलियुग के अवतार हो, आपकी कीर्ति की धूम मची है। आप दुष्टों के दल का संहार करके सत्युग की स्थापना करोगे। संभल में अवतार लेने वाले कमल नयन सरकार, आपने छत्र-मुकुट सिर पर धारण किया है। आपके हाथों में तलवार है। आप प्रत्येक युग में अवतार लेकर भक्तजनों के कष्ट मिटाते हो। हे क्षीर सागर में निवास करने वाले लक्ष्मी नारायण! जागो, यह संपूर्ण पृथ्वी के लोग गायों की हत्या के पाप से ग्रसित हैं। आप असुरों का संहार करने वाले और संतों को उबारने वाले हैं। आज सारी प्रजा दुखी है। इस पृथ्वी से योगाभ्यास, यज्ञ, दान, तप, व्रत,

जप, भक्ति और ज्ञान लुप्त हो रहा है। अब कहीं भी गीता, रामायण, भागवत, पुराणों की कथा सुनाई नहीं देती है। वेद ध्वनि, ब्राह्मण, देव, धर्म, गाएँ, साधु, विष्णु पूजा तो प्रायः बंद हो गई है। हे प्रभु! इस पृथ्वी का भार शीघ्र दूर करके सत् कर्मो की पुनः स्थापना करें। हे श्री कल्कि! आपका अटल छत्र दरबार, चंचल घोड़े की सवारी और भयंकर तेज तलवार की चमक ने आपके नाम की अग्नि को प्रलय काल की अग्नि ज्वाल बना दी है। आपके आभूषणों की भड़क, कुण्डल की दमक, बिजली की-सी चमक, माथे पर तिलक वाली आपकी झाँकी की झलक शस्त्रों की चमकवाला आपका चंद्र मुख मनोहारी है। आपके गले में माला, विशाल छाती और बलवान भुजाएँ हैं। ऐसे भगवान कल्कि की तलवार (जो कि काल की सेना के समान है) तनने से भारत माता का माथा चमक उठा है। हे कल्कि! आप अब महाकाल बनकर उठो, अपना भयंकर दण्ड पकड़ो, प्रलयकाल के मेघ जाल की गरज से इस धरा को गुँजारित कर दो, जिससे कलियुगी पापी भयभीत हो जाएँ और आपको देखकर भक्त उल्लास से भर जाएं। समय और इतिहास जिस तरह टी.वी. में दिखाया जाता है, हे असुरों के शत्रु आप हमारे हृदय में प्रगट हो जाएं। हे कल्कि जी दुष्टों का नाश करनेवाली योद्धाओं की पोशाक धारण करो। हे स्वामी, आप महाकाल बनकर दुष्टों का संहार करने वाले बन जाओ। शिकारी जिस प्रकार शिकार को दौड़ा-दौड़ाकर मारता है, उसी प्रकार आप दुष्टों का संहार करो। आप धर्म के द्रोही और प्रजा को पीड़ा देने वालों का प्रभु संहार करो। ऐसा शंख फूँको कि दुष्टों के विध्वंस से धरा में हा-हाकार मच जाए और निराशा के बादल छँट जाएँ। दुष्ट सब कट जाए और सभी अत्याचारी मिट जाएँ। आपकी विजय पताका के झंडे गड़ें, विजय के बाजे बजें और चारों ओर मंगलाचार हो। गाँवों के भी सभी नर-नारी मिलकर आपके गुणों का गुणगान करें। सातों द्वीपों और नव खण्डों में कल्कि भगवान

के नाम का उजाला दमकने लगे। हे अखंड भूमण्डल के राजा, हे निष्कलंक संकटहारी हम आपकी शरण में आए हैं, हमने आपके चरणों का सहारा ले लिया है। आप हमारे चित्त में वास करो। भक्तों के आश्रय, शरणागत वत्सल प्रभु कल्कि! आप हमारे सिर पर अभयदान का हाथ रखें। हम सब कल्कि मंडल आपकी शरण हैं और आपके दरबारी बनकर खड़े हैं। हे पृथ्वी मण्डल के सरताज, भक्तों की लाज रखने वाले श्री कल्कि महाराज हमारी पुकार सुन लीजिए।

28. भज ले रे मन धर्म सनातन के स्वामी

भज ले रे मन धर्म सनातन के स्वामी कल्कि भगवान
भजन करे से श्री कल्कि का जीते जी मिले पद निर्वान
सत्य सनातन धर्म के स्वामी सत्य श्री कल्कि भगवान
करम वचन मन को सुलझाकर कल्कि में ले आ ईमान
कल्कि नाम में मन को रमा ले पावेगा आनंद महान
भूमि भार उतारेंगे हरि चहुँ दिशि मचे घोर घमसान
करनी के फल पाकर पापी हो जावेंगे लोप समान
दिगंत व्यापी धुआँ धार में नहिं सूझेगा अपन विरान
कल्कि नाम की ज्वालाओं ने घेरा होगा सब चौगान
म्लेच्छ वंश विध्वंसक कल्कि काढ़ेंगे कलियुग के प्राण
ध्यान धरेंगे जो चरणों का उनका होवेगा कल्याण
धर्म की धाक जमे धरती पर रहेंगे भक्त-भक्ति-भगवान
ब्रह्म रूप सृष्टि होवेगी कल्कि नाम में ब्रह्म का भान
जगमग-जगमग विश्व करेगा, ऐसी है कल्कि की शान
आँखों में दिल में बैठा लें ये होंगे मन के अरमान
फंद कटेंगे पुण्य भूमि के होगा भारत का उत्थान
नतमस्तक बद्धांजलि होंगे ऋषि, मुनि और संत सुजान

देव, यक्ष, गंधर्व, अप्सरा सब मिलकर तोड़ेंगे तान
दशों-दिशाओं में गूँजेगा श्री कल्कि के यश का गान
घुड़सवार कल्कि तरवरिया को मानेगा सकल जहान
लोकपाल दश झुक-झुक करके करेंगे आदर और सम्मान
ऋद्धि-सिद्धियाँ नृत्य करेंगी कल्कि में होकर मस्तान
देववधू सुर से गावेंगी जय-जय सुर संतन के त्राण
गंगा-यमुना सारे तीरथ चार वेद दश अष्ट पुराण
मूक खड़े मन में खोजेंगे जिनकी महिमा की उपमान
जय-जय कारों की त्रिभुवन में घोर सुनाई पड़ेगी कान
सत्य श्री कल्कि नारायण का घट-घट में होगा स्थान
धर्म ध्वजा आकाश चढ़ेगी पाप का होगा नहीं निशान
कल्कि नाम का बजेगा धौसा कल्कि के ज़मीन-आसमान

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भगवान के भजन करने से ही आत्म-कल्याण होगा, अत: भगवत भजन करने के लिए कहा है—

हे मेरे मन! तू सनातन धर्म के स्वामी भगवान श्री कल्कि का भजन कर। उनका भजन करने से तुझे जीते जी निर्वाण पद प्राप्त हो जाएगा। हे मन, तू मन-वचन कर्म से कल्कि भगवान का आश्रय ग्रहण कर ले। उनमें ही तू अपने को लगा ले। उनमें मन को रमाने पर तुझे महान आनंद का अनुभव होगा। कल्कि भगवान असुरों को मारकर इस भूमि का भार हटाएंगे। चारों दिशाओं में पापियों को मारने के लिए भयंकर लड़ाई करके उनका संहार करेंगे। अपनी बुरी करनी का फल पाकर पापियों का इस धरा-धाम से लोप हो जाएगा। चारों ओर ऐसा घमासान मचेगा कि लोगों को अपना-पराया ही दिखाई नहीं देगा। सारे युद्ध क्षेत्र को कल्किनाम की ज्वालाओं ने चौतरफा से घेरा होगा। म्लेच्छवंश का नाश करने वाले कल्कि कलियुग के

प्राण निकालेंगे। केवल उन्हीं का कल्याण होगा, जो कल्कि भगवान के चरणों पर ध्यान लगाएँगे,अर्थात् उनकी शरण ग्रहण करेंगे। तब धरती पर धर्म की ऐसी धाक जमेगी कि केवल भक्त, भक्ति और भगवान शेष रहेंगे। सारी सृष्टि ब्रह्म रूप हो जाएगी और कल्कि नाम से ही ब्रह्म का ज्ञान होगा। कल्कि भगवान की ऐसी शान है कि उससे सारा विश्व जगमगाएगा। मन में यही अरमान होगा कि कल्कि जी के दिव्य रूप को आँखों में, फिर दिल में बैठा लें। कल्कि अवतार से इस पुण्य भूमि के सारे बंधन कट जाएँगे, भारत की उन्नति होगी। कल्कि जी के सम्मुख ऋषि, मुनि, ज्ञानी संत हाथ जोड़कर नतमस्तक हो जाएँगे। देव, यक्ष, गंधर्व और अप्सरा मिलकर कल्कि जी के गुणगान करेंगे। आपके यश के गीत दसों दिशाओं में गूँजेंगे। तलवारधारी अश्व पर चढ़े कल्कि जी को संपूर्ण विश्व मानेगा। आपको दसों दिशाओं के लोकपाल आदर और सम्मान के साथ शीश झुकाऐंगे। कल्कि के नाम पर मस्त होकर ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ नाँचेंगी। हे सुर संतों के रक्षक! देव, वधुएँ उच्च स्वर से आपका जय गान गायेंगी। गंगा-यमुना सारे तीर्थ, चार वेद, अठारह पुराण आपकी महिमा की उपमायें मन-ही-मन मूक होकर खोजेंगे। आपके जय-जयकारों की ध्वनि त्रिभुवन में सुनाई पड़ेगी। सत्य श्री कल्कि नारायण का हर घट में स्थान होगा। सब आपका ही नाम जपेंगे। धर्म की ध्वजा आकाश तक फहराएगी। पाप का कहीं भी नामोनिशान नहीं होगा। कल्कि भगवान के नाम के नगाड़े धरती से आकाश तक बजेंगे।

29. दानव दल के आसन डोले

दानव दल के आसन डोले, पड़े जो प्रबल प्रहार
कल्कि रूप धरें असुरारी, हो घोड़े सवार
हरि जब आए हरण भू-भार
आयत लोकातीत विलोचन, विकसित कमलाकार

उर भुज दंड विशाल मनोहर सुषमा के आगार
हरि जब आए हरण भू-भार
शीश मुकुट मस्तक पर चंदन गल मुक्ता मणि हार
कानन कुंडल कटि कंधोनी परि कर कसे कटार
हरि जब आए हरण भू-भार
यमुन भंवर गंभीर नाभि पर सुर नर मुनि बलिहार
ज्योर्तिमय जगमग मुख मंडल चंद्र वरण सुकुमार
हरि जब आए हरण भू-भार
कर कराल करवाल विराजत अद्‌भुत जाकी मार
दहक उठी दश दिशा दहनहित दुष्टन को संसार
हरि जब आए हरण भू-भार
सहस्त्र श्रवण दे ध्यान शेष शाई ने सुनी गुहार
वाहन भूषण शक्ति शस्त्र सज्जित ऐश्वर्याधार
हरि जब आए हरण भू-भार
अश्व सहस्र सजे स्यंदन में सादी असंख्य सवार
सहस्त्र खंब में रत्न जड़ित रथ पर जिनका संचार
हरि जब आए हरण भू-भार
शक्र कोटि शत सरिस समुन्नत विलसत विभव विहार
सुर संभ्रांत भए सुमनन की करन लगे आसार
हरि जब आए हरण भू-भार
हुआ सनातन महाविष्णु का दृढ़ संकल्प पसार
हनुमान ने सुनी नभगिरा बज्र ध्वजा लई धार
हरि जब आए हरण भू-भार
स्वप्न बँटे संदेश बँटे और अनुभव बँटे अपार
भक्त भूमि भूसुर सुरभि सुर संतन के सुखसार
हरि जब आए हरण भू-भार
बालमुकुन्द गुरु गदा उठाए कहत प्रचार प्रचार

क्षीर समुद्र निवासी कल्कि ने लीन्हा अवतार
हरि जी आए हरण भू-भार
सावधान हो धर्म-कर्म पे अपनी करो संभार
अंचल गहे रहो कल्कि का, अब होगा संहार
हरि जी आए हरण भू-भार

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि जी के रूप, वेश-भूषा और उनका प्रभाव दर्शाते हुए कहा है—

कल्कि के प्रबल प्रहारों से दानवों के आसन डोलने लगे हैं। भगवान कल्कि ने असुरों के शत्रु का रूप धारण किया है। वे घोड़े पर सवार होकर धरती के भार (असुरों को मारकर) को दूर करने के लिए आए हैं। उनकी अलौकिक बड़ी-बड़ी आँखें हैं, जो खिले हुए कमल के समान सुशोभित हो रही हैं। उनकी चौड़ी छाती, विशाल भुजदण्ड, मन को हर लेने वाली है। कल्कि जी सौंदर्य के खजाने हैं। उनके सिर पर मुकुट, माथे पर चंदन, गले में मोती-मणि का हार, कानों में कुण्डल, कमर में फेंटा व कटार लगी है। आपकी नाभि पर पड़ा यमुना सा भंवर पर देव, मनुष्य, मुनिगण, बलिहारी है। आपका मुखमण्डल चंद्रमा के रंग (सफ़ेद) जैसा सुकुमार दिव्य ज्योति से जगमगा रहा है। आपके हाथ में भयंकर तलवार है जिसकी अद्‌भुत मारने की शक्ति है। दुष्टों के संसार को जलाने के लिए आपने दसों दिशाऐं दहका दी हैं। शेषनाग की शय्या पर सोने वाले प्रभु ने अपने असंख्य कानों से ध्यान देकर हमारी पुकार सुनी है। हे महान ऐश्वर्य के स्वामी, आप अश्व, भूषणों शक्ति और तलवार से सुशोभित हैं। आपके रथ में हजार अश्व जुते हैं, जिसमें असंख्य सवार विराजमान हैं। जिस रथ पर आप विराजते हैं उसमें रत्नों से जड़े हजार खम्ब हैं जो सैकड़ों-करोड़ों इंद्र के समान उन्नत वैभव

वाला सुशोभित हो रहा है। देवता खुश होकर उस पर पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं। आदि नारायण भगवान विष्णु का दृढ़ संकल्प का प्रकटीकरण हुआ है। हनुमान जी ने जब आकाशवाणी सुनी तो उन्होंने वज्र ध्वजा को धारण कर लिया। उनके इस स्वप्न की सर्वत्र चर्चा होने लगी। संदेश बँटने लगे और अनगिनत अनुभव होने लगे कि भक्त, भूमि, ब्राह्मण, गाय, देवता, संतों को सुख देने वाले श्री हरि ने कल्कि रूप धर लिया है। यह जानकर सब सुखी होने लगे। गुरु बालमुकुन्द जी गदा उठाकर चारों ओर इसका प्रचार करने लगे कि क्षीर सागर निवासी श्री कल्कि ने अवतार ले लिया है। भगवान भू-भार हरने के लिए आए हैं। उन्होंने सबसे कहा कि हरि जी धरती का भार हटाने, दुष्टों का संहार करने के लिए आए हैं। अब संहार होगा। लूटपाट, मारकाट, अशांति, आतंकवाद जैसा कोहराम चारों ओर मचेगा। अत: तुम सभी सावधान होकर धर्म-कर्म पर अपनी सँभाल करो और कल्कि भगवान का आँचल पकड़े रहो।

30. देखा-देखा इस कल्कि नाम का नया निराला ढंग

देखा-देखा इस कल्कि नाम का नया निराला ढंग

कल्कि नाम रस जो कोई पीवे हो जावे बजरंग
कल्कि नाम है कलियुगियन के गल फाँसी का फंद

सुर संतन को धीर बँधावें दैवी शक्ति आय
असुरन का संगठन तोड़ के करे रंग में भंग

श्री कल्कि महाराज की महिमा मन में गई समाय
रूप छटा जब नाम से प्रगटी माया भई बदरंग

मन आसन कल्कि का बनाया बरबस दिया झुकाय
कल्कि नाम कृपाकारी ने भूना कलि भुजंग

कल्कि नाम से बालमुकुन्द लिए कल्कि ने अपनाय
कल्कि के अवतार को सुनकर रह गई दुनिया दंग

असुर संहारन हारे कल्कि का पाकर आदेश
कल्कि मंडल में कल्कि का बाजन लगा मृदंग

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि के नाम की विशेषता का वर्णन करते हुए कहा है—

भगवान श्री कल्कि के नाम का नया अनोखा ढंग देखा। जो भी मनुष्य कल्कि नाम के रस को पीता है, उसमें हनुमान जी जैसी शक्ति आ जाती है। कल्कि नाम कलियुग के पापियों के गले की फाँसी का फँदा है। इस नाम के प्रभाव से दैवी शक्तियाँ आती हैं। कल्कि नाम जपने के प्रभाव से दैवी शक्तियाँ समय-समय पर भक्तों और देवताओं को आकर हिम्मत देती हैं। कल्कि नाम असुरों के संगठन को तोड़कर उनके रंग में भंग करता है। इससे श्री कल्कि महाराज की महिमा हमारे मन में समा गई है। भगवान कल्कि के नाम जाप से प्रभु ने जो मनमोहक स्वरूप दिखाया उसको भक्तों ने अपने मन को आसन बना कर उस पर बैठा कर अपना मस्तक उस स्वरूप के आगे झुका दिया। इसके होने से माया घबरा कर अलग हटकर खड़ी हो गई। कल्कि भगवान के नाम जाप-सत्संग, हवन, संकीर्तन से श्री कल्कि कलियुग की शक्ति नष्ट कर देंगे।

31. प्रगटे हैं भगवान चेतो रे भाई

प्रगटे हैं भगवान चेतो रे भाई
असुरन की माया से जब सब सृष्टि भई बौराई
लहर झकोला विष के व्यापे पार न एक बसाई
चेतो रे···

बालमुकुन्द गुरु सुरत सँभारी कल्कि शरण अपनाई
भार उतारन कल्कि आए सुर पुर बजत बधाई
चेतो रे···
घबराए शरणागत जन को धीरज दियो बँधाई
फाटक खोल दिए अनुभव के संशय दिये मिटाई
चेतो रे···
कल्कि नाम में संभल नगरी याही में क्षीर समंदर
अरणि काष्ठ सम रगड़ से कल्कि प्रगटे बाहर अंदर
चेतो रे···
कल्कि रटे भाषत कल्कि की महिमा बड़ी सुहाई
पाप नसत हैं कोटि जनम के कलियुगी कटत कसाई
चेतो रे···
कपट कुटिलता छोड़ के सीधे संत बनो सुखदाई
शासन विकट कठिन कल्कि को पड़ी है बड़ी कठिनाई
चेतो रे···
सत्य नम्रता गहे सरल बन नाम जपो मेरे भाई
परदा काट के कल्कि प्रगटें बुद्धि मिटे हरजाई
चेतो रे···
'राम कृष्ण' पे दया करी श्री सत गुरु भये सहाई
भटकत देख अधम मारग में कर गहि लियो बचाई
चेतो रे···

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि के अवतार लेने की बात कहते हुए कहा गया है कि सब सावधान हो जाएँ। इस धराधाम में श्री हरि कल्कि के रूप में प्रकट हुए हैं:-

भगवान श्री कल्कि ने अवतार लिया है, आप सब सम्भल जाओ।

संपूर्ण सृष्टि असुरों-राक्षसों की माया से व्याप्त हो गई है। विष के झकोलों की लहरें उठ-उठ कर सर्वत्र ज़हर फैला रही हैं। सब बेबस हो रहे हैं। गुरु बालमुकुन्द जी ने हमारा ख्याल रखकर हमें कल्कि जी की शरण दिलवाई। उन्होंने बताया कि कल्कि भगवान ने इस धरती का भार उतारने के लिए अवतार ले लिया है। देवलोक में बधाइयाँ बजने लगी हैं, अब होशियार हो जाओ। जिन घबराए भक्तों ने उनकी शरण ले ली है, कल्कि भगवान ने उन्हें अपने अनुभव दे-देकर रहस्यमयी परदे खोलकर संशय दूर किये हैं। उन्होंने प्रकट होकर घबराए हुए लोगों को धीरज बँधाया है अर्थात स्वप्नानुभवों द्वारा उनको धीरज दे रहे हैं और सारे संशय मिटा रहे हैं। कल्कि नाम में आज संभल नगरी समाई है और यही क्षीर सागर बन गया है। जिस प्रकार अरणि की लकड़ी को रगड़कर अग्नि प्रकट होती है, उसी प्रकार कल्कि नाम, जाप, भजन से भगवान श्री कल्कि हमारे मन के अंदर बाहर दोनों जगह दिख रहे हैं। कल्कि की महिमा बहुत सुंदर है। उनकी महिमा का गुणगान करने से करोड़ों जन्मों के पाप कट जाते हैं और कलियुगी राक्षस आपस में कटकर मरते हैं। भक्तों के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। अत: सज्जनों तुम कपट कुटिलता को छोड़कर सीधे संत बनकर सबको सुख दो। (भारत छोड़ते समय अंग्रेजों द्वारा धर्म की तबाही खत्म नहीं हुई थी कि अब के काले अंग्रेजों द्वारा धर्म निरपेक्षता, महंगाई व नए-नए कानूनों द्वारा धर्म व धर्म पर चलने वालों पर ऐसी मार पड़ रही है) कि भगवान श्री कल्कि को समय-समय पर अनुभव दे-देकर सम्भालना पड़ रहा है। इसलिये भक्तों सत्य, नम्रता की राह अपनाओ। सरल स्वभाव बनकर कल्कि जी के नाम का जाप करो। कल्कि जी माया का पर्दा काटकर प्रकट हुए हैं। उनके प्रभाव से हरजाई (बेवफ़ा) बुद्धि मिटेगी। रामकृष्ण परमहंस पर श्री कल्कि जी ने दया करी है, इसमें श्री हनुमान जी सहायक हुए हैं, जिन्होंने अधर्म के मार्ग में उन्हें जाता देखकर, उनका हाथ पकड़कर बचा लिया।

32. कल्कि प्यारे का जिसने किया ध्यान है

कल्कि प्यारे का जिसने किया ध्यान है
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है
क्षीर सागर निवासी महाराज का
उसने देखा है जलवा तखत ताज का
जिसने मन से किया उनका सम्मान है
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है
दिल खुशी से सरो चश्म जो झुक गया
उसके पापों का पर्दा तुरत फुक गया
उसके घट में प्रगट कल्कि भगवान हैं
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है
कल्कि संहार मूरत महा काल हैं
दुष्ट दल के दहन कारी विकराल हैं
उनके चरणों में जिसका बसा प्राण है
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है
नाम कल्कि है मन की कसौटी बना
नाम कल्कि का सुनकर जो मन में तना
बस समझ लो वह कोरा है नादान है
कल्कि मंडल के मन का तो उजियाला है
काले मन वालों का करता मुँह काला है
दंडधारी व दुर्जय प्रभावान है
पीत पट पहन तलवार कटि में कसे
कल्कि मंडल के मन में हैं कल्कि बसे
अब तो उनका हुक्म दीनो ईमान है
भाग्यशाली जगत में वह इन्सान है

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में बताया गया है कि जिसने भी कल्कि भगवान की शरण ली है, उसका लोक परलोक दोनो बन जाते हैं। इसी भाव का वर्णन करते हुए कहा है—

कल्कि प्यारे का जिस मनुष्य ने भी ध्यान किया है, वह इन्सान इस संसार में भाग्यशाली है। जो क्षीर सागर निवासी कल्कि नारायण का सम्मान करता है वह उनके तख्त ताज का जलवा देखता है। वह मनुष्य संसार में भाग्यशाली है। जिसका दिल खुशी से कल्कि जी के सम्मुख झुक जाता है, उसके पापों का पर्दा तुरंत जलकर खाक हो जाता है। उसके हृदय में भगवान कल्कि प्रकट हो जाते हैं। संसार में वह इन्सान भाग्यशाली है। कल्कि भगवान की सूरत संहारकारी महाकाल के समान है जो दुष्टों के दल को जलाने के लिए भयंकर काल है। ऐसे दुष्टों का संहार करने वाले कल्कि भगवान के चरणों में जिनके प्राण बसे हैं, वह इन्सान भाग्यशाली हैं। कल्कि भगवान के नाम को हे जिज्ञासुओं अपने मन को परखने के लिए कसौटी पर कस कर देख लो। कल्कि का नाम सुनकर जो इंसान मन में तना (अकड़ा) रहता है, अर्थात् अंहकार के कारण जो मन से कल्कि को समर्पित नहीं होता, तुम समझ लो, वह संसार में कोरा है नादान है। कल्कि नाम कल्कि मण्डल के लिये तो प्रकाश है ही, काले मन वालों का (छल कपटयुक्त मन वालों का) तो वह मुँह काला (बदनाम) कर देता है। वह दण्डधारी, दुर्जय और प्रभावान है। पीताम्बर पहने, तलवार कमर में बाँधे ऐसे श्री कल्कि 'भक्तों के मनमण्डल' में बसे हुए हैं। कल्कि की आज्ञा ही जिनका धर्म और ईमान है, वही इंसान इस जगत में भाग्यशाली है।

卐 卐

33. यम नगर के पंथ कल्कि नाम बिसारें

यम नगर के पंथी कल्कि नाम बिसारें
पन्ने उलट-उलट देखें, हरि महिमा नहीं विचारें
कल्कि नाम गहैं नहीं मन में, कागज़ में सिर मारें
पलड़ा डूब रहा अधर्म में तिसको नहीं निहारें
आँख मूँद बैठे गौवध से समय पे तन मन वारें
कल्कि से नहीं नेह लगावें, नहिं आशा को बाँधें
कलियुग की इस खड़ी भीत को कहो वह कैसे फाँदें
तरह-तरह के करें बहाने मौन ध्यान व्रत धारें
श्री कल्कि की ओर बढ़न को मन अपना नहिं मारें
गुरु बने कोई बरज रहे हैं, कोई चेला बन अटकें
कल्कि नाम से कलियुगिन के प्राण पखेरू सटकें
श्री कल्कि से अलग थलग रहि आन तान से मटकें
कल्कि नाम की ध्वनि सुनें, तब भौं चढ़ाय के हटकें
'राम कृष्ण' ऐसे मन पापी राम कृष्ण मन खटकें
'राम कृष्ण' की आड़ बाँध के कल्कि नाम से भड़कें
हरि की माया बड़ी प्रबल युग काट-छाँट कर डारें
बालमुकुन्द लखाये जिमि नर हरि खम्बा को फारें

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में ऐसे लोगों के आडम्बर को दिखाया है, जो कोरा पुस्तकीय ज्ञान ही रखते हैं। मन से भगवान की भक्ति नहीं करते, जो कल्कि का नाम नहीं जपते, उन्हीं को सावधान करते हुए कहा है—

यमनगर के मुसाफिर कल्कि नाम को भूल रहे हैं। श्री कल्कि भगवान पर लीलाओं की लिखी पुस्तकों (धार्मिक ग्रंथों) के पन्ने तो उलटते हैं, परंतु भगवान श्री कल्कि जी की महिमा पर विचार नहीं करते। मन में श्री कल्कि नाम का स्मरण तो करते नहीं, केवल पुस्तकीय ज्ञान की चर्चा में लगे रहते हैं। उनकी जीवन नैया का पलड़ा जो अधर्म में डूब रहा है, उसकी ओर तो उनकी दृष्टि ही नहीं जाती। गायों का वध हो रहा है। **(स्वतंत्रता के बाद 50 करोड़ गायें हिन्दू राज्य होते हुए भी, काट दी गईं, काटकर खा ली गईं,खिला दी गईं, इस ओर से आँखें मूँद रखी हैं**)। समय की दुहाई तो देते हैं कि घोर कलियुग है। हां भई कलियुग में तो ऐसा होना ही है आदि। कल्कि भगवान से प्रेम नहीं करते और न ही यह आशा रखते हैं कि कल्कि जी अवतार लेकर हमारी रक्षा करेंगे। कल्कि जी के नाम के सहारे के बिना कलियुग के इस भयंकर डर से ये लोग कैसे छुटकारा पा सकते हैं? तरह-तरह के बहाने करते हैं, कभी मौन, ध्यान, व्रत लेकर सोचते है कि इससे हमारा कल्याण हो जाएगा। परंतु कल्कि भगवान की ओर अपना मन नहीं लगाते, अर्थात् उनका भजन नहीं करते। कलियुग में कोई बगुला भगत गुरु बनकर अपने चेलों के कान में मंत्र फूक कर कल्कि की ओर बढ़ने से मना कर रहा है तो कुछ चेले गुरु पर ही अटके हैं। ऐसे कलियुगी गुरु-चेले दोनों ही कल्कि के नाम से दूर भागते हैं। श्री कल्कि से किनारा करके, बनावटी अंहकार पर मुग्ध हो रहे हैं। कल्कि नाम की ध्वनि सुनने पर चिढ़कर दूर भागते हैं। ऐसे पापी 'राम कृष्ण' का नाम लेकर सरल लोगों को अपनी तरफ आकर्षित तो करते हैं परन्तु पूजवाना अपने को चाहते हैं। भगवान की माया बड़ी प्रबल है, गुरु बालमुकुन्द जी ने बताया कि कलियुग की आयु को काटने के लिए ठीक वैसे ही भगवान श्री कल्कि जी प्रकट होंगे, जैसे खम्बा फाड़कर नृसिंह भगवान प्रकट हुए थे।

34. आवेंगे सही प्रगटेंगे सही

आवेंगे सही प्रगटेंगे सही कल्कि भगवान खड़गधारी
शोभा से जगमग जग होता है जिनकी तड़क-भड़क भारी
हैं दुष्ट दहनकारी कल्कि सुरभि सुर संतन सुखकारी
वो धर्म-वर्म हैं रमापति हैं घोड़ा जिनकी असवारी
अनुभव में खड़ग सँभाला है उस तेज की प्रगटी ज्वाला है
जो शिव मन बसने वाला है जिसकी लीला है नई न्यारी
होती है सफल जहाँ शुद्ध मति जिससे मिल बनती सुरति सती
भक्ति होती नित्या प्रकृति मुक्ति जिसपर है बलिहारी
कल्कि की शक्ति अजय बड़ी जयमाल लिए है विजय खड़ी
यह गूँज रही आनंद घड़ी जय-जय सुर संत अभयकारी
भूमि का भार हटेगा अब असुरों का जाल कटेगा अब
आशा से जिनकी उमंग रही आनंद भरी पृथ्वी प्यारी
कल्कि के अनुभव आय रहे भक्ति की ज्योति जगाय रहे
भक्तन मन हो भरपाय रहे प्रगटेंगे शीघ्र कृपा कारी
गुरु बालमुकुन्द चढ़ें मन पे नहीं रहा नेह तन पे धन पे
कल्कि ने करी कृपा जिन पे दरशाई रूप की उजियारी

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में बताया है कि कल्कि भगवान के अनुभव उनके भक्तों को हो रहे हैं। अत: वह अब जल्दी ही अवतार लेगें, इस बात पर विश्वास जताते हुए कहा है—

खड्गधारी भगवान कल्कि अब अवश्य ही आएँगे, वे अवश्य प्रकट होंगे। उनकी शोभा से सारा संसार जगमगाएगा। उनकी तड़क-भड़क बहुत भारी होगी। कल्कि भगवान दुष्टों को जलाने वाले हैं। वह गाऐं, देवता और संतों के लिए सुखकारी हैं। कल्कि जी धर्म की ढाल हैं, घोड़ा उनकी सवारी है। उन्होंने अनुभव में हाथ में तलवार

सँभाली है। अनुभव में ही दिव्य तेज के पुंज की ज्वाला प्रकट हुई है। इसका ध्यान भगवान शंकर अपने मन में बसाए हुए हैं। कल्कि जी की लीला नई और अनोखी है। यहाँ बुद्धि शुद्ध व सफल होती है, इसके होने से जीव सत्यता में रमता है। भक्ति में मन प्रतिपल स्थिर रहता है, जिसपर मुक्ति बलिहारी जाती है। भगवान कल्कि की शक्ति बड़ी अजेय है। आपके लिये विजय सदैव जयमाल लिए हुए खड़ी रहती है। हे सुर-संतों को अभय देने वाले इस आनंद की घड़ी में यही गूंज सुनाई पड़ रही है कि आपकी जय जयकार हो। अब भूमि का भार हटेगा और असुरों का जाल इस धरती से कटेगा। कल्कि भगवान के आने की आशा से पृथ्वी आनंद से भर गई है। कल्कि भगवान के अनुभव उन भक्तों को आ रहे हैं जो अपने मन में कल्कि जी की भक्ति की ज्योति जगा रहे हैं। कृपा करने वाले प्रभु श्री कल्कि शीघ्र ही प्रकट होंगे, ऐसा भक्तों के मन में दृढ़ विश्वास है। गुरु बालमुकुन्द जी के मन में जब से श्री कल्कि बसे हैं, तब से उन्हें तन-धन से उन्हें कोई लगाव नहीं रहा। कल्कि जी ने जिन पर कृपा की है, उनको अपने रूप की उजियारी के दर्शन दिए हैं।

35. जय बोल रहे-जय बोल रहे

जय बोल रहे-जय बोल रहे, सब कल्कि की जय बोल रहे
दुखियारे आफत के मारे सब सुर-नर-मुनि जय बोल रहे

हैं धर्म कसौटी काँटे में, होंगे इन्साफ सपाटे में
गाफिल मत रहना घाटे में, कल्कि जी कर में तोल रहे

भूकंप-सा जग में छाया है, कल्कि की फैली माया है
अब समय सत्य का आया है, असुरन के आसन डोल रहे

कल्कि के झंडे फहर रहे, संतन मन मानस लहर रहे
हत भागे हठ में ठहर रहे जो घट में नहीं टटोल रहे

दुनिया वहशत की मारी है, ईश्वर से विमुख गँवारी है
करनी की शीश सवारी है, जिनके मन रेता रोल रहे

यह काल चक्र की घानी है, चहुँ ओरी मौत निशानी है
कल्कि के चरण लासानी है, जो अमर द्वारे खोल रहे

कल्कि में जो मन सानेंगे, कल्कि की महिमा जानेंगे
गुरु बालमुकुन्द की मानेंगे, जो अमृतरस को घोल रहे

कल्कि मंडल ने ठानी है, कल्कि की महिमा गानी है
नहीं चलनी अब मनमानी है, श्री कल्कि के बज ढोल रहे।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि के प्रभाव का वर्णन करते हुए कहा है—

चारों ओर दुखी और परेशान सभी सुर-नर-मुनि भगवान श्री कल्कि का जयकारा लगा रहे हैं। इस समय धर्म मुसीबत में है। भगवान श्री कल्कि के आने पर इंसाफ़ होगा। अत: सावधान हो कर लापरवाही, आलस्य में रहकर घाटे में मत जाना, अर्थात् साथियों नहीं सँभलोगे तो नुकसान उठाना पडेगा।

कल्कि भगवान से कुछ नहीं छिपा। वह सब देख रहे हैं। संसार में भूकंप-सा छाया हुआ है, यह कल्कि की फैली हुई माया ही है, अब सतयुग का समय आने वाला है। इससे असुरों के आसन डगमगा रहे हैं, अर्थात उन्हें रास्ता नहीं सूझ रहा कि अब यह क्या हो रहा है ? चारों ओर कल्कि की महिमा के झंडे फहर रहे हैं। संतों के मन रूपी सागर में खुशी के हिलोरे लहर रहे हैं। जिसके भाग्य में कल्कि जी का सुख नहीं है ऐसे दुर्भागी इंसान अपनी ज़िद की वजह से आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। वह अपने भीतर झाँकने की जरा भी कोशिश नहीं कर रहे हैं, (अर्थात् मन की आँखे बिलकुल बंद किए

हैं), इसलिये कल्कि जी की महिमा का प्रभाव उन्हें अनुभव में भी सुलभ नहीं है। दुनिया अज्ञानी होकर भगवान से विमुख हो गई है। इसलिये सब में भय फैल गया है। आज का मनुष्य व्यर्थ के पाप कार्यों में डूब कर सिर पर पाप की गठरी का बोझा ढो रहा है। कालचक्र ऐसा घूम रहा है, जिसमें पिसकर चारों ओर मनुष्य को मौत नज़र आ रही है। जो व्यक्ति कल्कि के चरणों का आश्रय ले रहा है, वह अपने लिए अमरता का द्वार खोल रहा है। कल्कि के ध्यान में जो मन को डुबाएँगे वे ही कल्कि की महिमा को जान पाएँगे। गुरु बालमुकुन्द जी (हनुमान जी के आवेशावतार) पर विश्वास करके उनकी बात मानेंगे जो भक्तों के मन में अमृत का रस घोल रहे हैं वह भक्त अवश्य कल्कि की कृपा प्राप्त करेंगे। अब मनमानी नहीं चलनी है। कल्कि मंडल ने ठान ली है कि कल्कि जी की महिमा ही गानी है। श्री कल्कि की महिमा के ढोल बज रहे हैं।

36. बोलो जय-जय-जय श्री कल्कि पिता

बोलो जय-जय-जय श्री कल्कि पिता,
बोलो जय-जय-जय कल्कि माता

कल्कि-कल्कि तुम कहा करो, कल्कि के भजन में रहा करो
तुम्हें जीवन मुक्त बनावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय···

श्री कल्कि ने अवतार लिया, दे अनुभव हमें उबार लिया
वह घोड़े चढ़कर आवेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय···

दुष्टों को मार खपावेंगे, अधर्म की खोज मिटावेंगे
चौगिरदा खड़ग बजावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय···

वह भक्तों को अपनावेंगे, वह ब्रह्म विभव बरसावेंगे
भारत का मान बढ़ावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय···
जो ध्याय रहे सो पाय रहे, मन का संदेह मिटाय रहे
सतयुग से जगत सजावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय···
गुरु बालमुकुन्द ने दया करी, कल्कि मंडल की नींव धरी
कह दिया क्लेश नशावेंगे, श्री कल्कि पिता कल्कि माता
बोलो जय···

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुदेव ने कहा कि श्री कल्कि, भक्तों के लिये मात-पिता के समान हितकारी हैं, उनकी जय-जयकार करें—

श्री कल्कि भगवान हमारे माता-पिता हैं, उनकी जय जयकार करो। तुम हर वक्त कल्कि को ही पुकारो और उन्हीं का गुणगान करो। कल्कि जी हमारे सच्चे माता-पिता हैं, वह तुम्हें कमल की फूल की तरह जीवन मुक्त बनाएँगे। कल्कि भगवान ने अपने अवतार के अनुभव देकर हमें परेशानियों, उलझनों से बचा लिया। हमारे सच्चे माता-पिता स्वरूप कल्कि जी घोड़े पर चढ़कर आएँगे और वह दुष्टों का संहार करेंगे। वह चारों तरफ़ अपनी खड्ग से दुष्टों को काटेंगे, अधर्म का नाश करेंगे। कल्कि भगवान भक्तों को अपनाऐंगे और उनकी रक्षा करेंगे। वह ब्रह्म के ऐश्वर्य की वर्षा कर के भारत का मान बढ़ाएँगे। जो भक्त उनका ध्यान कर रहे हैं, वे उनको पा रहे हैं। श्री कल्कि जी उनके मन के संदेह को मिटा रहे हैं। श्री कल्कि जी कलियुग का नाश करके जगत में सतयुग लाएँगे। गुरु बालमुकुन्द जी ने हम भक्तों पर दया करके, कल्कि मडल की नींव रखी (स्थापना की) और बता दिया कि भगवान श्री कल्कि समस्त दुख क्लेश को नष्ट कर देंगे। ऐसे माता-पिता स्वरूप कल्कि जी की जय हो।

37. विरही कह दो चाहे आनंदी

विरही कह दो चाहे आनंदी
दोनों ही अर्थ लग जाते हैं।
आनंद विरह का संगम है,
जब घट में आप समाते हैं,
अब क्यों हमको तरसाते हैं,
क्यों नहीं सामने आते हैं।
यह बीत रहे सूने बसंत,
यह जी में जलन लगाते हैं।
हम आँखें फाड़ निहार रहे,
नहीं चैन कहीं भी पाते हैं।
हम ही एक खाली बैठे हैं,
सब जने बसंत मनाते हैं।
प्यारे कल्कि तुम बिन बसंत,
यह हमको नहीं सुहाते हैं।
दुनिया दिखाव के यह उत्सव,
कब तलक मनाए जाते हैं।
प्यारे कल्कि-प्यारे कल्कि,
तुम बिन हम अधिक लजाते हैं।
मनता है तभी बसंत प्रभो,
जब आप सामने आते हैं।
आओ, बसंत स्वागत कर दें,
कल्कि के संग कब आओगे।
हम दुखिया दर्द लिए बैठे,
कह दो कल्कि जी आते हैं।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भगवान के दर्शनों की लालसा बढ़ने पर गुरुवर उनसे मिलने के लिए आतुर हैं और प्रभु से जल्दी प्रकट होने की प्रार्थना करते हुए लिखते हैं—

तुम हमें विरही या आनंदी जो चाहो कह दो, दोनों अर्थ लग जाते हैं। हम भगवान से दूर नहीं रह सकते, हमसे उनका वियोग असहय है। अत:भगवान को पाने का आनंद लेने के लिए हम आकुल को विरही कह दो या आनंदी कह दो। जब प्रभु हृदय में समाते है, तो आनंद और विरह एक हो जाते हैं। हे प्रभु! अब आप हमको क्यों तरसा रहे हैं, हमारे सम्मुख शीघ्र क्यों नहीं प्रकट हो जाते। तुम्हारे बिना हमारे जीवन का वसंत सूना ही बीत रहा है। व्यर्थ का जीवन बीतता देखकर हमारे मन में विरहाग्नि जल रही है। हम आँखें फाड़कर बड़ी बेसब्री से तुम्हारी बाट देख रहे हैं। हम तुम्हारे बिना कहीं भी चैन नहीं पा रहे हैं। तुम्हारे बिना हम अकेले हैं। हम व्यर्थ जीवन बिता रहे हैं। जबकि सब लोग वसंत की बहार मना रहे हैं। हे प्यारे कल्कि! तुम्हारे बिना वसंत भी हमको नहीं सुहाता। दुनिया में ये दिखावे के उत्सव कोई कब तक मना सकता है? हे प्यारे कल्कि! हमें लज्जा आती है कि हम तुम्हारे बिना जी रहे हैं। सच्चा वसंत तो तभी मनता है, जब आप सामने आते हैं। तुम्हारे दर्शनों से ही आनंद आता है। हे वसंत हम तुम्हारे स्वागत के लिये तैयार हैं। जब बसंत तुम कल्कि के संग कब आओगे? हम दुख-दर्द से पीड़ित हैं। इसको दूर करने के लिए हे बसंत कल्कि जी को संग लाकर कह दो कि कल्कि जी पधार रहे हैं, हम तुम्हारे आभारी हैं।

卐 卐

38. कल्कि मन में जो निवास करें

कल्कि मन में जो निवास करें
तब होय बसंत दिगंतन में

कलि काट के कल्कि जो प्रकटें
आनन्द मनें सुर संतन में

दिग भा भासित हो हरि रंग में
भक्तन मन होऐं उमंगन में

कल्कि आवन की आस पड़ी
संजीवन सम मृत जीवन में

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि जी केआने की आशा से निष्प्राण प्राणों में संजीवनी रूपी अमृत भर गया है—

जब तुम्हारे मन में कल्कि निवास करेंगे, अर्थात् कल्कि के नाम का ही स्मरण करते रहेंगे तो तुम्हारे संपूर्ण विश्व में वसंत छा जाएगा, (सर्वत्र आनंद ही आनंद प्रतीत होगा)। कलियुग के पापों को काटकर कल्कि भगवान जब प्रकट होंगे तो सुर और संत आनंद मनाएँगे। संपूर्ण दिशाएँ कल्कि के रंग में रंगी हुई दिखेंगी। भक्तों के मन में उमंग छा जाएगी। कल्कि के आने की आशा से मृत जीवन में संजीवनी समान नए प्राण आ जाएंगे।

39. देखा-देखा इस कल्कि नाम

देखा-देखा इस कल्कि नाम का अद्‌भुत रूप अखंड

जिसकी अग्नि की लौ लपकी लोकन में गई छाय
जिसकी शक्ति से यह सारा दहल उठा ब्रह्माण्ड

'राम कृष्ण' की कीरत नए सिरे से गई हरियाय
धर्म उधारन कल्कि का जब प्रगटा तेज प्रचण्ड
सुर-नर-मुनि सब माथा टेकें आस रहे हर्षाए
मन में जो घबराए रहे थे असुरन देख उदण्ड
काल वरण कल्कि की नंगी चमक रही तलवार
मौत के मुँह में दुनिया बैठी तजे नहीं पाखण्ड
कल्कि ने अवतार लिया भज लो कल्कि मन लाय
बालमुकुन्द संदेशा लाए उभरा भारत खण्ड
देखा-देखा इस कल्कि नाम का अद्‌भुत रूप अखण्ड

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है—

इस कल्कि भगवान के नाम का अद्‌भुत अखण्ड रूप देखा, जिसकी अग्नि की प्रचंड रोशनी सारे लोकों में छा गई है। इस नाम की शक्ति से संपूर्ण ब्रह्माण्ड चमकने लगा है जिससे राक्षसी जगत घबरा उठा है। भगवान राम और कृष्ण की कीर्ति कल्कि के रूप में फैल रही है। धर्म के उद्धार के लिए भगवान श्री कल्कि का जब प्रचंड तेज प्रकट हुआ तो सुर-नर,-मुनि सभी कल्कि जी को शीश झुकाते हैं। उनके हृदय एक नई आशा की उमंग को लेकर हर्षित हो रहे हैं। देवता, संत, विप्र जो पहले उद्दण्ड राक्षसों व राक्षसी प्रवृति के लोगों को देखकर मन में घबरा रहे थे, अब वह कल्कि जी की काल स्वरूप नंगी चमकती तलवार को देखकर हर्षित हो रहे हैं। आज सारी दुनिया मौत के मुँह में बैठी है, फिर भी पाखण्ड नहीं छोड़ रही है। गुरु बालमुकुन्द जी संदेशा लाए हैं कि भारत भूमि का उद्धार करने के लिए कल्कि भगवान ने अवतार ले लिया है। अब मन लगाकर कल्कि जी का भजन कर लो। इससे तुम भी कल्कि जी के अद्‌भुत अखण्ड रूप के दर्शन करोगे!

40. हमारे प्रभु कल्कि परम उदार

हमारे प्रभु कल्कि परम उदार
रूप के सागर सब गुण आगर करुणा के पारावार
प्रेम के ग्राहक प्रेम शिरोमणि प्रेम के परखनहार
हमारे प्रभू...
मृतक जिआवन, बिछड़े मिलावन अमिय पियावनहार
सब समरथ संपन्न अधिश्वर मन की जाननहार
हमारे प्रभू...
भव भय भंजन, जन-मन रंजन, नाशन म्लेच्छ अपार
अजर अमर अविनाशी सखा, संबंध निभावन हार
हमारे प्रभू...
अंचल से पीतांबर बाँधो, पहुँचा पकड़न हार
धड़क रही दिन-रैन धुकधुकी, तुम बिन प्राणाधार
हमारे प्रभू...
बड़ी बीत रही बेर बिहारी, बेड़ा करो अब पार
आओ वेग कमल दल लोचन ले कर में तलवार
हमारे प्रभू...
बालमुकुन्द जी के शरणागत की साख जमावन हार
मन में बसी माधुरी मूरति अगुण सगुण साकार
हमारे प्रभू...

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में भगवान कल्कि से प्रकट होने का आग्रह किया है और उनके स्वभाव का गुणगान करते हुए कहा है—

हमारे प्रभु भगवान श्री कल्कि परम उदार हैं। श्री कल्कि रूप के सागर सभी गुणों के खज़ाने, करुणा के समुद्र और प्रेम के ग्राहक हैं। वह प्रेम में शिरोमणि हैं, सच्चे प्रेम के पारखी हैं। मरे हुओं को ज़िंदा करने वाले हैं (जैसे सांदीपन सुत को लाए)। वह बिछुड़ों को

मिलाने वाले हैं। वह अमृत पिलाने वाले हैं। कल्कि जी सभी प्रकार से समर्थ, संपन्न परमेश्वर, अंतर्यामी हैं। कल्कि जी संसार के भय को मिटाने वाले, लोगों के मन को आनंद देने वाले, म्लेच्छों का नाश करने वाले, हमारे अजर, अमर, अविनाशी मित्र, संबंध निभाने वाले हैं। (जिस प्रकार शादी के मंडप में लड़के के (पति) पटके से लड़की (पत्नी) का आंचल बाँधा जाता है और पति जीवन पर्यन्त उसे निभाते हुए पत्नी की रक्षा करता है) वैसे ही हे कल्कि जी आप हमारे अंचलों से पीताम्बर बाँधकर जीवन पर्यन्त अपने में लगाए रखो। हे प्राणाधार तुम्हारे बिना रात-दिन हमारा दिल घबराता रहता है। हे स्वछन्द विचरण करने वाले नारायण! बहुत देर हो रही है, अब तो हमारा इस माया से बेड़ा पार लगाकर अपने रंग में रंगों। हे कमलदल लोचन! हाथ में तलवार लेकर जल्दी आओ। बालमुकुन्द जी के शरणागत की साख जमाने वाले आप परम् उदार हैं। आपने अपनी सगुण साकार माधुरी मूरति हमारे मन में बसा दी है।

41. मोतियन के हार से फूलन के शृंगार से

मोतियन के हार से फूलन के शृंगार से
मुकुट की बहार से, जग जगमग-जगमग करत है
हीरन की किरन मुकुट भीतर से झलक रही
तेग की चमक मानो बिजली-सी चमक रही
क्रीट की छटा चंद्र चाँदनी-सी छटक रही
मुख को प्रकाश कोटि भानु अनुहरत है
चंदन विशाल माथे, मुख है कमाल भरो
रूप को जादू पाप भक्तन को हरत है
चौड़ी-सी छाती विशाल भुज दंड जिनके
कमल नयन प्याला से मुख पे झल झलत हैं

पतली-सी कमर कामदेव की छवि मात करत
मुरका खाय जात जब झूम के चलत हैं
घोड़ा पे सवार तरवार पैनी हाथ धरे
कोप गंभीर भरे ओठ फरफरत हैं
कौन हैं ये काल कलि काल के कराल कल्कि
माया से आज जिनकी विश्व डग मगत है
कलियुग के मोहरा घबराय थर-थर काँप रहे
बचिबे की राह नहीं सूझत है झाँक रहे
मौत दीख रही पाँव आगू नहीं धरत है
ऊपर चढ़ेन को नीचे गिराय रहे
नीचे पड़ेन को ऊपर चढ़ाय रहे
बंदी में पड़े निज जनन को छुड़ाय रहे
कब्ज़ा जमाय रहे अपनी दखल करत हैं
बैरी प्रचण्ड बल-छल करत नाहि लजत
अपनी-सी कर हार झक मार दाँत किर्रत हैं
दुनिया या लीला को अचरज निहार रही
पार नहीं पावत है मन-ही-मन हार रही
कह रही माया ये ईश्वर की फिरत है
खलन को संगठन लातन से चूर कियो
मान धूर-धूर कियो साख वा की कीच माटी नज़र परत है
एक-से-एक को शंका समाय रही
करनी ही उनकी मानो उन ही को खाय रही
काल की आग मानो चहुँ दिश में बरत है
कल्कि के तेज ने सब देश दिशा घेर लिये

दुष्टन के असुरन के धुर्रा बखेर दिए
नाम से जिनके कलि कटक खर भरत हैं
भक्तन की टेर सुन जागे कल्कि भगवान
काल रूप धार आज विश्व में बिहरत हैं
नाम कल्कि की आग लपट में लपेटन
भार भू समेटन कष्ट गौअन के मेटन को असुरन में बरत है
भाग गौ विप्रन के प्राण भारतवर्ष के
भक्तन रखवार कर बूडे भए उभरत हैं
नाम कल्कि की कान दशों लोकपाल करत
या ही के सहारे नींव आगे को धरत हैं
'राम कृष्ण' नाम पे निसार रहियो कल्कि के
नाम कल्कि से प्राण असुरन के कढ़त हैं

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि भगवान के स्वरूप का वर्णन करते हुए उनके कार्यों का गुणगान किया है कि वे हाथ में तलवार लेकर असुरों का संहार करेंगे—

कमल नयन भगवान श्री कल्कि ने अपनी विशाल भुजा में म्लेच्छों, राक्षसों को मारने के लिये तलवार पकड़ी है। कल्कि जी के कानों में कुंडल, सिर पर मुकुट और गले में मोतियों की माला की चमक कामदेव व चंद्रमा की चमक को फीका कर रही है। कल्कि जी ने दुष्टों के जंगल को जलाने हेतु अपार तेज धारण किया है। दुष्टों के अत्याचार से पृथ्वी के प्राणी हाहाकार करके कल्कि जी को पुकार रहे हैं। आप घोड़े पर सवार होकर उन दुष्टों को करारी मार दे रहे हैं, जिन्होंने अपने दुष्कर्मों से धर्म का शासन हटाया है। भक्तों का भय शांत करने वाले, दुखों को समाप्त करने वाले हे नाथ

कल्कि! आपने अपने भयंकर क्रोध से कलिकुल (पाप का) का संहार किया है। जो लोग आपके चरण-कमलों की शरण से विमुख हैं वह इस संसार में इस प्रकार भटक रहे हैं कि उन्हें कोई रास्ता ही नज़र नहीं आ रहा, वे ही लोग दुखी होकर विश्व शांति की गुहार कर रहे हैं। हे गोपाल गौओं को सताने वालों से बदला लेने के लिए इन आततायियों को आप अपनी कठोर दृष्टि से निहार रहे हैं। हे कल्कि! आप पृथ्वी का भार हटाने के लिए कमर कसकर खड़े हो गए हैं। हे प्रभु देर न करें, आप शीघ्र आयें, समस्त लोको के भक्त आपका जयकारा लगा रहे हैं।

42. म्लेच्छ निधनकारी असुरारी अरविंद नयन

म्लेच्छ निधनकारी असुरारी अरविंद नयन
वक्ष भुज विशाल कर खड़ग सवारें हैं

कुंडल क्रीट मुकट मुक्तन गल माल डारे
दमक ने मयन मयंक मान मारे हैं

धारे अपार तेज दहन हेत दुष्टन वन
पृथ्वी के प्राणी सब 'हा हा' पुकारे हैं

घोड़ा पे सवार हो दे रहे करारी मार
उनपे जिन धरम के आसन बिगारे हैं

भक्तन भय शमन विषाद के दमन नाथ
कल्कि कराल कोप कलि कुल संहारे हैं

चरण सरोज की शरण विमुख भटक रहे
वे ही नर हाय विश्व शांति उचारे हैं

लेन को बदला गोपाल भैया गैया के
सृष्टि पे आज तीक्ष्ण दृष्टि से निहारे हैं

फेंटा कसि कमर भार भंजन भू खड़े भए
भक्त भू भुवनन के भनत जयकारे हैं

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में कल्कि भगवान के स्वरूप का वर्णन करते हुए उनके कार्यों का गुणगान किया है कि वे हाथ में तलवार लेकर असुरों का संहार करेंगे—

कमल नयन भगवान श्री कल्कि ने अपनी विशाल भुजा में म्लेच्छों, राक्षसों को मारने के लिये तलवार पकड़ी है। कल्कि जी के कानों में कुंडल, सिर पर मुकुट और गले में मोतियों की माला की चमक कामदेव व चंद्रमा की चमक को फीका कर रही है। कल्कि जी ने दुष्टों के जंगल को जलाने हेतु अपार तेज धारण किया है। दुष्टों के अत्याचार से पृथ्वी के प्राणी हाहाकार करके कल्कि जी को पुकार रहे हैं। आप घोड़े पर सवार होकर उन दुष्टों को करारी मार दे रहे हैं, जिन्होंने अपने दुष्कर्मों से धर्म का शासन हटाया है। भक्तों का भय शांत करने वाले, दुखों को समाप्त करने वाले हे नाथ कल्कि! आपने अपने भयंकर क्रोध से कलिकुल (पाप का) का संहार किया है। जो लोग आपके चरण-कमलों की शरण से विमुख हैं वह इस संसार में इस प्रकार भटक रहे हैं कि उन्हें कोई रास्ता ही नज़र नहीं आ रहा, वे ही लोग दुखी होकर विश्व शांति की गुहार कर रहे हैं। हे गोपाल गौओं को सताने वालों से बदला लेने के लिए इन आततताइयों को आप अपनी कठोर दृष्टि से निहार रहे हैं। हे कल्कि! आप पृथ्वी का भार हटाने के लिए कमर कसकर खड़े हो गए हैं। हे प्रभु देर न करें, आप शीघ्र आयें, समस्त लोको के भक्त आपका जयकारा लगा रहे हैं।

卐 卐

43. कलियुगिया तौक कटा करके

कलियुगिया तौक कटा करके,
छल फंद को मन से मिटा करके।
दुख द्वन्द का परदा हटा करके,
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।
श्री राम ही कल्कि कहावेंगे,
कल्कि नाम में कृष्ण समावेंगे।
कल्कि नाम से कल्कि जी आवेंगे,
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।
ऊँची धर्म ध्वजा फहरावेंगें,
भक्ति का मान बढ़ावेंगे।
वह खलन की खाल कढ़ावेंगे।
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।
कलियुग की छाया ढलक गई,
कल्कि की माया झलक गई,
अमृत भरी काया छलक गई,
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।
गुरु बालमुकुन्द दहाड़े हैं,
कल्कि के झंडे गाड़े हैं।
सुर पुर में बाजे नगाड़े हैं,
कल्कि नाम रटो, कल्कि नाम रटो।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुवर लिखते हैं कि इस कलिकाल में कल्कि रूप में राम और कृष्ण ही अवतार लेकरआ रहे हैं, उन्हीं का नाम तुम्हारे दुखों को दूर करेगा, इसी संबंध में कहते हैं—

कल्कि नाम के स्मरण व रटने से कलिकाल के कष्टों-पापों

से, मन को छल कपट के फंदों से व दु:ख दुविधा से छुटकारा मिलेगा। हर पल कल्कि के नाम का स्मरण और नाम रटो। त्रेतायुग के राम और द्वापर के कृष्ण कलिकाल में कल्कि नाम में ही समाऐं हैं। कलियुग में राम और कृष्ण ही कल्कि नाम से प्रकट होंगे। तुम हर पल उन्हीं का नाम रटते रहो। कल्कि भगवान ही धर्म की ऊँची ध्वजा फहराएँगे, भक्ति के महत्व को बढ़ाएँगे, दुष्टों की खाल खिंचवाएँगे (दंड देंगे), अत: कल्कि के नाम का ही सहारा लो, उन्हीं का नाम रटते रहो। कलियुग का अंत समीप आ गया है।उसकी विशाल काया ढल रही है। कल्कि की माया प्रकट होने से उनका अमृत भरा स्वरूप दिखने लगा है। तुम कल्कि के नाम को रटते रहो। गुरु बालमुकुन्द जी ने गर्जना करके चारों ओर कल्कि जी की जय-जयकार के झंडे गाड़ दिए हैं। देवलोक में कल्कि भगवान के प्रकट होने और उनका स्वागत करने के लिए नगाड़े बजने लगे हैं। हे भक्तों तुम कल्कि नाम को रटते रहो।

44. प्रगटो-प्रगटो, प्रगटो-प्रगटो

प्रगटो-प्रगटो, प्रगटो-प्रगटो,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।

अधरम का अँधेरा दूर करो,
सतयुग जग में भर पूर करो।
प्रकटो तब धीर बँधे मन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।

सुख सागर अब बँध तोड़ धरो,
दुख द्वन्द का कंठ मरोड़ धरो।
आनंद को भर दो भक्तन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।

जो प्रकाश करो प्रभु जी अपना,
कलियुग की माया हो सपना।
हम मस्त बनें कल्कि नाम धन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।

कहीं कृष्ण बने कहीं राम बने,
अबके कल्कि सुखधाम बने।
ध्वनि गूँज रही है लोकन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।

गुरु बालमुकुन्द के कानन में,
तुम गूँज रहे हो प्राणन में।
तन में मन के बसे प्रांगन में,
कल्कि जी-कल्कि जी, कल्कि जी-कल्कि जी।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुवर ने कल्कि जी से प्रकट होने का आग्रह करते हुए कहा है—

हे कल्कि जी! हम आपसे बार-बार आग्रह कर रहे हैं कि आप शीघ्र प्रकट हो जाओ। आप प्रकट होकर अधर्म के अँधेरे को दूर कीजिए और कलियुग को समाप्त करके संसार में सतयुग की स्थापना कीजिए। आप के प्रकट होने पर ही हमारे मन में धीरज बँधेगा। जगत से दुख रूपी सागर के बाँध तोड़कर सुख बहाओ। दुखों के द्वंद का गला मरोड़ डालो। अब तो कल्कि जी इस पृथ्वी को दुःख द्वंद (परेशानियों, क्लेशों, पापों) से मुक्त कर दो। हे कल्कि जी! भक्तों के मन में आनंद भर दो। हे प्रभु! जब आप अपना दिव्य प्रकाश जग में फैलाएँगे तो कलियुगी माया सपना मात्र रह जाएगी। हम सब भक्त कल्कि नाम धन पाकर मस्त हो जाऐंगे। आपने कभी

राम रूप, कभी कृष्ण रूप में अवतार लिया। अब की बार कल्कि नाम से भक्तों के सुखधाम बनकर प्रकट हो जाओ। कल्कि भगवान आपके नाम की ध्वनियाँ समस्त लोकों में गूँज रही हैं। गुरु बालमुकुन्द के आंगन और प्राणों में आपके नाम की ही ध्वनि की गूँज गूँज रही है। ऐसे ही हे श्री कल्कि जी आप हमारे तन-मन के आँगन में आन बसो।

45. आ गए आ गए आ गए

आ गए आ गए आ गए आ गए,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।

कलियुग का कलेजा फटन लगा,
घनघोर अँधेरा हटन लगा।
सूझन लगे साफ़ सफ़ा मन में,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।

रसना जब कल्कि रटन लगी,
शंका काई सी छटन लगी।
बस बसन लगे मन में तन में,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।

अनुभव से मिला उजाला है,
वह समय अब आने वाला है।
जब आग लगावेंगे दुष्टन में,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।

लीला पर लीला होवेगी,
इस जग के मल को धोवेगी।
हैं टिके हुए अपने प्रण में,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।

गुरु बालमुकुन्द का दिल भर गए,
माया के मान तभी मर गए।
आवन का वायदा जब कर गए,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
भक्ति वर्षा बन हरि आए,
संतन मन सागर भरि आए।
मौजे बन अंदर लहर रहे,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
आनंद समुद्र हिलोरेंगे,
अमृत के रस में बोरेंगे।
कर नज़र से अपनी मेहर रहे,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।
आशा ज्योति बन आई है,
सतगुरु ने स्वयं जगाई है।
जिन घट के भीतर ठहर रहे,
कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी कल्कि जी।

■ भावार्थ ■

प्रस्तुत पद में गुरुवर ने कल्कि जी के आने और उनके प्रभाव का वर्णन करते हुए लिखा है—

भगवान कल्कि महाराज का अवतार हो गया है। इस कारण से कलियुग का कलेजा फटने लगा है। कलियुग का जो घनघोर अँधेरा मन में था, वह अब कम होने लगा है। कल्कि जी स्पष्ट रूप से मन में दिखाई देने लगे हैं। जब जीभ से कल्कि के नाम की रटन लगने लगी, तब कल्कि नाम के प्रभाव से मन में जो शंकाएं घिरी थीं, वह काई की तरह छटने लगी। अब तो कल्कि जी ही मन और तन में बसने लगे हैं। 'अनुभव' से अब ऐसा उजाला दिखाई देने

लगा है, जिससे आभास हो गया है कि अब जल्दी ही वह समय आने वाला है, जब कल्कि भगवान दुष्टों में आग लगावेंगे। अब सर्वत्र भगवान के चमत्कार दिखाई देंगे। उनकी लीला इस संसार के पापों को धो देगी। कल्कि भगवान का प्रण है कि वह अधर्मियों, पापियों, दुष्टों का नाश करेंगे और गाय, ब्राह्मण और संतों की रक्षा करेंगे। जब से गुरु बालमुकुन्द जी से कल्कि भगवान ने प्रकट होने का वायदा किया है, तभी से माया के मान मर गए।कल्कि जी भक्ति की वर्षा बनकर जब से आए हैं, संतों के मन रूपी सागर उस भक्ति की वर्षा से छलछला रहे हैं। कल्कि जी मन के अंदर मौज की लहर बनकर लहरा रहे हैं। कल्कि जी मन में जब आनंद का समुद्र लहराऐंगे तो जीव ब्रह्म रस (ईश्वरीय आनंद के रस) में मग्न हो जाएगा। कल्कि भगवान अपने भक्तों पर कृपा की नज़र डालकर उनपर भक्ति, वैभवता (धन-दौलत, ऐश्वर्य) बरसा रहे हैं। श्री कल्कि के आने की आशा की ज्योति स्वयं गुरु बालमुकुन्द जी (हनुमान जी के आवेशावतार) ने हमारे मनों में ज्योत जलाकर हमारे मनों को जगाया है।

卐 卐

शांत भयानक रौद्र रूख, धरे वीरवर वेश।
अघ-तम काटन हित मुदित, कल्कि उदित दिनेश॥
नयन ज्वाल फरकत अधर, कर चमकत तलवार।
कलि काटन कल्कि चले, हो घोड़े असवार॥

—सर्वश्री दीनानाथ दिनेश

अब उद्धार का मार्ग केवल भगवत् भजन ही है। जो लोग कल्कि नाम के अहसानमंद बन चुके हैं और अब भी सच्चे मन से कल्कि भगवान की चर्चा करते हैं, उनको तो हमारा भूमिष्ठ प्रणाम है। और जो लोग उनका उपहास से या छल कपट से नाम ले रहे हैं उनको भी कल्कि नाम के गौरव के कारण हमारा प्रणाम है।

भगवान श्री कल्कि जी को भोग

राघव राजा राम तुम, माधव सुन्दर श्याम।
पूर्ण परात्पर कल्कि प्रभु, प्रतिपल तुम्हें प्रणाम॥

प्रथम करो प्रभु अर्ध्य ग्रहण, फिर पाद्य आचमन।
पंचामृत गंगा जल से हो, स्नान जनार्दन॥
धारण कर यज्ञोपवीत, नव वस्त्राभूषण।
पुष्प रत्न मणि माल, भाल मलयागिरि चन्दन॥
रवि सम दिव्य प्रकाशमय, सिंहासन स्वीकार हों।
भक्तों को पद्मा रमा, सहित साक्षात्कार हो॥

हो फिर भोजन, भोग लगे हे जन मन रंजन,
मन कल्पित नैवैद्य, सुधासम बहुविधि व्यंजन।
स्वर्ण थाल में, कनक कटोरी धरी हुई है।
तुलसी दल युत, पकवानों से भरी हुई है।
सकल वस्तु स्वादिष्ट हैं, पाओ प्रभु विनती करें।
प्रति पदार्थ की यदि कहो, पल भर में गिनती करें।

है गुलाब जामुन, पिस्ते की लौज निराली।
मक्खन मिश्री, रबड़ी रसगुल्ला बंगाली।
खोए के लड्डू, रसभीनी मधुर मलाई।
मेवा वाली खीर, मखाने की बनवाई।
माल पुए मक्खन बड़े, हे मनमोहन लीजिए।
पेड़े बर्फी कलाकन्द, हलुआ सोहन लीजिए।

चमचम और खीर मोहन, खुरचन मनचाही।
रंगदार गुलदाना, बढ़िया बालूशाही।
पेठा फेनी, खजला खुर्मी और इमरती।

शक्कर पारे, मीठे सेब जलेबी नुकती।
मीठी गुंजियाँ खोए की, हलुआ है बादाम का।
घी में भीगा चूरमा, भोग लगे सुखधाम का।
हैं मठरी नमकीन, मसाले वाली गुंजिया।
पापड़ और पकौड़े, बीकानेरी भुजिया।
काजू घी में तले, और आलू का लच्छा।
सेब समोसे स्वाल, स्वाद सब ही का अच्छा।
तले मखाने मोगरे, और बीज सारे धरे।
मौन बड़ी संग मूंग की दाल, नमकपारे धरे।
मूंग और चावल के चिल्ले, घी में तर हैं।
श्रेष्ठ स्वाद में, और देखने में सुन्दर हैं।
फूली पूरी पिठ्ठी वाली, खरी कचौरी।
आलू की नमकीन बेड़मी, और नगौरी।
चटनी लौंजी मुरब्बे, चक्खो संग आचार के।
दही बड़े लो रायते, साग अनेक प्रकार के।
कटहल और कमल ककड़ी कचनार करेला।
सेम ग्वार की फली, सेंगरी कच्चा केला।
शिमले वाली मिर्च मटर है, गोभी आलू।
जिमीकन्द के संग कचालू और रतालू।
टिण्डा तोरी घिया के, संग सीताफल लीजिए।
भिण्डी अरबी बांकला, बथुआ परमल लीजिए।
सौंठ छुआरे वाली, और करौंदे कमरक।
हरी मिर्च मूली का लच्छा, नींबू अदरक।
आम दशहरी और सन्तरे, केले रक्खे।
पाओ प्रभु जिस भाँति भोग, भिलनी के चक्खे।

खिरनी और खूमानियाँ, खरबूजों के ढेर हैं।
लीची हैं लौकाट हैं, काले जामुन बेर हैं।
हैं अनार अमरूद, फालसे काले-काले।
काश्मीर के सेब, कसेरू मेरठ वाले।
कच्चे गोले अनन्नास, अंगूर धरे हैं।
मौसम्बी शहतूत सिंघाड़े, हरे हरे हैं।
आड़ू आलू बुखारे, चीकू और चकोतरे।
मीठे मीठे फलों के, भरे धरे हैं टोकरे।
लो पिस्ते बादाम, रमा पद्मा के प्यारे।
चिलगोजे काजू किशमिश, अखरोट छुआरे।
रबड़ी का कूंजा, शीतल गंगाजल पावन।
पान करो प्रभु और आचमन, कर प्रक्षालन।
लौंग कपूर इलायची, युत उत्तम ताम्बूल लो।
स्वर्ण पत्र मंडित मधुर, सब विधि मन अनुकूल लो।

श्री कल्कि गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः परमेष्ठिने युगावताराय निष्कलंकाय विद् महे।
धीमहि तन्नो कल्कि प्रचोदयात्॥

(परमेष्ठी धाम) वेद में वर्णित सबसे ऊँचा महा विष्णु धाम के वासी (भू) पृथ्वी व पृथ्वी के नीचे के लोग (भुवः) आकाश व आन्तरिक्ष (स्वः) देव लोको के स्वामी युगावतार निष्कलंक की भक्ति करते रहें। सनातन श्री कल्कि भगवान को प्रणाम तथा उनका ध्यान करें। वह श्री कल्कि भगवान् हमें भक्ति, ज्ञान, चेतना और प्रेरणा देते रहें।

श्री कल्कि पद संग्रह

न ठुकराओ शरण में ही

न ठुकराओ शरण में ही
हमें हे नाथ रहने दो
हमारे शीश पर अपनी
कृपा का हाथ रहने दो
भजन का तार ना टूटे
तुम्हारा द्वार ना छूटे
सदा सम्बन्ध नयनों का
छवि के साथ रहने दो॥1॥
सुबह या शाम दुख सुख में
तुम्हारा नाम हो मुख में
निरन्तर नित्य चरनों में
झुका यह माथ रहने दो॥2॥
रहे मन में सदा बांकी
तुम्हारे रूप की झांकी
जुड़ी दिन रैन कानों से
गुणों की गाथ रहने दो॥3॥

वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे

वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे
है कौन जो कि तुम बिन इस भार को उतारे
तुम चर-अचर जगत के करतार हो कहाते
जब-जब अधर्म बढ़ता अवतार लेके आते

इस बार कल्कि बन के क्यूँ ना असुर संहारे
वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे॥ 1॥

है पाप छल कपट का छाया यहाँ अन्धेरा
भगवान कब करोगे तुम सत्य का सवेरा
हम आस ले के आये दरबार में तुम्हारे
वैकुंठ धाम वासी धरती तुम्हें पुकारे॥ 2॥

आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि

आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि
अश्व चढ़े खड्ग ले विशाल कल्कि महाकाल कल्कि

धर्म को विश्व ठुकरा रहा है
पाप बढ़ता चला जा रहा है
तुम होकर समर्थ, देखते हो अनर्थ
कहो बनते नहीं क्यूं कराल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रतिपाल कल्कि॥ 1॥

शस्त्रों में समाओ समय के
बरसो मेघ बनके प्रलय के
करो रण में प्रवेश, धरो वर वीर वेष
क्रोध कम्पित अधर नयन ज्वाल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रतिपाल कल्कि॥ 2॥

रक्त से जब धरा लिप्त होगी
महा काली तभी तृप्त होगी
भार होगा न शेष, मोद भर के महेश
पुनः पहनेंगे नर मुण्ड माल कल्कि
आओ गौ विप्र प्रति पाल कल्कि॥ 3॥

श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ

श्री कृष्ण कन्हैया आ जाओ कल्कि रूप में
बल दाऊ जी के भैया आ जाओ कल्कि रूप में

नैन बड़े बेचैन रहें दिन रैन दरश के प्यासे
नीरस जीवन तुम बिन भगवान ऊबा मन दुनिया से
दुख हर लो और सुख बरसाओ कल्कि रूप में॥1॥

अश्व सवारी खड्ग हाथ गुरु बालमुकुन्द जी संग में
कुंडल क्रीट दमकते जग मग, आभूषण अंग-अंग में
सज के संत सुजन मन हर्षाओ कल्कि रूप में॥2॥

कल्कि प्रिय पद्मा रमा

कल्कि प्रिय पद्मा रमा दो मुझे वरदान माँ
जागते सोते कहूँ कल्कि भगवते नमः

तुम त्रिदेवो के स्वामी अन्तर्यामी की हो शक्ति,
कामना है यह मेरी तुम से पाऊँ निर्मल भक्ति,
भाव मय होके कहूँ कल्कि भगवते नमः
कल्कि प्रिय पद्मा रमा॥1॥

विप्र पद पूजा सेवा सत्कर्मो से मुख ना मोड़ूं
कभी कर्त्तव्य विमुख होके अपना धर्म ना छोड़ूं
ध्यान मय होके कहूं कल्कि भगवते नमः
कल्कि प्रिय पद्मा रमा॥2॥

सागर में नैया डग-मग डोले

सागर में नैया डग-मग डोले
पड़ के भंवर बीच खाए झकोले
मँझधार में कोई चारा नहीं है
आँखों के आगे किनारा नहीं है
ऐसे में जीवन सहारा टटोले
सागर में नैया डग-मग डोले॥ 1॥
हे कृष्ण केशव कन्हैया कहाँ हो
मेरी नैया के खिवैया कहाँ हो
बोलूँ न मैं आत्मा मेरी बोले
सागर में नैया डग-मग डोले॥ 2॥

मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए

मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए
मुझे भक्ति भाव में छोड़ दो
मेरी आस मेरी लगन के संग
श्री कल्कि नाम को जोड़ दो
रहे मेरी आँखों में रूप वह
जिसे शिव समाधि में धारते
पड़े मेरे कानों में हरि कथा
जिसे व्यास आदि उचारते
रटे मेरी रसना तुम्हें सदा
मेरे मन को विषयों से मोड़ दो
मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए॥ 1॥
मेरे रोम-रोम में तुम रमो
तो यह देह मेरी पुनीत हो

मेरे स्वामी मात-पिता हो तुम
तुम्हीं बन्धु हो मेरे मीत हो
मेरे तुम से नाते बने रहें
चाहे नाते दुनियाँ से तोड़ दो
मुझे तुम से मुक्ति न चाहिए॥ 2॥

हमें दर्शन दिखा देना

हमें दर्शन दिखा देना हमें अपना बना लेना
हमारे देश को भगवन तबाही से बचा लेना
कहा था आपने गर जो पड़े दुख तो बुला लेना
चले आओ दुखी दिल चाहते हैं आसरा लेना
हमें दर्शन दिखा देना··· ॥ 1॥
तुम्हारी ओर आँखें हैं न हम से मुँह छिपा लेना
हमें अपना समझ कर नाथ सीने से लगा लेना
हमें दर्शन दिखा देना हमें··· ॥ 2॥

मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु

मेरी विपदा में बन जाओ प्रभु सुख और सहारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी दर्श दो हे कल्कि प्यारे
निराशा में बनो आशा, अंधेरे में उजाले
बनो उन निर्बलों के बल जो कहलाएँ तुम्हारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी, दर्श दो हे कल्कि प्यारे॥ 1॥

विनीतों की व्यथा में तुम अनेकों बार आए
रमापति आज भी आकर करो ये बेड़ा किनारे
शरण हूँ मैं तुम्हारी··· ॥ 2॥

भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार

भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार भार हरते
दानव दुष्टों का करके संहार भार हरते

राघव राम बन आए, माधव कृष्ण कहलाए
महिमा वेद भी गाए, तुम्हारा पार ना पाए
तुम हो जग के करतार भार हरते
भूमि का प्रभु तुम लेकर अवतार··· ॥ 1 ॥

अपने दीन भक्तों से अब क्यूं दूर हो भगवान
जो हैं रात दिन करते तुम्हारे नाम का सुमरन
जिन की सुन कर पुकार भार हरते
भूमि का प्रभु तुम··· ॥ 2 ॥

अब तुम से लगी है आस

अब तुम से लगी है आस
करो प्रभु नाश दुष्ट दल सारा
हम को है गर्व तुम्हारा

जो शरण तुम्हारी आते हैं
वह अमिट सदा सुख पाते हैं
मिल जाता है सब कष्टों से छुटकारा
हमको है गर्व तुम्हारा ॥ 1 ॥

भरमार यहाँ पापों की है
और बुरी दशा गौओं की है
क्यूँ ना हे स्वामी तुमने इन्हें निहारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 2 ॥

चुप क्यूँ हो खड्ग उठाओ ना
वह अपने वचन निभाओ ना
जिन शब्दों का अर्जुन ने लिया सहारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 3 ॥

आँखों में ऐसे छाए हो
और मन को ऐसे भाए हो
जैसे चकोर को चाँद लगे है प्यारा
हम को है गर्व तुम्हारा ॥ 4 ॥

था अजामिल एक पापी

था अजामिल एक पापी जिस पे तुमने की दया
नाम नारायण लिया था पार बेड़ा हो गया
नाथ हम भी आज आए हैं तुम्हारे द्वार पर
दीन हैं दुख दूर कर दो दास अपना जान कर
भक्ति से भरपूर भगवन दो हमें जीवन नया

राह काँटों से भरी

राह काँटों से भरी, सामने आओ हरी, मैंने भी विनती करी

तुम दयालु हो बड़े
पाँव पत्थर पर पड़े
नारि गौतम की तरी
मैंने भी विनती करी

भक्त ने तुम को रटा
जोर से खम्बा फटा
तुम बने नरकेसरी
मैंने भी विनती करी
मान भिलनी को दिया
की जटायु की क्रिया
ऋषियों की विपदा हरी
मैंने भी विनती करी

बेसहारों के सहारे हो कहाँ

बे-सहारों के सहारे हो कहाँ
कल्कि भगवान हमारे हो कहाँ

नैया मझधार में है डोल रही
गहरे सागर के किनारे हो कहाँ
कल्कि भगवान··· ॥ 1 ॥

चले आओ ना प्रभु देर करो
कोई लाचार पुकारे हो कहाँ
कल्कि भगवान··· ॥ 2 ॥

यह तुम्हें ढूँढ रही हैं आँखें
बोलो हे नन्द दुलारे हो कहाँ
कल्कि भगवान··· ॥ 3 ॥

देखलो आके दुखी मन की दशा
सोई किस्मत के सितारे हो कहाँ
कल्कि भगवान··· ॥ 4 ॥

पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ

पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
बह चला बेड़ा विपद की बाढ़ में
शोक सागर के किनारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे··· ॥ 1 ॥

बे सहारों को सहारा चाहिए
बे सहारों के सहारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
हम तुम्हारे है दुखी है दीन है
दीन दुखियों को बिसारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे··· ॥ 2 ॥

नैन है बेचैन दर्शन के लिए
सामने आओ हमारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे हो कहाँ
मन तुम्हें पल-पल पुकारे हो कहाँ
चाकरी की कामना मन में लिए
हम खड़े दर पर तुम्हारे हो कहाँ
पद्मापति श्री कल्कि प्यारे··· ॥ 3 ॥

दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों

दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों की निहार के निहार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के

पाप यहाँ सन्ताप यहाँ, माया की मन पर छाप यहाँ
तुम्हें जग भूल गया, पैसे का है जाप यहाँ
हम तो बैठे है मन मार के जी मार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के
दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों ··· ॥ 1 ॥

भार हरो संहार करो और भक्तों के भंडार भरो
धर्म की जीत होवे, ऐसा चमत्कार करो
तुम हो आधार निराधार के
अब आओ जी कल्कि प्रभु स्वामी संसार के
दुर्दशाएँ गौओं और भक्तों··· ॥ 2 ॥

प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी

प्रभुजी प्रभुजी तुम सुन लो टेर हमारी
सेवा भक्ति बने नहीं हमसे हे दीनन हितकारी
तुम सुन लो टेर हमारी

जिसका कोई नहीं है अपना, तुम हो अपने तुमको जपना
सीख लिया प्रभु इस जीवन में, तुम हो अपने तुमको जपना
दूर करो अंधियारी, तुम सुन लो टेर हमारी
प्रभुजी प्रभुजी तुम··· ॥ 1 ॥

देर करो ना आओ आओ, आ भक्तों को दरश दिखाओ
कल्कि मंडल चिन्तक सारे,
प्रभुजी प्रभुजी तुम··· ॥ 2 ॥
आए शरण तुम्हारी,
प्रभुजी प्रभुजी तुम··· ॥ 3 ॥

ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया

ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया
घर छूटा परदेस में आया

जब शिशु आँखे खोले
या कुछ मूँ से बोले
उससे पहले मोहिनी माया
उसको आकर मोह ले
मोह ने सारा ज्ञान भुलाया
ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया···

ऋषि मुनि योगी सारे
इस माया से हारे
इससे कोई बिरला जीते
जो हरि नाम पुकारे
नाम को वेदों ने सार बताया
ब्रह्म से बिछड़ा जीव कहाया···

लोग कहते हैं कि मुद्दत से ये कल्कि वाले

लोग कहते है कि मुद्दत से ये कल्कि वाले
कल्कि कल्कि ही न जाने क्यों रटा करते हैं

क्या पता उनको कि इस नाम की दुधारी से
धर्म के बैरी कहीं भी हो कटा करते हैं
लोग कहते है कि···

अपने गुरुदेव से हमको तो यही नाम मिला
जिन्दगी भर के लिए सच्चा सही काम मिला
एक कल्कि के सिवा नाम रटें दूजा क्यों
छोड़ कल्कि को करें और की हम पूजा क्यों
हमको पृथ्वी का अभी भार उतरवाना है
सत्य युग लाए बिना चैन कहाँ पाना है
क्या पता उनको कि कलि काल के काले बादल
नाम कल्कि की हवा से ही हटा करते है
लोग कहते है कि··· ॥ 1 ॥

धर्म के नाम पे जब पाप पनप जाते है
त्याग तप संयम नियम जिस दम कि खप जाते हैं
टूट जाती है सभी शास्त्र की मर्यादाएँ
भक्ति को छोड़कर नर भोगों में भरमा जाएँ
आए बिन ऐसे में भगवान नहीं रह सकते
अपनी मर्यादा का अपमान नहीं सह सकते
क्या पता उनको अमन चैन की आवाजों में
दम नहीं रहता कि जिस दम बम फटा करते हैं
लोग कहते है कि··· ॥ 2 ॥

मुरली भी सुनेंगे देखेंगे

मुरली भी सुनेंगे देखेंगे मोहन की मनोहर लीलाएँ
पहले तो वो कल्कि बनकर भू-भार हटाने को आए
यहाँ रोज सुबह के होने तक कट जाती है लाखों गायें
कुंज गलियों की रंग-रलियों में दिल पत्थर हो तो खो जाए
सीने में हो जिनके आग उन्हें सावन की मल्हारें क्यों भायें
वे चैन से बैठे क्यूँ तब तक संहार न जब तक करवायें
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे··· ॥ 1 ॥
बृजराज रहे बृज में सुख से क्यूँ शस्त्र उठाए दुख पाए
उन्हें छोड़ दे उनकी किस्मत पर कलिकाल से जो जा टकराए
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे··· ॥ 2 ॥
वे रास रचाए मधुवन में माखन खाए मिश्री खाए
गौओं से उन्हें जब नेह नहीं गोपाल न फिर वो कहलाए
मुरली भी सुनेंगे देखेंगे··· ॥ 1 ॥

दिन है दो चार भजन के

दिन है दो चार भजन के तेरे जीवन के जो नर तर जाना है
कोई करके अच्छी सी करनी पाया मानुष तन
फिर भी न बैठा ले के सुमरनी भाया तुझे पशुपन
चरणों में चित भगवन के लगाओ दास बनके
जो नर तर जाना है दिन है दो चार भजन के··· ॥ 1 ॥
काल बलि है श्री कल्कि स्वामी जन्में है संभल
दूर करी भारत की गुलामी उनके दरश को चल
पथ छोड़ दे उलझन के अशुभ दर्शन के
जो नर तर जाना है दिन है दो चार भजन के··· ॥ 2 ॥

गंगा महिमा

जहाँ जहाँ गंगा बहती है गंगा बहती है
धरती पर वहाँ-वहाँ मुक्ति के संग भक्ति रहती है
जहाँ-जहाँ गंगा बहती···

राजा भगीरथ ने जिसके लिए तप किया
भागीरथी, वो कहाई यहाँ
जहाँ-जहाँ गंगा बहती··· ॥ 1 ॥

है जन्म जिसका अजन्मा के नख से हुआ
ऐसी कहीं, और सरिता कहाँ
जहाँ-जहाँ गंगा बहती··· ॥ 2 ॥

जो स्नान जलपान दर्शन करे वो तरे
गायें सभी, वेद महिमा महां
जहाँ-जहाँ गंगा बहती··· ॥ 3 ॥

प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा

प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा
विरोधी विश्व पर छाना पड़ेगा
अधर्मी आततायी बढ़ गए हैं
उन्हें यमलोक पहुँचाना पड़ेगा,
प्रभु रण में तुम्हें ॥ 1 ॥
जो तुमने देर आने में लगाई
हमें निरुपाय हो जाना पड़ेगा,
प्रभु रण में तुम्हें ॥ 2 ॥

उठा लो हाथ में अब उस खड्ग को
जिसे दुष्टों से टकराना पड़ेगा,
प्रभु रण में तुम्हें ॥ 3 ॥
तुम्हारा देश यह दुख पा रहा है
यहाँ सुख चैन बरसाना पड़ेगा
प्रभु रण में तुम्हें आना पड़ेगा ॥ 4 ॥

आओ कल्कि तलवार ताने

आओ कल्कि तलवार ताने
गौवों भक्तों की सुध पाने

धर्म वह तुम को था जो प्यारा
ना जाने किस और सिधारा
शास्त्र की आज्ञा कोई न माने
आओ कल्कि··· ॥ 1 ॥

जी बैठा जाता है तुम बिन
ऐसे आए हैं अब दुर्दिन
बाढ़ लगी है खेत को खाने
आओ कल्कि··· ॥ 2 ॥

चमके जैसे सूर्य गगन में
चमको वैसे अब तुम रण में
आपके बल को दुनिया जाने
पाप के फल को दुनिया जाने
आओ कल्कि··· ॥ 3 ॥

स्वासों के संग में उठती उमंग में

स्वासों के संग में उठती उमंग में
छाओ समाओ मुरार हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार

बाँके बिहारी मैं झाँकी तुम्हारी, निहारूँ हृदय में उतार
बन के पुजारी मैं सेवा में सारी, दूँ जीवन की घड़ियाँ गुजार
तोड़ो न आशा के तार, हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार ॥ 1 ॥

सिर पे मुकुट लम्बी अलकों की लट, वैजयन्ती गले में हो माल
माथे तिलक मोहनी हो झलक, मद भरे नैन धीमी हो चाल
पलकों में छलका हो प्यार, हरि मैं तो करूँ तुम से विनय बार-बार ॥2 ॥

बिगड़े हुए जिसके हों दोनों जहाँ

बिगड़े हुए जिस के हों दोनों जहाँ
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
जिसका है ठिकाना यहाँ न वहाँ
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ

भगवान भटकते राही को
अपने चरनों में जगह दे दो
है कहीं न कोई जिसका मकां
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
बिगड़े हुए जिस के हों··· ॥ 1 ॥

तुम सारे जग के दाता हो
मैं भिखारी बन के आया हूँ
झोली रही खाली जिसकी यहाँ
अब तुम ही कहो वह जाए कहाँ
बिगड़े हुए जिस के हों··· ॥ 2 ॥

हे काल रुप कल्कि प्यारे

हे काल रूप कल्कि प्यारे हाथ में दुधारा धारे
पाप का विनाश कीजिये समय आ गया

प्रतिपल हो रही धर्म की हानि, अधम करें मनमानी
ऋषि मुनि योगी ज्ञानी साधु तपस्वी दानी
रहे गये बन के कहानी
सत्य का प्रकाश कीजिये समय आ गया॥ 1॥
आए हैं तुम्हारे द्वारे विपदा के मारे हुए
कहाँ हो बताओ स्वामी हमको बिसारे हुए
सब विधि हारे हुए और बेसहारे हुए
हे नाथ हम तो तुम्हारे हुए
हमें ना निराश कीजिये समय आ गया॥ 2॥

क्या दीन दुखी भक्तों को

क्या दीन दुखी भक्तों को
मोहन भूल गये।

टेरा ध्रुव ने और मीरा ने
आए कष्ट मिटाने।
हमरी बारी को तुम प्रभुजी
जी क्यों लगे चुराने॥1॥

मन में आशा नयन हैं प्यासे
देखें मूर्ति सुहानी।
कल्कि मंडल कहें प्रभु सुन लो
हो रही धर्म की हानि॥ 2॥

हे कल्कि भगवान तुम्हें अब

हे कल्कि भगवान तुम्हें अब
भारत में आ जाना चाहिए
केवल हिन्दू धर्म छोड़कर
सबका ढोंग मिटाना चाहिए

हुआ पृथ्वी तल पर अन्याय
करोड़ों काटी गई हैं गाय
राजा बन गए चोर लुटेरे
सूली उन्हें चढ़ाना चाहिए
शासन स्वयं करो पृथ्वी तल
को फिर स्वर्ग बनाना चाहिए।
हे कल्कि भगवान··· ॥ 1 ॥

जहाँ से जग लेता था ज्ञान
हो रहा उसका ही अपमान
भारत माता को बन्धन से
स्वामी मुक्त कराना चाहिए
पतित हुई हिन्दू जाति को
वैभव पर पहुँचाना चाहिए
हे कल्कि भगवान··· ॥ 2 ॥

मची है कैसी आपा धापी
करें मनमानी निश्चर पापी
दानवता का दलन करो प्रभु
अब तो खड़ग चलाना चाहिए
अर्बी तुर्की यवन म्लेच्छ का
धड़ से शीश उड़ाना चाहिए
हे कल्कि भगवान··· ॥ 3 ॥

धरणी पर राज्य अखंड बनाओ
सत्य युग का दरबार लगाओ
राजसूय यज्ञों की रचना कर
सम्राट कहाना चाहिए
सारे जग में सत्य सनातन धर्म
का ध्वज लहराना चाहिए
हे कल्कि भगवान··· ॥ 4 ॥

कृपा कल्कि मंडल पर करो
कष्ट अपने भक्तों के हरो
पाञ्चजन्य का तुमुल घोष कर
अब घोड़ा दौड़ाना चाहिए
दलित दीन दुखिया भक्तों को
आकर हृदय लगाना चाहिए
हे कल्कि भगवान··· ॥ 5 ॥

हमें अब दुख से उबारो हरि

हमें अब दुख से उबारो हरि
नटवर नागरिया गिरधर सांवरिया

घोड़े चढ़के खड्ग उठाके
कल्कि पद्मा नाथ कहा के आओ दर्शन दो नूतन जीवन दो
सुनके वाणी विनय से भरी, हमें अब दुख से··· ॥ 1 ॥

फैली जग में आसुरी माया जीवों ने जप-तप बिसराया
तामस सृष्टि है वायस दृष्टि है
आने में क्यूँ देरी करी, हमें अब दुख से··· ॥ 2 ॥

आये नहीं अब तक हुए

आये नहीं अब तक हुए वायदे सभी झूठे
तुम हमसे रमा नाथ हो किस बात पे रूठे

नरसी का भरा भात मगर बात न टाली
साँवलिया बने सेठ कलम तुमने सँभाली
लिख डाले थे परवाने लगाये थे अँगूठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे॥1॥

भिलनी ने भरे टोकरे बेरों के जो खोले
भैया का समझ भाव प्रभु प्रेम से बोले
झूठे नहीं यह बेर हैं अनमोल अनूठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे॥2॥

सुग्रीव विभीषण को दिए राज तुम्हीं ने
लाचार की रक्खी सदा ही लाज तुम्हीं ने
आशाओं के तरु सूख के रह जाए न ठूंठे
तुम हमसे रमानाथ हो किस बात पे रूठे॥3॥

कल्कि स्वामी आओ

कल्कि स्वामी आओ
तुम्हारे वियोग में हम दुख पाए
इसका करो विचार,
मूर्ति तुम्हारी लगती प्यारी,
जो है बसी निगाहों में
अब तो प्रभु प्रकट हो जाओ,

यह ही पुकार आहों में
खड्ग लिये कर में चढ़ घोड़े,
ना रहो हमसे मुख मोड़े
धर्म की डोर सँभालो आकर,
तुम स्वयं इस बार
कल्कि स्वामी आओ···॥ 1॥

दूर हो तुम जितने सन्मुख से,
उतने ही हम दूर हैं सुख से
देखे हम दरबार तुम्हारा,
जिसके लिए मन विकल हमारा
कल्कि मंडल चिंतक के चित
बसे तुम्हीं साकार,
कल्कि स्वामी आओ···॥ 2॥

कल्कि जी करो हमारा ख्याल

कल्कि जी करो हमारा ख्याल
आओ प्रभु इस भव सागर से, लो तुम हमें निकाल

इस सागर की लहर-लहर में, आये बहुत उछाल
डोले नैया नहीं खिवैया, बहुत हुए बेहाल
कल्कि जी करो हमारा ख्याल···॥ 1॥

किसको सुनायें अपना दुख हम, जीना है जंजाल
तुम बिन प्रभु गुजरता जाता, एक पल बन कर साल
खड्ग लिए घोड़े चढ़ जाओ, खुद ही करो सँभाल
दुख मिटाओ अपने भक्तों के, नजर महर की डाल
कल्कि जी करो हमारा ख्याल···॥ 2॥

भूमि का उतारो भार नाथ

भूमि का उतारो भार नाथ पृथ्वी का उतारो भार
सुर नर मुनि प्राणाधार नाथ भूमि का उतारो भार
हे कृष्ण प्रभु मन हरण श्याम
दशरथ नन्दन अवतार राम
कल्कि स्वरूप को नित प्रणाम
करते हैं बारम्बार नाथ भूमि का उतारो भार॥ 1॥
कर खड्ग अश्व पर हो सवार
सुन्दर स्वरूप कल्कि मुरार
तुम किया हृदय में चमत्कार
मन फूल रहा कर दरश तुम्हारे अंग-अंग का श्रृंगार
नाथ भूमि का उतारो भार॥ 2॥
तुम कष्ट निवारण हारे हो
तुम गौ विप्रन के प्यारे हो
तुम ही आधार हमारे हो
जगमगा रहा तुमरे प्रताप से यह सारा संसार
नाथ भूमि का उतारो भार॥ 3॥
जब-जब भक्तों ने टेर करी
आये समीप नहीं देरी करी
दुष्टों को मार कर ढेरी करी
गौ भक्तों का दुख हरा रहे फिर निष्कलंक अवतार
नाथ भूमि का उतारो भार॥ 4॥
हे दीनबन्धु निज जन जीवन
अब करो सफल ले अपनी शरण
तुम से ही हमारी लगे लगन
करो ऐसी कृपा हे प्रभु हम सब
देखें कल्कि दरबार, नाथ भूमि का उतारो भार॥ 5॥

कल्कि मंडल ने किया जाप
गुरु बाल मुकुन्द जी का है प्रताप
होकर के निडर यह दिया छाप
आए कल्कि चरनन चिंतक बन
करलो जय जय कार, नाथ भूमि का उतारो भार॥ 6॥

असहाय हैं क्यों आज

असहाय हैं क्यूँ आज ये गोपाल की गाए
कोई तो इसे निर्दयी हाथों से छुड़ाए

जो जीवों को वैतरणी के उस पार उतारे
अपने ही लिये ढूँढ़ रही है वह सहारे
दुखिया पे दया आज किसी को भी न आए
कोई तो इसे··· ॥ 1॥

यह कैसा समय आया है कैसी घड़ी आई
प्रभु आपके प्यारों ने मुसीबत बड़ी पाई
कलि काल ने कैसे यह कठिन दिन हैं दिखाये
कोई तो इसे··· ॥ 2॥

भगवान बड़े आप दयालु हो कहाते
यह बात अगर सच है तो फिर क्यूँ नहीं आते
हम राह में कब से हैं खड़े नैन बिछाये
कोई तो इसे··· ॥ 3॥

हे कल्कि रमा नाथ हे पद्मा जी के प्यारे
उतरेगा नहीं भार बिना आये तुम्हारे
आ जाइये घोड़े पे चढ़े खड्ग उठाये
कोई तो इसे··· ॥ 4॥

भगवान तुम्हारी दुनिया में

भगवान तुम्हारी दुनिया में दुखिया का सहारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका निस्तारा कोई नहीं

तुम सब की सुनने वाले हो मेरी भी सुनो तो मैं जानूँ
कुछ तुम भी मुझ को पहचानो कुछ मैं भी तुमको पहचानूँ
पतवार बिना मझधार में इस किश्ती का किनारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका··· ॥ 1 ॥

औरों की तरह अपने दर से तुम भी न मुझे लौटा देना
मैं आस लगा कर आया हूँ मुझे अपने दिल में जगह देना
इस अंधेरे में मेरी किस्मत का रोशन है सितारा कोई नहीं
जो दर-दर भटकने वाले हैं उनका··· ॥ 2 ॥

कौन कहता है घड़ा पाप का

कौन कहता है घड़ा पाप का भरपूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार के दिन दूर नहीं

बड़े खूंखार है वह लिये तलवार हैं वह
महा भारत के लिए खड़े तैयार हैं वह
सच पूछो तो अमन उनको है मंजूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार··· ॥ 1 ॥

भक्त प्यारे हैं उन्हें धर्म प्यारा है उन्हें
भक्तों ने ही तो जमीं पे उतारा है उन्हें
देख सकते वो कभी भक्तों को मजबूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार··· ॥ 2 ॥

गाय के खून से जो बैठे हैं हाथ रंगे
तेग की नोंक पे वे एक दिन होंगे टंगे
बक्शना दुष्टों को दरबार का दस्तूर नहीं
कल्कि जी आए हैं संहार··· ॥ 3 ॥

जब दुनिया पाप कर पृथ्वी

जब दुनिया पाप कर पृथ्वी पर भार बन गई।
संहार हित सुरशक्ति भी साकार बन गई॥

तब राम को ऋषियों ने पुकारा था बार-बार
जब पाप की बस्ती समन्दर पार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी··· ॥ 1 ॥

संसार में भगवान की भक्ति ही सार है
यह भूल कर सारी जनता मक्कार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी··· ॥ 2 ॥

श्री कृष्ण कल्कि बन कर हुए घोड़े पर सवार
जो हाथ में थी बाँसुरी तलवार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी··· ॥ 3 ॥

संदेश कल्कि जी का लाए बालमुकुन्द जी
वह वाणी कल्कि मंडल का आधार बन गई
संहार हित सुर शक्ति भी··· ॥ 4 ॥

उठो भारत जगाया जा रहा है

उठो भारत जगाया जा रहा है
समा सत्युग का आया जा रहा है

न कहना फिर हमें मालूम नहीं था
इसी से अब बताया जा रहा है
समा सत्युग का आया··· ॥1॥

हुए जो पाप धरती पे करोड़ों
हिसाब उनका चुकाया जा रहा है
समा सत्युग का आया··· ॥2॥

मचा घमसान कैसा है जहाँ में
कोई करता सफाया आ रहा है
समा सत्युग का आया··· ॥3॥

चढ़े हैं अश्व पर भगवान कल्कि
खड्ग का रौब छाया जा रहा है
समा सत्युग का आया··· ॥4॥

श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो

श्री कल्कि भगवान का दुधारा देखो
भीषण संहार का सितारा देखो
कितना कराल है कितना विशाल है
मुख महा काल ने पसारा देखो

मानों उठी दावानल ज्वाला
या है कोई सूर्य ही निराला

पुञ्ज प्रकाश का चिह्न विनाश का
शेष जी ने क्रोध से फुंकारा देखो
श्री कल्कि भगवान का··· ॥ 1 ॥

वज्र देवराज इन्द्र का है
यह त्रिशूल भाल चन्द्र का है
यम का यह दण्ड है प्रलयाग्नि खण्ड है
फूंकने को दानवी दल सारा देखो
श्री कल्कि भगवान का··· ॥ 2 ॥

डोल उठी पापों से धरती

डोल उठी पापों से धरती ऐसा भार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि अवतार हुआ
गिरधारी की गौवों का वैरी संसार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि अवतार हुआ

वर्णाश्रम मिट गए रहे ना शुभ आचार-विचार
सत्य सरलता पर छाया छल-कपट भरा व्यवहार
पर पीड़क बन कर मानव को हर्ष अपार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि··· ॥ 1 ॥

किधर गया वह भाव भजन में अब अनुराग नहीं
यज्ञ हवन हरि कथा कीर्तन जप तप त्याग नहीं
तामस सृष्टि हुई कलियुग का जब विस्तार हुआ
धर्म की रक्षा करने को कल्कि·· ॥ 2 ॥

कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के

कल्कि जी जब कि घोड़े पर चढ़ के चल पड़ेंगे।
फट जाएगी यह धरती सागर उबल पड़ेंगे॥

जिस दम रमापति की आँखों में बल पड़ेंगे।
फट जाएगी यह धरती सागर उबल पड़ेंगे॥

नीचे उतर के सूरज लाखों गुना तपेगा।
और चाँद की नजर से शोले निकल पड़ेंगे॥
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 1॥

खूंखार होके काली खप्पर भरेगी अपना
खन्दक में मौत की जब दुष्टों के दल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 2॥

एक रूप की झलक पर एक तेग की चमक पर
है फर्क भक्त पापी दोनों फिसल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 3॥

वायदा किया उन्होंने गीता बता रही है
आऊँगा भक्त मेरे जब-जब निबल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 4॥

कल्कि जी आएंगे ही कुछ इसमें शक नहीं है
चलने को संग उनके शिव भी मचल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 5॥

गौओं के बैरियों पर जब बिजलियाँ गिरेंगी
सब देवता खुशी में भर कर उछल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 6॥

बरबादियों में उनका होगा न बाल बाँका
भगवान की शरण में जो आज कल पड़ेंगे
फट जाएगी यह धरती··· ॥ 7॥

जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए

जब स्वर्ग से प्राणी पतित हुए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
मृत लोक में आए रुक न सके
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा

सत्संग से और शुभ कर्मों से
पहुँचे थे ऊँचे लोकों में
जब भोगों से पुण्य समाप्त हुए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से··· ॥ 1 ॥

अब मिलता नहीं मिल जाए तो भी
सत्संग करना मुश्किल है
साधु जन पापों से पिछड़ गए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से··· ॥ 2 ॥

जब पाप से धर्म दबा देखा
तो कल्कि खड्ग लिए आए
सर दुष्टों के धड़ से अलग किये
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से··· ॥ 3 ॥

भक्तों ने सुना आए कल्कि
सुनते ही दरश को दौड़ चले
चरनों की रज पाने के लिए
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा
जब स्वर्ग से··· ॥ 4 ॥

लीला अवतार की निराली होगी

लीला अवतार की निराली होगी।
धरती यह पापियों से खाली होगी॥
सिंह सवार महा काली होगी
खून की प्यासी खप्पर वाली होगी

शिवजी की सेना मतवाली होगी
आँखों में आग जैसी लाली होगी
शक्ति निधान ने कल्कि भगवान ने
कर में तलवार जब संभाली होगी
लीला अवतार की··· ॥ 1 ॥

सत्य धर्म की हरियाली होगी
गौओं भक्तों की रखवाली होगी
धर्म के राज में मानव समाज में
चारों तरफ खुशहाली होगी
लीला अवतार की··· ॥ 2 ॥

नक्शा बदल देने को जमीं

नक्शा बदल देने को जमीं आसमान का
अब आया जा रहा है मालिक जहान का

खांडा पकड़ कर हाथ में घोड़े पर है सवार
कोई नहीं है जिनके बराबर की शान का
अब आया जा रहा है··· ॥ 1 ॥

दुनियाँ की बादशाहतें मिट्टी में मिला कर
सिक्का जमाएगा वह भक्ति और ज्ञान का
अब आया जा रहा है··· ॥ 2 ॥

पाला जिन्होंने जिस्म को गौओं के खून से
किस्सा मिटा देगा उनके नामो निशान का
अब आया जा रहा है··· ॥ 3 ॥

खड्ग मुरली बनी श्री कल्कि बने

खड्ग मुरली बनी कल्कि बने बृजराज हैं आज
पाप से काँपती धरती की बने लाज हैं आज

अलकें घुंघराली घनी काली कमल सी आँखें
चित चुराती सी ये चितवन ये सरल सी आँखें
चढ़ के घोड़े पे समर में चले सरताज हैं आज
खड्ग मुरली बनी कल्कि··· ॥ 1 ॥

चांद सा मुखड़ा मनोहर पीत पट की शोभा
और माथे पे तिलक सिर पे मुकुट की शोभा
सभी श्रृंगार के अंग-अंग में सजे साज हैं आज
खड्ग मुरली बनी कल्कि··· ॥ 2 ॥

पौरुष की परीक्षा

विपत्ति के समय मनुष्य के धैर्य और पौरुष की परीक्षा होती है। उपाय एवं परिश्रम से सिर पर आई हुई विपत्ति अविलम्ब टल जाती है। इसलिए विपत्ति से घबराकर निराशा का आश्रय कभी नहीं लेना चाहिए।

पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी

पाप के ताप से पीड़ित पृथ्वी पहुँची वैकुण्ठ धाम
श्रीनारायण की शरण में मिला उसे विश्राम

मुरझाया था उस का मुखड़ा, चैन बिना चित उखड़ा-उखड़ा
काया दुर्बल दीन दशा थी, किसे सुनाती अपना दुखड़ा
उसका तो आधार बना था संकट में हरि नाम
पाप के ताप से··· ॥ 1 ॥

संग में थे सुर नर मुनि ज्ञानी, प्रभु ने सब की सुनी कहानी
करुणानिधि की करुणा उमड़ी, भर आया आँखों में पानी
बोले मैं संहार करूँगा, हरूँगा भार तमाम
पाप के ताप से··· ॥ 2 ॥

लक्ष्मी पति ने प्रण निभाया, जो कहा वह कर दिखलाया
निज इच्छा से कल्कि बन कर, महाभारत का साज सजाया
दहल उठे दानव दल सन्मुख, जब देखा संग्राम
पाप के ताप से··· ॥ 3 ॥

देख के कल्कि जी की झांकी, सुन्दर चेहरा चितवन बांकी
मन ही मन सब सन्त सराहें, खोज करें कवि जन उपमा की
चिट्टे घोड़े पर चढ़े हरि, खड्ग हाथ में थाम
पाप के ताप से··· ॥ 4 ॥

मूर्ख और विद्वान

मूर्ख की आत्मा का ज्ञान बन्द बिजली के बुझे बल्ब के समान है। जबकि विद्वान की आत्मा सूर्य के समान है जो सत्य और असत्य के व्यवहारों को प्रकाशित करती है।

अपने भक्तों से हरि आज मिले

अपने भक्तों से हरि आज मिले आए के
कल्कि कहाए के खड्ग उठाए के

जब देवों ने देखा जग में कलियुग का विस्तार है
धर्म कर्म सब बन्द हुए और पापों की भरमार है
भोगों में रत भजन भाव से विमुख हुआ संसार है
लाखों गौएं कटतीं अबलाओं पर अत्याचार है
देवलोक को तजकर सारे तब ब्रह्मा के धाम सिधारे
विधि से सकल कही विपद सुनाए के
अपने भक्तों से हरि‥॥ 1॥

बोले ब्रह्मा इन्द्रादिक से तब सब का उद्धार हो
जब धरती पर श्री गोलोक निवासी का अवतार हो
उनके द्वारा खल म्लेच्छों का सामूहिक संहार हो
यह सब तब हो जब जाकर श्रीहरि के द्वार पुकार हो
विधि सम्मति सबके मन भाई धरती गौ रूप धर धाई
टेर जो लगाई क्षीर सागर में जाय के
अपने भक्तों से हरि‥॥ 2॥

श्री पति ने शोकाकुल सन्मुख देखा देव समाज को
बोले रक्खूँगा गौ ब्राह्मण सुर सन्तों की लाज को
कल्कि बन कर स्वयं संभालूँगा धरती के राज को
दुनिया भर के असुरों पर गेरूँगा गहरी गाज को
तुम सब जन्मों जग में जाकर
कुछ दिन काटो कष्ट उठाकर
मम गुन गाओं कल्कि मंडल बनाय के
अपने भक्तों से हरि‥॥ 3॥

भारत की इस पुण्य भूमि में देवों का आगमन हुआ
कल्कि नाम के उच्चारण से असुर दलों का दमन हुआ
देश हुआ स्वाधीन दीनता मिटी यहाँ जब भजन हुआ
क्षीण हुई कलियुग की आयु सत्य शक्ति का सृजन हुआ
बालमुकुन्द गुरु देव हमारे पवन पुत्र श्रीहरि के प्यारे
सुजन उभारे कल्कि नाम धुन गाय के
अपने भक्तों से हरि आज मिले आए के

खड्ग उठा कर हाथ में

खड्ग उठाकर हाथ में जब नाथ आएंगे
गौ हिंसकों के खून की नदियाँ बहाएंगे
अवतारों में महान ये कल्कि अवतार हैं
घोड़े सवार भार भूमि का हटाएंगे

कलियुग में जब कि कल्कि बने

कलियुग में जब कि कल्कि बने कृष्ण मुरारी
तो बाँसुरी भी बन गई तलवार दुधारी
पोरी वह हरे बांस की हर दिल की दुलारी
तलवार ना बनती तो कहाँ जाती बेचारी

सोचा कहीं सरकार का संग छूट ना जाये
नाता जनम-जनम का कहीं टूट ना जाये
बैरी वियोग आके मुझे लूट ना जाये
मालिक मेरा नसीब कही फूट ना जाए
कहने लगी भगवान से दासी हूँ तुम्हारी
मुझको भी संग ले चलो कल्कि कृपाकारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 1 ॥

हरदम रहूँगी मैं तुम्हारे दहने हाथ में
तर जाऊँगी कर जाऊँगी कुछ काम साथ में
इतना ही चाहती हूँ तुम से प्राणनाथ मैं
जिंदा रहूँगी किस तरह होकर अनाथ मैं
तुमसे न बिछड़ जाऊँ है चिंता मुझे भारी
मेरी भी लाज रख लो आज बांके बिहारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 2 ॥

काटूँगी जालिमों के जिस्म तीर की तरह
बढ़ जाऊँगी मैं द्रोपदी के चीर की तरह
विक्रम दिखाऊँगी मैं महावीर की तरह
खूनी नदी बहाऊँगी मैं नीर की तरह
तुम ठाठ से करना, प्रभु घोड़े की सवारी
और देखते रहना मेरी जादूगरी सारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 3 ॥

गौओं के बैरियों के लिए गाज बनूँगी
खूंखार परिन्दे हैं वे मैं बाज बनूँगी
संसार में हिन्दू धर्म की लाज बनूँगी
जो कुछ कहोगे नाथ वही आज बनूँगी
जब तुम बनोगे काल महाकाल खरारी
छा जाऊँगी दुनिया पे मैं बन के महामारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 4 ॥

चारों तरफ गजब का घमासान मचेगा
सुमरन करेगा बस वही इन्सान बचेगा
दुनियाँ को नहीं पाप का सामान पचेगा
श्मशान भी भगवान आलीशान रचेगा
कलियुग खतम होने को है सतयुग की तैयारी
पत्थर के हरुफों में लिख लो बात हमारी
कलियुग में जबकि··· ॥ 5 ॥

आओ भक्तों महिमा गायें

आओ भक्तों महिमा गायें श्री कल्कि भगवान की
जिनके यश का वर्णन करती वाणी वेद पुराण की

वे अविनाशी सब घट वासी सृष्टि के आधार हैं
गौ ब्राह्मण सुर सन्तों के हित हो जाते साकार हैं
मर्यादा की रक्षा करते हरते भूमि भार हैं
निज इच्छा निर्मित तनुधारी माया गुण गो पार हैं
कोई वस्तु नहीं जगत में है उनके उपमान की
जिनके यश का वर्णन··· ॥ 1 ॥

ब्रह्मा जिनसे प्रेरित हो सृष्टि की रचना करते हैं
विष्णु पोषक बन कर जग जीवन को सुख से भरते हैं
शंकर बन विकराल काल के द्वारा सब कुछ हरते हैं
जिनके भय से शेष नाग धरती को सिर पर धरते हैं
उन्हीं प्रभु ने सूर्य चंद्र को उज्ज्वल ज्योति प्रदान की
जिनके यश का वर्णन··· ॥ 2 ॥

देखो है अस्तित्व उन्हीं का त्रिगुण मयी इस माया में
जल थल में विस्तृत नभ में जड़ चेतन जीव निकाया में
चौदह भुवन त्रिलोक सर्वदा रहते जिनकी छाया में
प्राण पुरुष हैं वही एक इस पंच तत्व की काया में
वही प्रलय का खेल वही लीला रचते निर्माण की
जिनके यश का वर्णन··· ॥ 3 ॥

तन मन धन से कर्म वचन से जो जन उनके दास हैं
उनमें उनकी सत्ता में रखते श्रद्धा विश्वास हैं
सुख में शील न खोते, होते दुख में नहीं उदास हैं
ऐसे सन्तों की सुधि लेने आए रमा निवास हैं
जय बोलो उन युग परिवर्तनकारी कृपानिधान की
जिनके यश का वर्णन··· ॥ 4 ॥

श्री कल्कि नाम मन भाया है

श्री कल्कि नाम मन भाया है
इस नाम में ऐसी शक्ति है
जिसके हृदय में भक्ति है
दुनिया से करके पार उसे
देकर अपना आधार उसे
वैकुण्ठ धाम पहुँचाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है॥ 1॥
अब भी है जन्म लिया जग में
हरि बने सहायक पग-पग में
भूमि का भार हटाने को
दुष्टों की खोज मिटाने को
निज कर में खड्ग उठाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है॥ 2॥
भक्तों के हैं भोले स्वरूप
दुष्टों के है वे काल रूप
दुखियों के दुख हरने वाले
मेरी नाव पार करने वाले
सोते से हमें जगाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है॥ 3॥
अब देर नहीं है आने में
कल्कि के प्रगट हो जाने में
कल्कि मण्डल यश गाते हैं
चरनों में शीश नवाते हैं
गुरु बालमुकुन्द बतलाया है
श्री कल्कि नाम मन भाया है॥ 4॥

जो सुमरनी संभाल कर बैठे

जो सुमरनी संभाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे
वो जो कहने लगे कल्कि-कल्कि
कट गई जड़ कपट और छल की
आत्मा को निहाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे ॥ 1 ॥
जोड़ा नाता जिन्होंने भजन से
कल्कि स्वामी के चरनों में मन से
मोह माया निकाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे ॥ 2 ॥
उन्हें अनुभव में हमने देखा
मिटी मस्तक से दुर्भाग्य रेखा
अपना वैभव विशाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे ॥ 3 ॥
तरे प्रहलाद ध्रुव बचपन में
जब श्रद्धा से मन के भवन में
दिया भक्ति का बाल कर बैठे
दया उन पर दयाल कर बैठे ॥ 4 ॥

श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन

श्री कल्कि पद्मा नाथ जब सिंहासन पर विराजे
सब देवों के समाज ने बजाये मिलकर बाजे
नई उमंग से राग रंग में सबने मन रंग डाले
मची धूम त्रिभुवन में प्रगटे कल्कि संभल वाले

उदय हुआ सत्युग का आई पुण्य कर्म की बेला
चले नारि नर हरि दर्शन को पल में जुड़ गया मेला
आये उत्सव में ले लेकर भेटें राजे महाराजे
सब देवों के समाज ने बजाये मिलकर बाजे॥ 1॥

शिव शंकर का डमरू बाजे नारद जी की वीणा
गणपत जी खरताल बजायें ढोल इंद्र ने छीना
बजे पखावज झाँझ घूंघरू ताली कल्कि नाम की
ऊँचे स्वर से सबने बोली आरती सुख धाम की
बजरंगबली ने करी गर्जना भक्तों के भय भागे
सब देवों के समाज ने बजाये मिल कर बाजे॥ 2॥

न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो

न सत्संग को छोड़ो न सुमरन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन को छोड़ो

बिताओ समय उनकी आराधना में
जिन्हें भक्त पाते हैं शुभ भावना में
बसाओ सदा उनको निज कामना में
न पूजा को छोड़ो न साधन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन··· ॥ 1॥

न भोगों से आत्मा को तृप्ति मिलेगी
तपस्या करोगे तो शक्ति मिलेगी
परम दिव्य शक्ति से भक्ति मिलेगी
न माला को छोड़ो न आसन को छोड़ो
कल्कि नाम गाओ पशुपन··· ॥ 2॥

गाये जा निश दिन गुन गिरधर के

गाये जा निश दिन गुन गिरधर के
नटवर नागर श्याम सुन्दर के

वृन्दावन की रज मन भाई
जोगन बन गई मीराबाई
प्रीतम मिल गये प्रेम नगर के
गाये जा निश दिन गुन गिरधर के··· ॥ 1 ॥

जिसके मन में भक्ति जागी
उसने जग की तृष्णा त्यागी
कुन्दन बन गये भाव निखर के
गाये जा निशदिन गुन गिरधर के··· ॥ 2 ॥

जैसी करनी वैसी भरनी

जैसी करनी वैसी भरनी जो बोया सो पाना है
आज नहीं तो कल कर्मों का फल आगे आ जाना है

इसी नियम से बँधा हुआ है देखो यह सारा संसार
यहाँ किसी की जीत न समझो और न किसी की समझो हार
जीता यम के द्वार गया हारे का हरि ठिकाना है
जैसी करनी वैसी भरनी··· ॥ 1 ॥

दुख सुख बनकर जनम-जनम के करम सामने आते हैं
धूप छाँव की तरह हमारे जीवन में छा जाते हैं
स्वयं हमें अपने कर्मों से अपना भाग्य बनाना है
जैसी करनी वैसी भरनी··· ॥ 2 ॥

यहाँ गुमान न करना धरती धाम रतन धन जीवन का
काया राख बनेगी यह धन काम करेगा ईंधन का
जो कुछ देख रहे हैं हम सब में परिवर्तन आना है
जैसी करनी वैसी भरनी··· ॥ 3 ॥

जग में कुछ करने से पहले भले बुरे का करो विचार
उसको ही अपनाओ जिसको अन्तःकरण करे स्वीकार
सन्तों के संग रहो जिन्होंने परम तत्व पहचाना है
जैसी करनी वैसी भरनी··· ॥ 4 ॥

श्वांस में सुमरन समा गया

श्वांस में सुमरन समा गया
जब नाम हरि का जपा गया
सब ऋषि मुनि और योगी जन
हरि नाम की धुन में हुए मगन
जब मन का अन्धेरा मिटता चला
साक्षात् हुए प्रभु के दर्शन
सुख उपजा दुख चला गया
जब नाम हरि का जपा गया

सुलह–बोलचाल का रास्ता

भले ही लड़ लेना, झगड़ लेना, पिट जाना, पीट देना, मगर बोल-चाल बन्द मत करना, क्योंकि बोल-चाल के बन्द होते ही सुलह के सारे दरवाजे बन्द हो जाते हैं।

भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा

भक्ति की ज्योति जगा हरि गुन गा
कल्कि का प्रिय दर्शन पायेगा
कल्कि तेरी विपत हरेंगे
डोलती नैया पार करेंगे
सुमरन में मन को लगा
भक्ति को ज्योति जगा··· ॥ 1 ॥

कल्कि से तेरे पिछले नाते
आज भला क्यूं याद न आते
जाग जरा नींद भगा
भक्ति की ज्योति जगा··· ॥ 2 ॥

कल्कि कल्कि कहते जाना

कल्कि कल्कि कहते जाना
चित्त उनके चरनों में लगाना

कल्कि कहोगे सुख से रहोगे
भजन बिना मन दुख ही सहोगे
नाम रतन धन खूब कमाना
दोनों लोक बनाना,
कल्कि कल्कि··· ॥ 1 ॥

नवयुग के अवतार हैं कल्कि
आये हरने भार हैं कल्कि
दानवी जग होगा वीराना
तुम उनके मन भाना,
कल्कि कल्कि··· ॥ 2 ॥

सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पा ले

सुप्तात्मा जगाकर परमात्मा को पा ले
परमात्मा को पाले जीवन सफल बना ले
वे हैं अनादि ईश्वर उनका सदा भजन कर
विश्वास रख उन्हीं पर दिन रैन नित निरंतर
चरनों में चित्त लगाकर अब तो उन्हें रिझालें
परमात्मा को पा लें जीवन सफल··· ॥ 1 ॥
सत्संग साधना से सुख के सुमन खिलेंगे
भक्ति उपासना से राधा-कृष्ण मिलेंगे
श्री कल्कि नाम गाकर अब तो उन्हें बुला लें
परमात्मा को पा लें जीवन सफल··· ॥ 2 ॥

फिर फिर आये जनम नित पाये

फिर फिर आये जनम नित पाये तृष्णा तुझे नचाये जग में

कट न सके संसार के बन्धन
मोह माया मद मार के बन्धन
अब भी यतन कर भक्ति भजन कर
तोड़ दे तू अहंकार के बन्धन
बिन हरि गाये विपत नहीं जाये
तृष्णा तुझे नचाये जग में··· ॥ 1 ॥
बालकपन खेलों में खोता
यौवन भोगों में लय होता
जब आती है वृद्धावस्था
मृत्यु का कर दर्शन रोता
पाप कमाये धर्म नहीं भाये
तृष्णा तुझे नचाये जग में··· ॥ 2 ॥

श्री कल्कि जपो रे मन भजो रे मन

श्री कल्कि जपो रे मन भजो रे मन
काम कर लो भलाई के बुराई तजो रे मन

यह दुनियां ख्वाब है मालिक का खेल है
पल भर की मौज है पल भर का मेल है
हरी भरी सदा यहाँ धरम की बेल है
श्री कल्कि श्री कल्कि जपो रे··· ॥ 1॥

पापों की राह में न जाना भूल के
मतवाले न बनो माया की धूल के
क्या लोगे मौत के झूले में झूल के
श्री कल्कि श्री कल्कि जपो रे··· ॥ 2॥

मन भजन में रहो घर या वन में रहो

मन भजन में रहो घर या वन में रहो
मिली रसना कल्कि नाम गाने को है
सब रहेगा यहीं अपना कुछ भी नहीं
नाम ही अन्त में काम आने को है

नाम पावन भी है मन भावन भी है
तप्त जीवन में सुख रूप सावन भी है
नाम का जाप कर पाप कट जाएंगे
क्रूर कलियुग के पांसे पलट जाएंगे
विश्व करतार कल्कि कहाने को हैं
मन भजन में रहो··· ॥ 1॥

साँवरे से लगन जो लगाने लगे
यूं कहो भाग्य अपने जगाने लगे
बिन भजन मन की कलियाँ खिलेंगी नहीं
कृष्ण की कुँज गलियाँ मिलेंगी नहीं
आज कल में समय बीत जाने को है
मन भजन में रहो··· ॥ 2 ॥

तेरा जीवन बिरथा बीत गया

तेरा जीवन बिरथा बीत गया
संसार में सार बिसार दिया
शुभ कर्मों के विपरीत गया

माया ने मूरख तुझे छला
तू जग से खाली हाथ चला

पुण्यों की पूंजी खत्म हुई
है पाप जुए में जीत गया
तेरे जीवन बिरथा··· ॥ 1 ॥

जो प्यार प्रभु से कर लेता
तो वह दुख तेरे हर लेता
अब दुःख का अवसर आने पर
सुख का सुन्दर संगीत गया
तेरा जीवन बिरथा··· ॥ 2 ॥

भज मन श्री कल्कि नारायण

भज मन श्री कल्कि नारायण।
बिखरेगी यह काया एक दिन पंछी उड़ जाएगा।

बेबस होकर मौत का कोड़ा जिस दम तू खाएगा॥
उस मौके पर कोई तेरे काम नहीं आएगा।
भज मन श्री कल्कि नारायण··· ॥ 1॥

टूटेगी जब श्वाँस सुमरनी करनी दोहराएगा।
कह न सकेगा कुछ आँखों में आँसू भर लाएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण··· ॥ 2॥

क्या संग लाया था जब आया क्या संग ले जाएगा।
झूठी माया में भरमाया पीछे पछताएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण··· ॥ 3॥

लिखने वाला तो लिख देगा जो तू लिखवाएगा।
जैसी तेरी करनी होगी वैसा फल पाएगा॥
भज मन श्री कल्कि नारायण··· ॥ 4॥

मतवाले हरि गुन गा ले

मतवाले हरि गुन गा ले जब टूटे श्वाँस सितार
तेरे काम न आए यह दुनियाँ

क्या संग लाया था जब आया क्या संग ले जाएगा
झूठी माया में भरमाया पीछे पछताएगा
तेरे घर वाले बाहर वाले सब सुख में साझीदार
तेरे काम न आए यह दुनियाँ··· ॥ 1॥
जग में शुभ कर्मो की खेती कर, परलोक बनाना

जीवन का उद्देश्य नहीं है, खाना पीना मौज उड़ाना
तेरे घर वाले, बाहर वाले सब मतलब का संसार
तेरे काम न आए यह दुनियाँ··· ॥ 2 ॥

मन कल्कि कल्कि गाया कर

मन कल्कि कल्कि गाया कर।
श्री कल्कि ही अब आएँगे
जो दुःखों के बादल छाए हैं।
दिन अन्तिम उनके आए हैं॥
दुःख जाएंगे सुख आएंगे।
तुझे नाथ स्वयं अपनाएंगे।
मन कल्कि कल्कि गाया कर॥
जो पापी पाप बढ़ाएंगे।
वह निश्चय काटे जाएंगे॥
पृथ्वी का भार हटाने को।
श्री कल्कि खड्ग चलाएंगे॥
मन कल्कि कल्कि गाया कर।

तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

क्यों पड़े नींद में सोते
क्यों समय अकारथ खोते
अब कल्कि नाम संग हो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

पापों की गहरी खाई
क्या देती नहीं दिखाई
अब मन की आँखें खोलो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

यह जीवन है दो दिन का
कुछ पता नहीं इस तन का
अपने पापों को धो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

मन कहे उसे मत मानो
कल्कि सुमरन की ठानों
दर्शन के चिन्तक हो लो रे
तुम कल्कि कल्कि बोलो रे

जाग बन्दे होश में आ

जाग बन्दे होश में आ और प्रभु से प्यार कर।
आएगा दिन मौत ले जाएगी तुझको मार कर॥

साथ ना ले जा सकेगा इस जहाँ की दौलतें
पड़ के लालच में न अपनी जिंदगी को ख्वार कर
जाग बन्दे··· ॥ 1 ॥

यह जनम तुझको मिला है नेक कामों के लिए
छोड़ मत ईमान अपना हसरतों से हार कर
जाग बन्दे··· ॥ 2 ॥

अपने मालिक की नजर में गिर न जाए तू कहीं
उसको खुश करने की कोशिश से न तू इंकार कर
जाग बन्दे··· ॥ 3 ॥

अरे ओ मूढ़ बन्दे देख

अरे ओ मूढ़ बन्दे देख दुनिया जाने वाली है
इकट्ठे पाप करके इसने एक गठरी बना ली है
यही वह चलता पानी है यही वह बहती धारा है
जो अपने साथ में सबको बहा ले जाने वाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे··· ॥ 1 ॥

निकल इस जग के फंदे से लगन रख कल्कि प्यारे से
जिन्होंने जालिमों के फूंकने को आग बाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे··· ॥ 2 ॥

कभी था वह धनुष कर में कभी थी बांसुरी मुख पे
उन्होंने म्यान से तलवार हाथों में उठा ली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे··· ॥ 3 ॥

रटा था नाम कल्कि का गुरुवर बालमुकुन्दजी ने
जिन्होंने कल्कि मंडल देहली की नींव डाली है
अरे ओ मूढ़ बन्दे··· ॥ 4 ॥

मस्त होकर जिन्दगी भर

मस्त होकर जिन्दगी भर नाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का
मौत के डर से अगर तू चाहता है छूटना
तो अमर कर देने वाला जाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का··· ॥ 1 ॥

बात दुनियाँ की न सुन ना देख दुनियाँ की तरफ
तू उम्मीदों से भरा पैगाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का··· ॥ 2 ॥

पा लिया प्रहलाद ने जिस को भजन के जोर से
जो धुरु को था मिला वह धाम ले भगवान का
है लगा दरबार दामन थाम ले भगवान का··· ॥ 3 ॥

बढ़ता चल जीवन में प्रति पल

बढ़ता चल जीवन में प्रति पल गन्तव्यस्थल दूर नही
आगे एक अवधि आने पर समय रहेगा क्रूर नहीं
दुख में साहस हीन हुआ तो लक्ष्य न अपना पाएगा
पूर्व पुण्य मय संचित निधि से वंचित ही रह जाएगा
कुटिल भाग्य से हंसकर कह दे धैर्यवान को घूर नहीं
बढ़ता चल जीवन में प्रति पल··· ॥ 1 ॥
कुसुम कली कांटों में खिलती नित नूतन अनुराग लिये
चन्दन शीतल सुरभित रहता है संग विषधर नाग लिये
दुख में जो घबराया कायर कहलाया वह शूर नहीं
बढ़ता चल जीवन में प्रति पल··· ॥ 2 ॥

मन न बदल जाए

एक बार दुर्योधन तेल मालिश करवा रहा था तभी एक ब्राह्मण का प्रवेश हुआ। दुर्योधन ने अपने उल्टे हाथ के समीप रखे तेल के स्वर्ण-पात्र को तत्काल अपने उल्टे हाथ से ब्राह्मण को दिया। तब तेली (तेल मलने वाले) ने दुर्योधन से कहा—महाराज छोटा मुँह बड़ी बात। क्षमा कीजिए, यदि आप सीधे हाथ से स्वर्ण-पात्र (तेल से भरा देते) तो ज्यादा अच्छा रहता। मुस्कराते हुए दुर्योधन ने कहा कि आपने सही कहा कि मुझे सीधे हाथ से दान देना चाहिए था परन्तु यह भी सच है कि इस चंचल मन (अस्थिर मन) पर मुझे विश्वास नहीं है। यदि मैं उल्टे हाथ की बजाय सीधे हाथ में स्वर्ण-पात्र लेकर कुछ क्षणों का समय लगाता तो मेरा मन भी बदल सकता था।

गोकुल की गलियों में ढूंढे

गोकुल की गलियों में ढूंढे राधा को साँवरिया।
राधे राधे मीठी धुन में बोले री बांसुरिया॥

मुख सुन्दर कजरारे नैना घूंघर वाले बाल हैं
मोर मुकुट है सिर पर संग में गौऐं गोपी ग्वाल हैं
गल मूंगे की माला कंधे काली है कामरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 1 ॥

मधुवन की कुञ्जों में उलझी बांकी चितवन श्याम की
मनमोहन की दासी बन गई हर ग्वालन बिन दाम की
सब मिल घेरे छलिया को ज्यों चन्दा को बदरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 2 ॥

त्रिभुवन की आँखों का तारा रंग बरसाए रास का
बृज की रज में सागर उमड़ा आनन्द और उल्लास का
मन की लहरों में लहराए जीवन की चुनरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 3 ॥

ब्रह्मादिक सुर सारे खो गए नट-नागर के खेल में
नारदजी भी रूप बदल कर मिल गए सब के मेल में
बन गए भोले शंकर भी बरसाने की गूजरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 4 ॥

एक अनोखा जादू देखा मुरली के संगीत में
जड़ चेतन सब तन्मय हो गए नन्द नन्दन की प्रीत में
सुर बालाओं ने सिर धर ली गोरस की गागरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 5 ॥

जो तुम पाना चाहो जग में दर्शन सुन्दर श्याम का

तो कलियुग में कर लो मन से सुमरन कल्कि नाम का
भक्तों की भवसागर से तर जाएगी नावरिया
गोकुल की गलियों में··· ॥ 6 ॥

खिला फूल उपवन में टूटा

खिला फूल उपवन में टूटा एक पवन के झोंके से
धरती पर गिर पड़ा मिला मिट्टी में रुका न रोके से
बिखर गए सब पंख रहा ना रूप रंग और आकर्षण
आया कुछ दिन ठहर न पाया लाया क्षण भंगुर जीवन
किसने किया प्रहार न जाने कोमल तन पर धोखे से
धरती पर गिर पड़ा मिला मिट्टी में रुका न रोके से
खिला फूल उपवन में टूटा··· ॥ 1 ॥
जिसको कल आँखों ने देखा उसका आज निशान नहीं
फिर भी अपने और पराए की होती पहचान नहीं
इस जग में कोई बिरला ही लाभ उठाए मौके से
खिला फूल उपवन में टूटा··· ॥ 2 ॥

एवं तु प्रथमे पादे कलेः कृष्णविनिन्दकाः।
द्वितीय तन्नामहीनास्तृतीये वर्ण संङ्कराः।
एकवर्णाश्चतुर्थे च विस्मृताच्युतसत्क्रियाः॥

श्रीकल्किपुराण 1.1.37-38

कलियुग के पहले चरण में मनुष्य श्रीकृष्ण भगवान की निंदा करेंगे, उन्हें अपना सा मनुष्य बताएंगे। दूसरे चरण में कृष्ण का नाम जपना छोड़ देंगे। तीसरे में वर्ण संकर हो जाएंगे और चौथे में एक वर्ण होना चाहेंगे। भगवान और सत्कर्म को भूल जाएंगे।

श्री दुर्गा स्तुतिः

जय गणपति गुरु देव शिवाशिव शेष शारदा
माँ दुर्गे हम करते तुम्हें प्रणाम सर्वदा

रौद्र रूप दृग अरुण विशेष क्रोध के कारण
भक्त त्राण हित अस्त्र शस्त्र करती हो धारण

अखिल भुवन में है भर रहा प्रकाश तुम्हारा
रहे भगवती मम उर मध्य निवास तुम्हारा

तुम होकर अवतरित किया करती हो क्रीड़ा
भू-भूसुर-सुर सन्तों की हरती हो पीड़ा

निशि दिन जो जन तुमको भजे अनन्य भाव से
छूटे सद्य त्रिताप पाप के दुष्प्रभाव से

भक्ति मुक्ति देती है आराधना तुम्हारी
पूर्ण करो अविलम्ब देवि कामना हमारी

भक्त वत्सला भव्या भव मोचनी भवानी
गुण गाते गन्धर्व सर्व सुर नर मुनि ज्ञानी

होकर श्रद्धा युक्त शरण में जो आता है
वह सुर दुर्लभ नित्य परम पद को पाता है

करे तुम्हारा यजन जीव जो तन मन धन से
उन्हें मुक्त करती हो माया के बन्धन से

नाश करो माँ मेरे अज्ञानांधकार का
हो निर्मल मन रहे न उर अंकुर विकार का

प्राप्त किया तुम से अखण्ड साम्राज्य सुरथ ने
किसे न किया कृतार्थ भक्ति के पावन पथ ने

जब समाधि ने देवी तुम्हारा ध्यान किया था
तुमने उसको सबसे उत्तम ज्ञान दिया था

दो वरदान मुझे मैं होकर युक्त धर्म से
बनूँ कल्कि कमलेश भक्त मन वचन कर्म से

अपने जन को दिव्य शक्ति सम्पन्न करो माँ
परम शन्ति सुख देकर चित्त प्रसन्न करो माँ

सात्विक बुद्धि प्रदान करो कलि कलुष हटाओ
मम रसना से पल पल कल्कि नाम रटाओ

व्यापक है तब तेज भूमि पाताल व्योम में
जड़ चेतन सम्पूर्ण सृष्टि के रोम रोम में

प्रिय है तुमको वेद धर्म मर्यादा पालन
मर्यादा से होता लोकों का संचालन

वसुधा पर जब दैत्य दुष्ट दल बढ़ जाते हैं
बल वैभव के उच्च शिखर पर चढ़ जाते हैं

वे मदान्ध हो करते जब उपहास तुम्हारा
अखिल विश्व तब बन जाता है ग्रास तुम्हारा

होती हो तुम तृप्त रक्त असुरों का पीकर
गेंद समान गिराती हो नर मुण्ड मही पर

असुर शवों से जब यह पृथ्वी पट जाती है
तभी पाप की गहन कालिमा हट जाती है

चलती है जब क्रूर कठिन करवाल तुम्हारी
सौम्य मूर्ति बन जाती है विकराल तुम्हारी

अट्टहास कर माँ जिस बार गरजती हो तुम
युद्ध भूमि में क्रुद्ध सिंह पर सजती हो तुम

जब कि भार से शेष शक्ति घटने लगती है
जलनिधि जाते खौल धरा फटने लगती है

होती क्षितिज में लीन गगनचुम्बी चट्टाने
सकल सृष्टि को लगते ज्वालामुखी जलाने

महा मेघ सम्वर्त काल के दृश्य दिखाते
सप्त सिन्धु मर्याद हीन होकर लहराते

अति विक्षुब्ध प्रकृति के ध्वंसमयी तांडव से
भर जाती सम्पूर्ण दिशाएँ भीषण रव से

मार्तण्ड जब हो प्रचण्ड तपने लगते हैं
त्राहि त्राहि कर जीव तुम्हें जपने लगते हैं

देती हो तब आर्त प्राणियों को निज आश्रय
करती हो खल म्लेच्छ यवन दल बौद्धों का क्षय

कृष्ण अर्जुन संवाद

तू समाज का एक भाग है, अपने को भाग समझ स्वामी न समझ, इसी में तेरा कल्याण है। यदि समाज सुखी नहीं तो व्यक्ति भी सुखी नहीं रह सकता। यदि समाज की आँखों में आँसू हैं तो समझ ले तेरी आँखें भी सूखी नहीं रह सकती। इसी में तेरा कल्याण है और जिसको यह ज्ञान है उसका जीवन ही यज्ञ है।

श्री कल्कि नाम की महिमा

(गुरूवर लक्ष्मीनारायण जी के परम प्रिय श्री रामेश्वरदास गोयल ने एक बार जिज्ञासु बालक की भाँति भगवान श्री कल्कि की महिमा लिखवाने को कहा। गुरुवर ने अत्यंत प्रसन्न होते हुए एक ही बार में श्री कल्कि महिमा को कह डाला। इसे बारम्बार पढ़ने से बंजर हृदय में भी कल्कि नाम की भक्ति जागृत होने लगती है।)

कल्कि भगवान के नाम की महिमा वर्णनातीत व इन्द्रियातीत है। ब्रह्मसुख का भोग कराने वाली, स्वरूप का ज्ञान कराने वाली, जीवन मुक्त करने वाली, शक्ति मुक्ति महारानी के दर्शन कराने वाली, जीवों को बाँधने वाली माया के दर्शन कराने वाली और गौ ब्राह्मणों के बैरियों को विध्वंस करने के लिये, पृथ्वी का भार उतारने के लिये अग्नि की तरह भड़कती हुई नवीन शक्तियों का सृजन करने वाली, भगवान के चरणों में तल्लीनता व तन्मयता देने वाली, कल्कि भगवान की सत्ता से विकार मयी जीवसत्ता को दमन करने वाली, भक्तों के हृदय में, खम्भ में नरसिंह भगवान की तरह सत्ता स्वरूप से समा जाने वाली, ध्रुव सत्य सत्ता स्वरूप दण्डायमान हो जाने वाली, अपने में भक्तों की प्रवृत्ति को प्रचण्ड अग्नि की तरह भड़का देने वाली, नारायण की छाती से लगा देने वाली, नारायण के चरणों में हठात् व बलात् लगा देने वाली, हमेशा से हमेशा के लिए भगवान का बना देने वाली, अगले जन्म के भगवान के सम्बन्धों को उद्दीप्त व प्रकाशमान कर देने वाली, उत्सुकता व आतुरता से भरी भगवान के सगुण रूप की विरह व्यथा को जागृत कर देने वाली, संसार की प्रत्येक वस्तु से अनुराग और प्रेम छुड़ा कर भगवान की दास्य अभिलाषा को ही अखण्ड ज्योति की तरह जगाये रखने वाली, 4 लाख 32 हजार वर्ष के कलियुग की आयु को काट कर सूली का कांटा बना देने वाली, अन्धेरे में

उजाला, निराशा में आशा, असफलता में सफलता, जंगल में मंगल करने वाली सम्यक प्रकार से समस्त क्लेशों को भस्म करने वाली प्रचण्ड अग्नि स्वरूप, आन्तरिक व अन्तरंग भक्तों के लिये शान्ति मयी, वात्सल्यमयी, समृद्धिमयी, माता की तरह भक्ति भावों और आन्तरिक सुखों की और ब्रह्मी स्थिति की पोषण करने वाली, धारणा करा देने वाली, जातिस्मर बना देने वाली, भक्तों की जीवन यात्रा को चलाने वाली, सत्संग व सत्पुरुषों में रुचि पैदा करने वाली है।

स्त्री शिक्षा और बालकों की शिक्षा ध्येय क्या होना चाहिए

यदि हमें जगत में भगवान के प्यारे प्राणी बनाने हैं तो हमें **ये ध्येय सामने रखने होंगे।** यति, सती, शूरमा, दानी और भक्त **ये ही भगवान के प्रिय हो सकते हैं,** ये ही संसार के रत्न हैं। इन्हीं से संसार का कल्याण हो सकता है। मेरा अपना भी अनुभव है और इतिहास भी साक्षी है कि महापुरुषों के जीवन निर्माण में माताओं का बड़ा हाथ रहा है। अंग्रेजी या पाश्चात्य शिक्षा ने जिसमें न कोई साधन है, न कोई योग का मार्ग हैं, धर्म और मोक्ष के ज्ञान से शून्य मनुष्यों को कुत्ता व बिल्ली बना दिया है। कुत्ता व बिल्ली बनाने वाले ही, साहित्य का सृजन हो रहा है। ऐसे गन्दे वातावरण में लड़के व लड़कियों को बन पड़े तो सहशिक्षा न देकर अलग अलग रखते हुए धार्मिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। उसमें हमें रामायण, महाभारत और पुराणों की कथाओं से ही सहायता मिल सकती है और उन्हीं शास्त्रों की शरण में जाना चाहिए जिनमें स्त्रियों को देवी और मनुष्यों को देवता बनाने की सामर्थ्य है।

संस्कृत विद्या पढ़ना हमारा ध्येय होना चाहिए। वेद पुराण एवम् शास्त्रों की अनिवार्य शिक्षा के साथ उनमें विश्वास को पोषण और परिपुष्ट करने वाली भगवान श्रीमन्नारायण महाविष्णु की शिक्षा की परम आवश्यकता है। इन शास्त्रों की शिक्षाओं में विश्वास बढ़ाने वाला आलौकिक प्रकाश श्रीमन्नारायण की नवधा भक्ति के बिना प्राप्त नहीं होता। अत: प्रत्येक बालक व बालिका को यदि दो घण्टे अध्ययन में लगे तो दो घन्टे जप अवश्य करने चाहिये। इसके बिना इन सारे शास्त्रों में प्रत्यक्ष विश्वास व अनुभूति सहज में नहीं होती। यह बड़ा कठिन कार्य है क्योंकि जिस प्रकार स्वरों की सहायता के बिना व्यंजनों का उच्चारण असम्भव है उसी प्रकार बिना भगवान की भक्ति के धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ध्यान कोई भी सुन्दर वस्तु स्थायी और एक रस नहीं रह सकती है।

जैसे ही श्रीराम ने सरयु में प्रवेश किया, उन्होंने हनुमान जी से कहा– हे हनुमान तुमने दीर्घ काल तक जीवित रहने की प्रतिज्ञा की थी सो हे हनुमान तुम कलियुग के अंत में होने वाली प्रलय तक रहकर मेरी कथा का प्रचार करोगें। हे पवन पुत्र कलियुग में धर्म का केवल एक ही चरण रह जायेगा अतः उस समय भक्तों को तुम्हारी सहायता की विशेष आवश्यकता होगी, क्योंकि कलियुग में केवल हरि नाम कीर्तन ही मोक्ष का सुलभ मार्ग होगा।

—रामायण चलचित्र, सर्वश्री रामानन्द सागर

कल्कि अवतार न होता तो हिन्दू डोडो पक्षी की तरह इतिहास के पन्नों में रह जाता

वेदों, पुराणों, शास्त्रों में जो परमात्मा ने मनुष्य को जीने की कला सिखाई है उसी के अद्‌भुत ज्ञान से यह दुनिया चलती है। शुरु से ब्राह्मणों ने गहन अध्ययन से कंठस्थ करके समाज को खुले दिल से कुटियाओं में रहते हुए अयाचित जो मिला परमात्मा के सहारे उस पर सब्र करते हुए प्रजा को महलों में आनंदपूर्वक रहने, फलने-फूलने के हमेशा आशीर्वाद दिये अतः सृष्टि के आरम्भ से संसार में ब्राह्मणों, विद्वानों का प्रभुत्व रहा।

उदाहरण के लिये आपने चाणक्य (ब्राह्मण) को देखा जिसने नंद वंश से अपने अपमान का बदला लेने के लिये चंद्रगुप्त बालक को शास्त्रों की विद्या के द्वारा तैयार करके अपने लक्ष्य को पाया। ऐसे ही महाराष्ट्र की जीजाबाई ने शास्त्रों के ज्ञान द्वारा शिवजी को तैयार करके हिन्दू जाति के अपमान का बदला लिया।

1857 में एक मंगल पाण्डे द्वारा सैनिक छावनी में केवल यह तथ्य उजागर करने पर विद्रोह हुआ कि कारतूस चलाते वक्त मुँह से एक चमड़े का छर्रा खींचना पड़ता है, जिसमें हिन्दुओं की बंदूक में गाय की चर्बी और मुसलमानों की बंदूकों में सुअर की चर्बी लगी होती है। यह अचानक उभर के आने पर विद्रोह हो गया। विद्रोह का असली कारण आर्थिक न था बल्कि धार्मिक भावनाओं पर प्रहार था। अंग्रेजों की ही भारतीय फौज़ों ने अंग्रेजों केअत्याचारों के कारण जहां कही अंग्रेज मिले उन्हें गाजर मूली की तरह काट दिया।

इस प्रथम धार्मिक स्वतंत्रता संग्राम को अंग्रेजों ने गद्दारी का नाम दिया और अपने देश के विचारकों (Thinkers & Thoughters) के गहन परीक्षण, निरीक्षण करने के बाद यह फैसला लिया कि अब हमें भारतीयों पर हकूमत करने के लिये इन्हें अपने जैसा बनाना

होगा। जिन गौ-ब्राह्मणों गुरुकुलों की वजह से इन में नैतिकता, शक्ति ज्ञान बुद्धि बल बढ़ता है उन्हें खत्म करना होगा और इनकी निगाह से इन्हें गिराना होगा। इसके लिये रिटायर्ड चीफ जस्टिस लॉर्ड मैकाले ने ईस्ट भारत में स्कूलों की नीव रखी और अपने पिता को एक पत्र द्वारा सूचित किया देखें इसी ग्रन्थ में (गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी की जीवनी पृ. 23) कि हमारे अंग्रेजी स्कूलों की बड़ी आश्चर्य जनक प्रगति हो रही है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाला कोई भी हिन्दू अपने धर्म में विश्वास नहीं रखता है। अब हम हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन की योजना के बिना ही अपना मकसद सिद्ध कर सकते हैं। *धर्म के नाम पर अब हमारा पहले (1857) की तरह कोई विरोध नहीं होगा।* अर्थात अपने त्योहारों के दिन ही इन्हें इनके देवी-देवता याद आऐंगे व सत्कर्म जप पूजा व्रत करेंगे। दूसरे शब्दों में अंग्रेजियत इनके दिलों में उतर गई है। सज्जनों यही काम बड़े ही दिमाग से बखूबी पाकिस्तान की खुफिया ऐजेंसी (आई.एस.आई.) ने किया कि आतंकवादियों द्वारा कश्मीरी पंडितों पर अत्याचार करवाए। ऐसा करके वह भारत के दिमाग पर चोट करना चाहते हैं क्योंकि भारत के दिमाग की धुरी ब्राह्मण ही हैं। जब दिमाग ही नहीं रहा तो (लॉर्ड मैकाले की तरह) भारत वासियों के पास बचेगा ही क्या सब अपने आप खत्म हो जाएगा और इसी योजना को आज भारत के राजनेता भी अंजाम दे रहे हैं।

1947 में फिरंगियों (अंग्रेजों) ने जब भारतवर्ष से विदाई ली तो उन्होंने अपनी गहन कूटनीति से फूट डालो (Divide & Rule) शासन करो की नीति के अनुसार भारत के दो टुकड़े किये। मुसलमानों के लिये पाकिस्तान और हिन्दुओं के लिये हिन्दुस्तान। दोनो जातियों के खैरनुमा तब से ही नहीं आज दिन तक बने हुए हैं। प्रत्यक्ष में न दिखते हुए पीठ पीछे से किस प्रकार हिन्दू बाहुल्य ब्राह्मणों-गाय का

सर्वनाश किया है जिस कारण हिरण्यकश्यप को मारने वाले भगवान विष्णु ने समय से पहले श्री कल्कि अवतार लिया है।

किस प्रकार सम्पन्न हिन्दू बाहुल्य (Majority)अब खत्म होने के कगार अल्पसंख्यक (Minority) पर आ गई है। आज 63 वर्ष बाद की स्थिति का आकलन करें तो पाकिस्तान पूर्णत: मुस्लिम राज्य है, जहाँ हिन्दुओं के लिये कोई जगह नहीं है। यदि कुछ बचे भी हैं तो वह चोरी छिपे चोरों की तरह संघर्ष का जीवन जी रहे होंगे। दूसरी तरफ हिन्दुस्तान जहाँ हिन्दू ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, गुजराती, राजस्थानी, मारवाड़ी, जैनी, पंजाबी, सिख, जाट, मद्रासी, बंगाली, पहाड़ी, मुलतानी, असमी, बिहारी व अन्य सभी जातियाँ मुसलमानों के अलावा 63 वर्ष पहले बाहुल्य मे थीं। कुछ मुसलमान जो महात्मा गांधी की उदार नीति के कारण यहाँ उन्हें पनाह (रहने को स्थान मिला) वह यवन अल्पसंख्यक (Minority)में थे जो कि अब बहुसंख्यक श्रेणी (Majority Cateogary) में आ चुके हैं।

5 अप्रैल 2007 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने ऐतिहासिक फैसले में कहा कि यू.पी. में मुसलमान अब अल्पसंख्यक नही हैं। लोक सभा में जो अपनी सबसे ज्यादा सीटें रखता है वह आज मुस्लिम बाहुल्य राज्य है। आमदनी के हिसाब से भी देखें तो हिन्दू और मुसलमान आज भाई-भाई हैं। सालाना खर्च के मामले में राष्ट्रीय स्तर पर औसतन मुसलमान परिवार हिन्दू परिवार से ज्यादा खर्च करता है। औसत मुसलमान का लगभग खर्चा 40,327 रुपये है जबकि हिन्दू परिवार को खर्च 40,009 रुपये है। ग्रामीण इलाकों के मुसलमान भी खर्च के मामले में हिन्दुओं से आगे हैं।

आज मुस्लिम और ईसाइयों का दबदबा इस प्रकार है कि ओ.बी.सी. कोटे पर अल्पसंख्यक के नाम पर तमिलनाडू सरकार ने सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में सिर्फ मुसलमानों व ईसाइयों (Muslims & Christians) के लिये एक्सक्लूसिव की घोषणा की है, जबकि अम्बाशंकर कमीशन का गठन राज्य में हिन्दू-मुस्लिम-इसाई समुदाय के पिछड़े वर्ग के लोगों की संख्या का पता लगाने के

मकसद से किया गया था।

आज हमारे देश में एक अनोखी घृणित स्वार्थ की राजनीति चल रही है। हमारे नेता अल्पसंख्यक (Minority) राजनीति के नाम पर देश को आधार बनाकर यदि यही गंदी राजनीति करते रहे तो हिन्दू तो रहेगा ही नहीं, वह दिन दूर नहीं जब पूरा देश अग्नि कुण्ड में होगा और कोई चाह कर भी इस देश को नहीं बचा सकेगा।

दूसरे शब्दों में यदि जंगल में हाथी और शेर को (हिन्दुओं की बताई विभिन्न जातियों को) पिंजरे में बंद कर दिया जाए और कहा जाए कि जंगल की रक्षा बकरी (अल्पसंख्यक, अनुसूचित, आरक्षित जाति, भंगी चमार आदि) करेगी तो दोस्तों उस जंगल को कोई कितना बचा सकेगा जिस देश का राजा ही आरक्षण की देन होगा भला उस देश को कौन बचा पाएगा ?

ऐसे में जो ब्राह्मण, विद्वत समाज ये कह रहे हैं कि अभी कल्कि अवतार कैसे ? और क्यों ? वह तो 4,32,000 वर्ष बाद होना है तो साथियों तब तक की इंतज़ार तो क्या करोगे, *हमारे हिसाब से 200-300 वर्ष बाद ही हिन्दूजाति का व उसका स्वरूप ही न शेष बचेगा।* हमारे हिन्दू समाज में तो यदा-कदा वीर राणा प्रताप-शिवाजी-रानी झांसी- तातियां टोपे-वंदा वैरागी निकल कर आते हैं बाकि तो *हिन्दू अपने को हिन्दू कहने से भी डरते हैं। वह बिलकुल डोडो पक्षी की तरह है।* हिन्दू सिर्फ इतिहास के पन्नों में मलेशिया के नीचे दिखाए डोडो पक्षी की तरह देखने को रह जाता यदि कल्कि अवतार न होता।

डोडो पक्षी

(इसकी खूबी थी कि जब कोई उसे पकड़ने जाता तो अपना बचाव नहीं करता था बल्कि गर्दन झुका देता था। इस पर उसकी गर्दन मरोड़कर उसे पकाकर खाया जाता था।)

जो लड़ाईयाँ आज विदेशों में चल रही हैं वह सारी आज भारतवर्ष में होतीं। यह सब प्रभु कल्कि की देन है। कोई अपने घर को गंदा कलेशों में नहीं रखता। श्री गुरुजी की लेखनी से-

यह देखो कल्कि के खेल असुर आग में दिये धकेल
फंद हिन्द के टूटने लगे दुष्टों के दल टूटने लगे

अंग्रेजों ने हमारे व्यापार पर अधिकार किया, दस्तकारियों पर अधिकार किया, किसान की सारी कमाई पर अधिकार किया। अंत में खेती के धंधों पर कब्जा कर भारतवर्ष को जेल खाने के कैदियों की तरह राशन से तोलकर 7 छंटाक (500 ग्राम गेहूँ) रोटी और नाप कर कपड़ा देकर सारी कमाई इंग्लैंड भेजने का विचार कर रहे थे कि हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म के सर्वनाश का ऐसा उपक्रम देखकर इस देश के सच्चे स्वामी, हिरण्यकश्यप, रावण, कंस को मारने वाले, गौ ब्राह्मण और धर्म की रक्षार्थ युग-युग में अवतार लेने वाले, क्षीरसागरवासी महाविष्णु गोपाल कृष्ण ने कल्कि रूप को धारण करने का संकल्प करके श्री बालमुकुंद जी के रूप में ब्राह्मण के घर श्री हनुमान जी को जन्म दिया और अपने अवतार धारण करने की रहस्यमयी लीला का अनुभव दिया। कलियुग की बची कुची शेष आयु को काटने के लिये कल्कि भगवान का पूजन व नामोच्चारण और प्रचार करने का आदेश देकर, कल्कि भगवान के नूतन आश्वासन की प्रसन्नता का नगाड़ा बजवाया। भारतवर्ष के महामहिमापूर्ण प्राचीन तीर्थ, पदम् पुराण में वर्णित इंद्रप्रस्थ में हनुमान जी के द्वारा कल्कि भगवान की मूर्ति के पूजन का श्री गणेश करवाया।

अतः हमारा भविष्य उज्वल है कि हम हनुमान जी एवं महा विष्णु के 24 वें अवतार भगवान श्री कल्कि के संरक्षण में हैं जिनकी आराधना (नाम जाप पूजन हवन आदि) से आज के शासकों एवं उनके आकाओं की दमनपूर्ण (Destructive) कुचालों (Policies)से बचकर धर्म के सहारे हम रास्ता पा सकेंगे। क्योंकि—

धर्म प्यारा है उन्हें, भक्त प्यारे हैं उन्हें,
भक्तों ने ही तो जमी पर उतारा है उन्हें,
देख सकते वह कभी भक्तों को मजबूर नहीं,
कल्कि जी आए हैं संहार के दिन दूर नहीं

अतः अपने में हौंसला लाओ कल्कि जी पर विश्वास (Trust him) रखो वह तुम्हारा सब कुछ ठीक करेंगे।

लाद दे, लदा दे, लादने वाला साथ दे

—मामाजी

कोलकाता के ठाकुर

नैमिषारण्य तीर्थ में चमत्कारी श्री कल्कि

नैमिषारण्य तीर्थ स्वर्ग में कोई जगह नहीं धरती पर विद्यमान है। जो सृष्टि के आरंभ से है जहाँ आज भी सत -युग का वास है। यह वाक्य अपनी सखी से सुनकर ठाकुर की नगरी कोलकाता से आई दृढ़ इरादों वाली सुश्री इन्दु बंसल के मन में ठाकुर (रामकृष्ण परमहंस के अवतार लक्ष्मीनारायण जी) ने यह भाव जगाया कि इस पावन धरा पर भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगनी चाहिये। दिल्ली से 400 कि.मी. दूर कोई भी वहाँ जाने व मूर्ति लगवाने के लिये जब राजी न हुआ तो उन्होंने अपने बेटे कुमार हर्षित बंसल को 25.10.2009 को नैमिषारण्य तीर्थ भेजा और उसके साथ मामाजी भी गए। देखते ही देखते 3 महीने के छोटे से अंतराल में हाईकोर्ट की इजाज़त से भगवान श्री कल्कि की मूर्ति नैमिषारण्य तीर्थ में 20-01-2010 को स्थापित हुई। प्रस्तुत है महत्वपूर्ण दस्तावेज—

ललिता मंदिर में लगी सूचना

- यह धार्मिक क्षेत्र है अत: इसकी पवित्रता बनाए रखें।
- विशेष सहयोग हेतु प्रबंधक से संपर्क करें एवं रसीद प्राप्त करें अन्यथा न्यायालय रिसीवर को सूचित करें।
- यदि कोई कर्मचारी हाथ में दान लेते हुए पकड़ा गया तो उसके विरूद्ध दंडात्मक कार्यवाही की जाएगी।

आज्ञा से श्रीमान् विशेष सूत्र न्यायाधीश, जिला सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

★ श्री कल्कि बाल वाटिका ★

नाम, लगन, मन से कल्कि का जो तन रहते कर लेंगे, उनके अगले-पिछले कलगण कल्कि पल में हर लेंगे ।
देंगे स्थान उन्हें सतयुग के अग्रिम दल दरबारी में, धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में ।
लगे रहो कल्कि के प्यारों सतयुग की तैयारी में .....

1903/3, पहली मंजिल, गुरुद्वारा सीसगंज के सामने, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

फोन : 931253344, 23973383

* प्रधान
श्री ओम प्रकाश गुप्ता
बी-2, बहादुर अपार्टमेन्ट,
9 राजनारायण रोड,
सिविल लाईन, दिल्ली-54
23973383

* सैक्रेटरी
श्री योगेश गुप्ता
बी-2, बहादुर अपार्टमेन्ट,
9 राजनारायण रोड,
सिविल लाईन, दिल्ली 54
23863386

श्री कल्कि बाल वाटिका के प्रभारी:

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना
श्री अनिल पसौदिया, सुश्री इन्दु बंसल, श्री योगेश गुप्ता।

साहित्य प्रकाशन
श्री ओ.पी. गुप्ता, सुश्री अल्का गोयल, सुश्री मेघना गोयल, सुश्री इन्दु बंसल

मासिक पत्रिका
सुश्री मेघना गोयल, श्री लव जेटली, श्री राजसिंह

रामलीला की सवारी
श्री विनोद गुप्ता, श्री आदर्श सिंघल

तीर्थों पर आने-जाने की व्यवस्था
सुश्री मीना गर्ग, श्री नवीन गुप्ता

मानेसर मंदिर निर्माण
श्री राजीव गुप्ता, श्री सुभाष गुप्ता, सुश्री इन्दु बंसल

गुनगुनाने वाले यंत्र के प्रभारी
श्री आनन्द अग्रवाल, श्री राहुल अग्रवाल

सदर्भ सं. का/आ/मूर्ति/15 दिनांक :.20.1.2010...

माननीय श्री नन्दलाल अग्रवाल जी,
डिस्ट्रिक्ट जज
सीतापुर (उ.प्र.)

संदर्भ:- **युगावतार भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति माँ ललिता देवी मंदिर परिसर में लगाने हेतु**

विषय:- **दिव्य तेजवान मन्दिरों में प्रतिष्ठित भगवान श्री कल्कि जी के श्री विग्रह स्थापित वर्षों द्वारा अंकित**

मान्यवर महोदय,

26 अक्टूबर, 2009 सोमवार को आपने हमें युगावतार भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति माँ ललिता देवी मन्दिर, नैमीषारण्य में लगाने के लिए वार्तालाप के लिये जो समय दिया उसके लिये हम आपके बहुत आभारी हैं । वार्तालाप में हमसे भगवान श्री कल्कि जी की मूर्तियाँ किन-किन दिव्य तेजस्वी स्थलों पर कब-कब स्थापित हुई हैं उसका विवरण आपने जो मांगा था वह हम इस पत्र के साथ संलग्न कर रहे हैं ।

हम आशान्वित हैं कि अन्य शक्ति पीठों की तरह माँ ललिता देवी व भगवान श्री कल्कि जी की अहेतु की कृपा से आप द्वारा इस विशिष्ठ तेजस्वी शक्ति पीठ में युगावतार भगवान श्री कल्कि जी की संगमरमर की मूर्ति लगाने की सम्मति प्रदान करेंगे ।

मान्यवर महोदय, नैमिषारण्य शक्ति पीठ तीर्थ में युगावतार भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति लगने में आपकी सम्मति श्री कल्कि जी के इतिहास में एक अमर दस्तावेज होगी ।

हम पुनः आपका आभार प्रकट करते हैं ।

प्रेषक :- श्री कल्कि बाल वाटिका

O.P. Gupta,
प्रधान

कापी संलग्न :- श्री कल्कि मन्दिरों का विवरण
एक प्रति : श्रीमान रिसिवर महोदय
माँ ललिता देवी मन्दिर, नैमिषारण्य तीर्थ
द्वारा प्रबन्धक श्री ललित प्रसाद जी

An application has been received from Shri Kalki Bal Vatika through Pradhan Sri Om Prakash Gupta, V-2, Bahadur Apartment, 9, Raj Narain Road, Civil Line, Delhi-54, for seeking permission to install temple of Lord Kalki. It is averred that in several parts of India in different places, temple of Lord Kalki have been installed. The oldest one is of year 300-400 years. This process is repeatedly increasing in recent times. Installation of temple of Lord Kalki in the compound of ~~rekpown~~ Maa Lalita Devi in Naimisharanya will inevitably be in the interest of Deity, as it will augment the income and will add to the improvement of the temple of Maa Lalita Devi. Further the probability/chances of illegal encroachment by the intruders would be avoided, as reported by the Manager of temple of Maa Lalita Devi.

After considering the entire facts and circumstances and the interest of Deity, I hereby accord permission to construct temple of Lord Kalki in the verandah situated towards left of the eastern gate of the temple in front of Hawan Kund. After the temple is constructed and Deity is vivified, the whole of the temple of Lord Kalki shall vest in Maa Lalita Devi and all the offerings, gifts, income, donations etc. of every kind shall be the part and parcel of the temple of Maa Lalita Devi.

Inform all concerned.

(N.L.Agrawal)
District Judge,
Sitapur.
25.11.2009.

v सत्यनारायण व्रत कथा जिसका उद्‌भव नैमिषारण्य तीर्थ से हुआ। उसमें जिस प्रकार साधु नाम के वैश्य को भगवान ने समय समय पर स्वपन–वाणी अनुभव देकर उसकी गल्तियों को क्षमा करते हुए उसको परेशानियों से निकलने का रास्ता दिया। v उसी प्रकार भगवान श्री कल्कि अपने भक्तों को स्वपन, वाणी व जागृत अनुभवों द्वारा परेशानियों से निकलने का रास्ता दे रहे हैं। v इसका ज्वलंत उदाहरण नैमिषारण्य तीर्थ में माँ ललिता मंदिर में लगी भगवान श्री कल्कि की मूर्ति है। यह मंदिर भारत सरकार के अधीन है। इस विशाल मंदिर में 26.10.2009 को इसकी शुरूआत हुई। बसंत पंचमी 20.01.2010 को श्री कल्कि जी की मूर्ति प्रतिष्ठित हो गई। मात्र तीन महीने में यह असंभव कार्य विभिन्न स्वपन अनुभवों व उनके उपचारों द्वारा संभव हुआ।

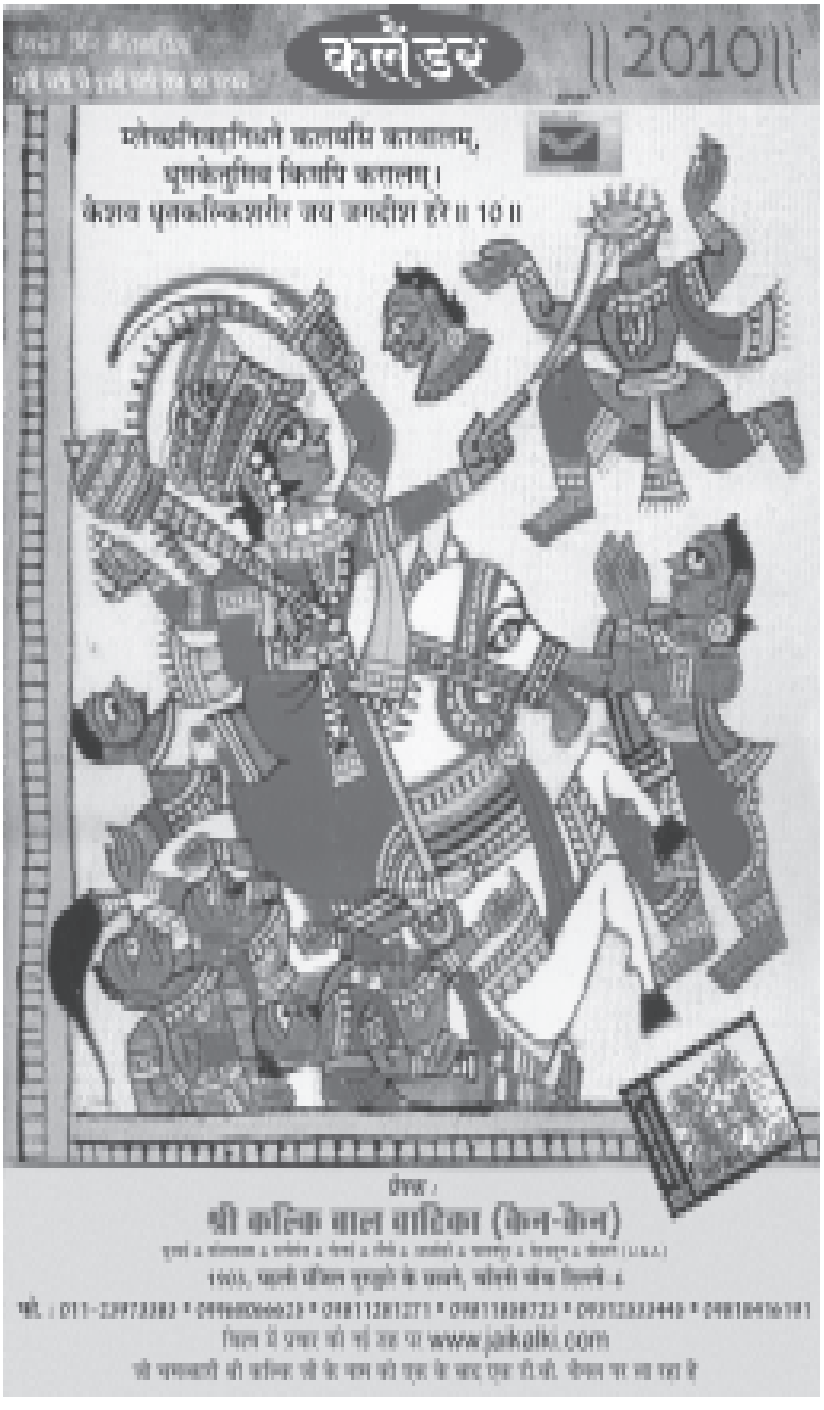

कलैंडर
2010
म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्,
धूमकेतुमिव किमपि करालम्।
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥ 10 ॥
प्रेषक :
श्री कल्कि बाल वाटिका (केन-केन)
www.jaikalki.com

कल्कि अवतार अंग्रेजी का घोर शत्रु क्यों?
या
भारत की शत्रु पाश्चात्य दानवता

धर्म कर्म की शत्रु, परलोक के विश्वास का प्राणियों में अन्त करने वाली, भारतवर्ष के आबाल वृद्ध बनिता, सब के चरित्र का विनाश करने वाली, परलोक का लोप करने वाली, अर्थ धर्म काम मोक्ष में से धर्म और मोक्ष को हटा कर केवल अर्थ और काम में भारतवासियों को बन्दी बनाने वाली, परलोक और ईश्वर के ज्ञान में असमर्थ करने वाली, खाली भोग लिप्सा जिभ्या और उपस्थ के भोगों में रुचि भड़काने वाली, मनुष्य से पशु बना देने वाली, ब्राह्मणों को धर्म से गिराकर बूचड़ बना देने वाली, भोगों की लालसा लिप्सा में लालायित बना देने वाली, जब अंग्रेजी माया ने भारतवर्ष में अपना पदार्पण किया और जिस देश से वह राक्षसी माया आई उस देश के निवासियों ने जैसे कोई अनजाने में विष खाले, तो भी विष अपना प्रभाव करता है उन्होंने भारतवर्ष में केवल अपना आधिपत्य ही नहीं जमाया वरन् दहीके धोखे में चूना खा गये और क्षीर सागर वासी महाविष्णु का द्रोह करके उन्होंने अपने महाविनाश का बीज बो लिया। वह अंग्रेज डा॰ सर टामस रो जिस को वर्तमान का संसार देश-भक्त, त्यागी और महात्मा मानता है जिसने अंग्रेजी माल पर टैक्स न लगने का वरदान मुसलमान शासकों से माँगा था और तिजारत के लिए कोठियां बनाने के लिये जमीन मांगी थी वह अंग्रेज जाति का घोर शत्रु प्रमाणित हुआ और उसके हाथों से अंग्रेज जाति का वह सर्वनाश हुआ जैसे बाप के हाथ से बेटा अनजाने में मारा जाए।

भारतवर्ष में अंग्रेजों ने आधिपत्य जमाते ही हिन्दू धर्म के साथ क्या-क्या शत्रुता करी? यहीं के टैक्सों की आमदनी से,

भारत वर्ष को हमेशा से हमेशा तक अपने अधिकार में बनाये रखने के लिये यहाँ ईसाई मिश्नरियों के द्वारा अपने धर्म का प्रचार किया और भारतवासियों को हिन्दू धर्म से घृणा दिलवाई। भारतवर्ष का त्याग और तपस्या द्वारा परलोक और ईश्वर का ज्ञान कराने वाला मार्ग, सुखों और भौतिक प्रलोभनों को दे दे कर भारतवासियों से छुड़वा दिया गया। धर्म कष्ट से प्राप्त होता है और अध:पतन सुखों से प्राप्त होता है, इसलिए भोली भाली जनता को गिरने में देर नहीं लगी।

अपनी जड़ें सुदृढ़ करने के लिये इन्होंने अत्यन्त निर्मूल, नितान्त झूठ, आदिवासी का विचार जान बूझ कर भारतवर्ष में लगातार स्कूलों और कालिजों के द्वारा भारतवर्ष की सन्तानों में भर दिया और मूर्ख बनाकर एक दम गधों की तरह हाँक दिया और सब आजतक गधों की तरह हके चले जा रहे हैं और पीछे मुड़ कर देख भी नहीं रहे हैं।

उन्होंने फूट डालने के लिये शोषक व दलित वर्ग का सिद्धान्त प्रस्तुत किया और अपने स्वार्थ के लिये निर्दयता से दीर्घकालीन शत्रुता का बीज बो दिया। ब्राह्मणों ने आखिर तक अंग्रेजों के खानपान वेशभूषा व चाल चलन व शिक्षा का विरोध किया और सबकी दृष्टि में बुरे बन कर भी अंग्रेज के संसर्ग से विमुख और दूषित हुए वे हिन्दू समाज को अध:पतन से बचा न सके। यदि ब्राह्मणों के ऊपर विश्वास करके अंग्रेज की प्रत्येक वस्तु को अस्पृश्य समझ कर त्याज्य समझा जाता तो अंग्रेज का व्यापार भारतवर्ष में जड़ें न जमा पाता और इंगलैंड शस्त्र अस्त्रों की उन्नति न कर पाता। इस घर को

आग लग गई घर के चिराग से, भारतवासियों ने अंग्रेजी माया की चकाचौंध में फंस कर ब्राह्मणों से विद्रोह किया और धर्म की आज्ञाओं का अविश्वास किया और मक्खी जैसे मकड़ी के जाले में फंस जाती है इसी प्रकार साधन शील और संतोष को त्याग कर कुत्ता जैसे रोटी पर लपकता है ऐसे अंग्रेजों के

पराधीन हो गये और भारत के शत्रुओं की उन्नति में साधन और सहायक बन गये। भारतवर्ष के और अपने और अपनी संतानों के और अपनी संस्कृति के शत्रुओं के चंगुल में फंस गये और अपना सर्वस्व खो बैठे और अपने विनाशकारियों की उन्नति में साधन और सहायक बन गये। रिटायर्ड चीफ जस्टिज लार्ड मैकाले ने भारत में सर्वप्रथम भारत के नवयुवकों में पश्चिमी सभ्यता के प्रचार के लिए और भारतवासियों के मन में ब्राह्मणों के धर्म के प्रभुत्व और प्रभाव को नष्ट करने के लिए यूनिवर्सिटियों की नींव डाली। उसके ये शब्द थे, ''ब्राह्मण हमारे घोर शत्रु हैं जब तक हम इनके प्रभाव को नष्ट नहीं करेंगे और भारतवर्ष की सन्तानों में तर्क से प्रत्येक बात समझाने की और ग्रहण करने की प्रवृत्ति पैदा नहीं करेंगे हमारी जड़ें नहीं जम सकती।'' इसलिये ब्राह्मणों से और हिन्दू धर्म से अरुचि और द्वेष फैलाने के लिये, उत्पन्न करने के लिए अंग्रेजी शिक्षा प्रचलित की गई। उसी का प्रमाण स्वामी विवेकानन्द हैं जो धर्म की मजाक उड़ाया करते थे। अन्ततोगत्वा प्राचीन पद्धति के अनुसार साधन संपन्न श्री राम कृष्ण परमहंस के हाथ से ही अंग्रेजी माया रूपी मगरमच्छ के मुँह से उनका उद्धार हुआ नहीं तो खाये गये थे इसमें सन्देह नहीं है।

मुगल शासक से व्यापार के लिए जमीन व रहने के लिए भवन

उसी का दूसरा ज्वलंत प्रमाण मैं हूं। अंग्रेजी शिक्षा पढ़ते पढ़ते मेरा भी मस्तिष्क दूषित हो रहा था। परन्तु पुराणों की पद्धति में वर्णित श्री कल्कि भगवान महाराज के अवतार के पूजन और नाम जप की महिमा से सम्पन्न महर्षि बालमुकुन्द जी महाराज के द्वारा प्रत्यक्ष अनुभूतियों के द्वारा मेरा उद्धार हुआ।

झूठ व कपट की हद

ब्राह्मणों का जमाना जो सीमित बताया जा रहा है वह भी नितांत असत्य है। मनुष्य की पैदाइश बन्दरों से बताई जा रही है यह भी सरासर मिथ्या है। वेदों की उत्पत्ति का समय 6000 वर्ष बताया जा रहा है। यह सरासर झूठ है। हमारे चारों वेद ही अंगिरा ऋषियों द्वारा एक अरब 97 करोड़ 29 लाख 49 हजार 73 वर्ष पूर्व सृष्टि के आरम्भ में लिखे थे। चाहें तो हर वेद की भूमिका एवम् मानव की उत्पत्ति इस्कान टैम्पल इस्ट आफ कैलाश में वैदिक एक्सपो की पहली मंजिल पर जाकर देखें व पढ़ सकते हैं। वेद और ब्राह्मण अनादि काल से भगवान के प्यारे हैं। जो कुछ भी धर्म पर संकट आये वह सब प्राणियों की परीक्षा है वे इसलिए नहीं कि धर्म असम्माननीय था।

इन्होंने हमारी विचारधाराओं को हटाकर अपनी पथभ्रष्ट करने वाली नारकीय भौतिक विचार धारायें जो मनुष्य जाति को कोई देवत्व प्राप्ति कराने और परलोक का ज्ञान कराने में लाभकारी और उपयोगी नहीं उनको ठूँस ठूँस करके, हमारी सन्तानों के मन दूषित कर दिये और उनके आचार की हत्या करके उनकी हत्या सी कर दी। आज वह समय आ गया है कि ईश्वर ही स्वयं जिसको अलौकिक और दिव्य ज्ञान देकर और उसके अन्दर अपने तेज का समावेश करके न भेजें तो इस समय की विद्यायें ईश्वर के ज्ञान से व पारलौकिक ज्ञान में अन्धे और लंगड़े ही उत्पन्न कर सकती है। आज की सृष्टि पशु व पक्षियों से भी बदतर हो चुकी है। जिसका ध्येय खाना पीना मौज मस्ती **(Eat, Drinking be Marry)** करना रह गया है।

जे नर राम नाम नहीं लेनदे, ते नर कूकर शूकर खर सम

—स्वामी रामतीर्थ

हमारे हिन्दू धर्म के, 24 अवतारों को जैनियों के 24 तीर्थंकरों की नकल बताकर उपहास किया जा रहा है आगे आने

वाली सन्तानों के लिए ऐसे गन्दे साहित्य का सृजन कर दिया कि हिन्दुओं का इतिहास ही नहीं है। यह 18 पुराण यह महाभारत यह हमारे इतिहास ही तो हैं। कुत्ते और बिल्लियों को हमारे इतिहास में स्थान नहीं है। हमारा इतिहास यति-सती पतिव्रता शूरमा दानी और भक्तों का इतिहास है। यही हमारी संस्कृति है, यही हमारा सर्वस्व है। हमारा इतिहास हमारे यहाँ की देवियों को क्षमा-शील-सन्तोष की मूर्तियां, लक्ष्मी, पार्वती, दमयन्ती, सावित्री, रानी झांसी, अहिल्या बाई, रानी भवानी, इनकी प्रति मूर्ति बनाता है। इन्हीं के पाठ से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। विदेशी विधर्मी जातियों ने हमारे इसी उज्ज्वल ध्येय पर कुठाराघात किया और ऋषियों की तपोभूमि, यज्ञभूमि, ब्रह्मावर्त और भारतवर्ष को विषयी, लोभी, लालची और जिभ्या के स्वाद के लिए गिद्धों की तरह परमांसाहारियों तथा वेश्याओं की सन्तानों जैसे प्राणियों से भर दिया। ये सब कलियुग के सैनिक सिद्ध हुए। जिस प्रकार उत्थान के शिखर पर चढ़े बिना अधःपतन का गर्त दिखाई नहीं देता। उसी प्रकार बिना कल्कि भगवान के दिये हुए दिव्य ज्ञान के इस झूठ और सत्य का निर्णय होना असम्भव था। आज जो बात मैं लिख रहा हूँ श्री कल्कि भगवान के बल पर और कल्कि भगवान के नाम की महिमा से दी हुई दृष्टि के बल पर लिख रहा हूँ। ये परम सत्य और ध्रुव सत्य है। ये सत्य की चरम सीमा है। जिस प्रकार उदयाचल पर प्रगट हुए भगवान भास्कर से दिशाओं का ज्ञान होता है, उसी प्रकार भगवान कल्कि ने स्वयं अनुभव देकर यह सत्य सिद्ध कर दिया है कि ब्राह्मण पृथ्वी के देवता हैं। भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण जिनको ब्राह्मणों ने ईश्वर का अवतार बताया है और जो कुछ धर्म ग्रन्थों में कल्याणकारी धर्म के सिद्धान्त बताये हैं वह मिथ्या नहीं है वह शाश्वत सत्य है।

शुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच

–तुलसीदास

अंग्रेजी माया ने अपना काम किया। जो काम मुसलमान

शासक 900 वर्ष में न कर पाये वह काम अंग्रेजों ने 150 साल में कर दिया और अब भी अपने उत्तराधिकारी शिष्यों द्वारा करा रहे हैं। वर्तमान काल के सुधारवादी नेतागण और हिन्दू धर्म में दोष दृष्टि रखने वाले प्राणी अंग्रेजी माया की ही पैदावार है, अतएव ये सब कलियुग के सैनिक हैं। इन सबके हृदय का भाव मदिरा की दुर्गन्ध की तरह गौ ब्राह्मणों के विद्वेष के रूप में प्रगट हो रहा है। ये अंग्रेजी माया की देन है। अंग्रेजी शासन ने भारत की सन्तानों के मन से परिवार पोषण धर्म का सम्मान, माता पिता का सम्मान, गऊ ब्राह्मण का सम्मान सद्धग्रन्थों के सम्मान की भावनाओं को हटा दिया कि अपने अर्जन किये हुए धन को, इनकी सेवा में लगाने से विमुख कर दिया। हमारे व्यापार पर अधिकार किया, दस्तकारियों पर अधिकार किया, किसान की सारी कमाई पर अधिकार किया अन्त में खेती के धन्धे पर कब्जा करने वाले थे और भारतवर्ष को एक जेलखाने की तरह कैदियों की तरह खाली रोटी व लंगोटी, तोल तोल कर सात सात छटांक रोटी और नाप नाप कर जेलखाने के बन्दियों की तरह कपड़ा देकर सारी कमाई इंगलैंड भेजने का विचार कर ही रहे थे कि ऐसा हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म के सर्वनाश का उपक्रम देखकर इस देश के सच्चे स्वामी हिरण्यकश्यप के मारने वाले, रावण व कंस के मारने वाले गौ ब्राह्मण और धर्म की रक्षार्थ युग युग में अवतार लेने वाले क्षीर सागरवासी महाविष्णु गोपाल कृष्ण ने कल्कि रूप के धारण करने का संकल्प करके, श्री बालमुकुन्द जी के रूप में ब्राह्मण के घर हनुमान जी को जन्म दिया और अपने अवतार धारण करने की रहस्यमयी लीला का उन्हें अनुभव दिया और कलियुग की बची खुची शेष आयु को काटने के लिए कल्कि भगवान का पूजन व नामोच्चारण और प्रचार करने का आदेश देकर कल्कि भगवान के उस नूतन आश्वासन की प्रसन्नता का नगाड़ा बजवाया और भारतवर्ष के महामहिमापूर्ण प्राचीन तीर्थ पद्मपुराण में वर्णित इन्द्रप्रस्थ में हनुमान जी के द्वारा

कल्कि भगवान की मूर्ति के पूजन का श्री गणेश करवाया। संस्कारी भक्तों को प्राचीन पूर्व जन्मों के नाम बताकर और उनमें प्रेम का संचार करके मालायें जपवाई।

पुराणों पर ही मैं विशेष जोर क्यों दे रहा हूँ कल्कि अवतार या राम कृष्ण अवतार की पूजा के बारे में जितना स्पष्ट निर्देश पुराणों में है जिनसे मुझे दैवी अनुभव हुआ वो वेदों में उस प्रकार से स्पष्ट वर्णित नहीं है। पुराणों की बताई हुई पूजन विधि से ही लोक परलोक वैकुण्ठ स्वर्ग आवागमन पित्रों के श्राद्ध, पुनर्जन्म का ज्ञान, हिन्दू धर्म की सत्यता का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ और उससे सबसे बड़ी बात मिली कि वो प्राचीन ध्रुव प्रह्लाद का प्यारा धर्म ही नारायण को अत्यन्त प्रिय है। यह उनका ही अपना धर्म है, यह उनका ही अपना देश है जहाँ वे स्वयं अवतार लेकर आते हैं। उसको छोड़ के, धर्म के महत्व को कम करने के लिए जिन जिन लोगों ने उपासना की पद्धितियाँ व मुकाबले के लिए नये नये धर्म चलाये वह सब से बड़ी भारी मूर्खता हुई। सुधार के नाम पर जो जो भी किया गया वह प्राणियों के हित पर कुठाराघात ही हुआ। ये सब लोग सन्माननीय, अनादि अनन्त वात्सल्य भाव परिपूर्ण जीवों के अनादि उद्धारकर्ता नारायण विष्णु की भक्ति से और विनीतता से सम्मान और भय से प्राणियों को दूर हटाते गये। कर्मकाण्ड की शोभा से परिपूर्ण पूजन का, कर्म धर्मों का लोप करते चले गये।

दम्भीन निज मत कल्प कर, प्रगट कीन्ह बहु पन्थ।।

—तुलसीदास

कल्कि भगवान का पूजन और जप भारतवर्ष में से अंग्रेजी राज्य को हटाने के लिए और हिन्दू धर्म की स्थापना के लिये किया गया। कल्कि भगवान ने जितना भी कुछ जिसके द्वारा किया गया उस पर अपनी सही की मोहर लगा दी। इस प्रकार कल्कि भगवान का व भक्तों का गूढ़ रहस्यमय सम्पर्क स्थापित हुआ। अनुभव द्वारा भक्तों को विश्वास देकर नये सिरे से भक्ति

सिखाई व करवाई गई और तत्काल हाथों फल मिलता गया, जिससे भक्तों में विश्वास बढ़ता गया। अंग्रेजी राज्य चला गया। नेताओं ने हिन्दू धर्म के साथ दगा करी और सर्व प्रथम उसी धर्म को नष्ट करने के लिए सारी शक्ति लगा दी। ब्राह्मणों को दृष्टि से गिराया गया। गौएं मारी गई। बूचड़खाने बढ़ाये गए। कला के नाम पर नैतिकता विरोधी तत्त्वों को उकसाया गया। रजोगुण, तमोगुण को बढ़ाकर सतोगुण को हटाया गया। क्षमाशील सन्तोष को हटाकर भोग विलास की प्रवृत्ति को भड़का दिया गया। धर्म को व्यर्थ और प्रगति में बाधक समझा गया। इधर कल्कि भगवान का अवतार हो चुका, भक्तों में उनके अनुभव आ चुके, प्रकाश और दृढ़ता कल्कि भगवान ने भक्तों को प्रदान कर दी। अपने नाम प्रचार व घोषणा के लिए हुक्म दिये। दूसरी तरफ साथ ही साथ अनेक प्रकार के मत मतान्तरों के गुरुओं ने और गुरु बनने की इच्छा वालों ने संसार भर के गुरुओं के और शिष्यों के परम पूजनीय युगान्त के अन्तिम अवतार श्री कल्कि भगवान का प्राणियों को भजन नहीं करने दिया। अपने अपने दायरे में कटघरों में मवेशियों की तरह, स्त्रियों और पुरुषों को घेर घेर कर दुकानदारियाँ सी बना बना कर बैठ गए। ये बड़ा भद्दा काम हुआ। कल्कि भगवान के प्रकट होने के बाद जो ग्रन्थ लिखे जायेंगे उनमें ये भी एक आश्चर्य लिखा जाएगा कि जब कल्कि भगवान का अवतार हुआ तो कलियुग के गुरूओं ने चेलों को कल्कि भगवान का भजन नहीं करने दिया। ऐसा घोर समय आया कि जिनको कल्कि भगवान ने पुकार के लिए नियुक्त किया उनके अतिरिक्त किसी ने कल्कि अवतार की पुकार की भी आवश्यकता न समझी जो कि अनिवार्य थी।

जेहि राखें रघुबीर ते उभरे तेहि काल में।

(तुलसीदास)

—लक्ष्मी नारायण (आयुर्वेद शास्त्री)

एक गुलामी से दूसरी गुलामी तक का सफर

इस्लाम की गुलामी में हिन्दुओं के संस्कार जिंदा रहे परंतु ईसाई गुलामी में हिन्दुओं के संस्कार मर रहे हैं

गुलामी से गुलामी तक का सफर आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व शुरू हुआ। मुसलमान (विदेशी) भारत में आए और उन्होंने हम पर राज्य किया। 18वीं सदी अर्थात् 200 वर्ष पूर्व, अंग्रेज भारत में याचक बनकर आए और देखते ही देखते अपनी कुशल कूटनीति से शासक बन गए। हम हिन्दू ऐसे डरपोक हैं कि यातना सहते हुए बुझे मन से सिर्फ परमात्मा को याद करते रहे लेकिन मैं नही कोई हमारी तरफ से दूसरा लड़े, मरे, करे, हिम्मत करके खुद आगे न आए। जो आये वह आज इतिहास के पन्नों में अमर हो गए जैसे–वीर हकीकत राय, बंदा वैरागी, भामा शाह, राणा प्रताप, मंगल पाण्डे, जीजा बाई, शिवाजी, रानी झांसी, तातियाँ टोपे, लाला लाजपत राय, खुदीराम बोस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी रामतीर्थ, तिलक महाराज, गोखले, नाना राव पेशवा, आदि और उनका साथ हमेशा दैवीय शक्तियों ने दिया और देती रहेंगी क्योंकि भारत भगवान का घर है, इसी भूमि पर

अंग्रेज व्यापार व रहने के लिये जमीन मांगते हुए।

अंग्रेज याचक से शासक

सब अवतार हुए हैं।

हमारा इतिहास यति–सति, पतिव्रता, शूरमा, दानी और भक्तों का इतिहास है। यही हमारी संस्कृति और सर्वस्व है। इसमें देवियों को क्षमाशील, संतोष की मूर्तियाँ, लक्ष्मी, दुर्गा, पार्वती(ललिता), दमयन्ती, सावित्री, अहिल्या बाई, रानी भवानी, रानी झांसी, इनकी प्रतिमूर्ति बनाना है। इन्हीं के पाठ से भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। इन विदेशियों ने हमारे उज्जवल ध्येय पर कुठाराघात करके ऋषियों की तपोभूमि, **यज्ञभूमि**, ब्रह्मावर्त, अजनाभवर्ष–भारतवर्ष को विषयी, लोभी, लालची जिव्हा के स्वाद के लिए गिद्धों की तरह परमांसाहारियों तथा वेश्याओं की सन्तानों जैसे प्राणियों से भर दिया। हमारे 18 पुराण, महाभारत, रामायण जैसे इतिहास को पीछे धकेलकर युवा पीढ़ी और आनेवाली सन्तानों के लिए ऐसे गंदे साहित्य का सृजन कर दिया कि हिन्दुओं का कोई इतिहास ही नहीं है।

मंगल पांडे के कहने पर 1857 का विद्रोह

सन् 1857 में मंगल पांडे के कहने पर कि हिन्दू की बन्दूकों में गाय की चर्बी और मुसलमानों की में सुअरों की चर्बी लगी होती है, इसे हिन्दू और मुसलमानो ने अपने धर्मों के प्रति अपमान माना और अंग्रेजों के विरूद्ध एक होकर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम लड़ा। अंग्रेजों की ही भारतीय फौजो ने अंग्रेजों के अत्याचारों के कारण जहाँ पर अंग्रेज मिले उन्हें गाजर–मूली की तरह काट दिया।

अंग्रेजों की रातों की नींद उड़ गई और उन्हें समझ नहीं आया की एक ब्राह्मण युवक मंगल पांडे के कहने पर 1857 का विद्रोह कैसे हो गया। यह सब जानने के लिए उन्होंने ब्रिटिश राज्य के चुने हुए विचारकों का एक दल भारत भेजा कि भारतीयों की मूल शक्तियों तक पहुँच कर पता लगाऐं कि ऐसी अनहोनी क्यों हुई

और भविष्य में इसके लिए कैसी **सुदृढ़ योजना** (constructive planning) का इस्तेमाल किया जाए।

विचारकों के दल ने महीनों की खोज के बाद इंग्लैंड में महारानी विक्टोरिया को जो तथ्य भेजे उनके कुछ अंश और उनका निवारण इस प्रकार बताया–

भारतीय संस्कृति—भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली (Joint family system)–संयुक्त प्रणाली में जो मनुष्य को सुरक्षा मिलती थी।

विदेशी विचारकों के तथ्य—उसे इन्श्योरेंस के माध्यम से समझा कर व बड़े परिवार होने के अवगुणों से जनता को परिचित कराया जाए ताकि हर युवा परिवार अलग रहना पसंद करे।

भारतीय संस्कृति—प्रत्येक परिवार का एक ब्राह्मण (पुरोहित) होता है। सब परिवार वाले बच्चा पैदा होने से बुजुर्गों के मरने तक पंडित जी से पूछकर वही करते हैं जो वह कहता है। ये ब्राह्मण को भगवान से ऊँचा स्थान देते हैं।

विदेशी विचारकों के तथ्य—इसके लिए हमें ब्राह्मण को इनकी दृष्टि से शिक्षा द्वारा (convent education) गिराना पड़ेगा। इनकी इस योजना ने इतना बेहतरीन काम किया कि अंग्रेजी पढ़े लिखे को सरकारी नौकरियाँ सुलभता से मिल जाती हैं जबकि विद्वान पंडित के लिए नौकरी के लिए कोई स्थान नहीं है।

भारतीय संस्कृति—ब्राह्मण तो अपना पंचाग (ephemeris) खोल कर बता देते हैं कि इस दिन कुंभ का मेला होगा, ग्रहण पड़ेगा, अमुक पर्व (दिवाली, होली, दशहरा) पड़ेंगें। जनता स्वयं ही उस दिन लाखों की संख्या मे इलाहाबाद, गंगा–यमुना और पवित्र नदियों के किनारे स्नानार्थ पहुँच जाती है।

विदेशी विचारकों के तथ्य—हम लोगों को जनता इकट्ठा करने के लिए लाखों रुपए खर्च करने पड़ते हैं।

भारतीय संस्कृति—हम यहाँ के गुरूकुलों (school/college) में गए और देखा कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बालकों के साथ कोई मतभेद नहीं होता। सभी के सिर घुटे हुए होते हैं और वो गले में यज्ञोपवीत (sacred thread), सिर पर चमकती चोटी और गेरूए वस्त्र पहने हुए हैं। वे गुरू द्वारा बताए कठिन से कठिन कार्य करने व सहने के लिए तत्पर रहते हैं। कठिन व जटिल कार्य गुरू उनसे इसलिए करवाते हैं ताकि वह गृहस्थ आश्रम में जाकर टूट न जाऐं।

विदेशी विचारकों के तथ्य—यहाँ हिन्दू बालक व बालिकाओं के लिए साफ़ सुन्दर आराम देह (luxurious) अंग्रेजी स्कूल खोलने चाहिए। यदि हमारी शिक्षा योजना मजबूती के साथ प्रचलित रहेंगी तो 30 साल के बाद प्रतिष्ठित परिवारों मे मूर्ति पूजक नही रह जाएगें। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके कोई भी हिन्दू अपने धर्म मे अधिक विश्वास नहीं रखेगा। सिर्फ अपने त्योहारों के दिन यह अपनी वेशभूषा अथवा खुशी को प्रदर्शित करेंगें। आगे चलकर यह हमारे त्योहार तो मनाएगें ही और अपने त्योहारों पर जब तक इनके बुजुर्ग रहेंगे अपनी वेशभूषा पहनकर बेमन से खुशियों का इज़हार करेंगे। हम धर्म परिवर्तन की योजना के बिना ही अपना मकसद सिद्ध कर सकते हैं।

(साथियों देखो आज विदेशी त्योहारों ने कैसा अपना कुशल प्रभाव जमाया है कि आज जन्मदिवस, शादी की सालगिराह, शादी की रजतजयन्ती, स्वर्ण जयन्ती, क्रिसमिस दिवस, वैलंटाइन दिवस, फादर्स डे, मदर्स डे, रोज़ डे, चॉकलेट डे, टीचर्स डे की प्रथा हमारे हिंदू परिवारों मे ऐसी प्रचलित हुई है कि धनवान समाज को देखकर उलाहने से बचने के लिए मध्यम वर्ग जो प्राचीन त्योहार निभा रहे हैं को मनाने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। अंततोगत्वा हमारे त्योहारों को रूढ़िवाद, फिजूलखर्ची, समय की बर्बादी–क्या रखा है कि संज्ञा देकर–कालांतर में यह प्राय लुप्त हो जाऐंगें। जो धर्म हमारे प्रतिदिन जीवन में जीने से मरने तक काम आता है उसका तो जहाँ भी चार सम्पन्न पढ़े लिखे लोग–समुदाय बैठेगा वह धर्म ब्राह्मण गऊ का

उपहास करेगा लेकिन हमारे प्रचलित रीति रिवाजों को अपने रिवाजों में जोड़कर उनकों न चाहने पर भी समाज में दिखाने के लिए जन्मदिवस, सालगिराह मनानी पड़ेगी क्योंकि दूसरे रिश्तेदार साथी उन्हें कहकर अथवा दूसरों से कहलवाकर तारीखें याद दिलवाकर मज़बूर कर देते हैं जैसे डंडे मार–मारकर पहले औरतों को सती किया जाता था। पहले मनुष्य शारीरिक रूप से गुलाम थे लेकिन मानसिक रूप से अंग्रेजो से घृणा करते थे लेकिन अब हम बाहर और अन्दर दोनों तरह से अंग्रेजिता के गुलाम हो गये।)

भारतीय संस्कृति—गुरूकुल/हिन्दू विद्यालयों में हमारा स्वागत किया गया और हमें निम्न श्लोक के साथ पंचामृत दिया गया।

अकाल मृत्यु हरणं, सर्वव्याधि विनाशनं,
विष्णु पदोदकं पीत्वा, पुनर्जन्म न विद्यते।

उस श्लोक और पंचामृत का जब हमने विश्लेषण किया तो उसमें गाय का दूध, घी, शहद, तुलसादल, गंगाजल पाया। वास्तव में इसके सेवन से बहुत सारी प्रचलित बिमारियाँ जैसे ब्लड प्रेशर, शुगर, हार्ट अटैक, को रोकने की क्षमता है।

विदेशी विचारकों के तथ्य—हमारी अंग्रेजी शिक्षा से गऊ में इनकी श्रद्धा स्वतः खत्म हो जाएगी जो फिर **एक पशु के नाम से जानी जाएगी**। गाय के द्वारा घी, दूध, दही और गोबर के द्वारा उसके लिए हमे बूचड़खानों के लिए तेज़ धार वाली मशीनें भेंजनी चाहिऐं ताकि लाखों की तादाद में इस पशु–धन को यहाँ से यह कहकर हटाया जाएगा कि सूखा पड़ने पर चारे की कमी नहीं रहेगी।

भारतीय संस्कृति—ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा भारतीय भाषाओं में दी जाए।

विदेशी विचारकों के तथ्य—लेकिन रिटायर्ड चीफ जस्टिस लार्ड मैकाले इसके विरूद्ध थे कि अदालतों की भाषा अंग्रेजी हो। जिसके द्वारा इंग्लैंड का कामनलौ यहां लागू हो जाये।

भारतवर्ष सोने की चिड़िया को पहले गोरों ने और अब काले अग्रेजों ने चूसा *—श्री के.के. बागड़िया*

भारतवर्ष को सोने की चिड़िया कहा जाता था। अठारवीं शताब्दी में हमारा विश्व के आयात निर्यात में 78 प्रतिशत हिस्सा था। जब हम स्वतंत्र हुए तब हमारा हिस्सा 2 प्रतिशत रह गया था और अब केवल 1 प्रतिशत ही रह गया है। हम इतने ज्यादा पिछड़ गए हैं। इसके मुख्य कारणों पर नजर डाले तो पता चलता है कि 17 वीं शताब्दी तक सब कार्य हाथ से होते थे और उसमे हम बहुत कार्यकुशल थे। अठारवीं शताब्दी में औध्योगीकरण की शुरुआत हो चुकी थी और उसमे योरोपिय क्षेत्र मुख्य था। अंग्रेजों ने भारतवर्ष में अपने पंजे जमा लिये थे। सारा कच्चा माल हमारे यहाँ से बहुत सस्ता ले जाते थे और वही माल मशीनों द्वारा पक्का बनाकर बहुत ऊँची कीमतों पर बेचते थे। हमारे मज़दूरों को मात्र लंगोटी और खाने को मज़दूरी के रूप में पेट भर रोटी भी नसीब नहीं होती थी और वही विदेशी लोग हमको हमारे ही कच्चे माल से बनाया हुआ कई कई गुना कीमतों पर बेचते थे। इसलिये अंग्रेजों ने हमारे देश का औध्योगीकरण नहीं होने दिया और हम इतने ज्यादा पिछड़ गए कि अभी तक भी उस कमी को पूरा नहीं कर पाए। अठारवीं और उन्नीसवीं शताब्दी यानि कि 200 साल का पिछड़ापन इतना ज्यादा बढ़ गया कि अब उसको पूरा करना बहुत कठिन हो गया है। हमारी सरकार भी इसके लिये ज्यादा तत्पर नहीं है। अभी भी कच्चा लोहा एवं एनेक खनिज पदार्थ ऐसे ही निर्यात कर देते हैं। हमारी सरकार को चाहिये कि हम पक्का माल ही बनाकर निर्यात करें। जिस तरह चीन ने विदेशों से तकनिकी सहायता लेकर बड़े बड़े उद्योग लगाए, हमें भी लगाने चाहिऐं जिससे हम किफायती कीमतों पर अच्छा माल बनाऐं और कम से कम चीन की रफ्तार से तो आगे बढ़ सकें। अगर हम इस दिशा में अग्रसर हो तो हम फिर सोने की चिड़िया बन सकते हैं। देश निर्माण का कार्य शताब्दियों में होता है लेकिन हम इस दिशा में कार्य आरम्भ तो करें। प्रयास ही सफलता की कुंजी है।

भगवान् श्री कल्कि के प्रमुख दिव्य मन्दिर

1. श्री गौरीशंकर मन्दिर परिसर, भगवान श्री कल्कि मन्दिर, चांदनी चौक, लाल किले के सामने, दिल्ली-6
2. श्री कल्कि विष्णु मन्दिर, 815, चौक श्री कल्कि मन्दिर, कुण्डेवालान, श्री कल्कि मार्ग, अजमेरी गेट, दिल्ली-6
3. श्री कल्कि मन्दिर, ललिता माँ मन्दिर, नैमिषारण्य तीर्थ, सीतापुर, उ.प्र.
4. श्री कल्कि मन्दिर, योगमाया मन्दिर, महरौली, नई दिल्ली-30
5. श्री कल्कि मन्दिर, श्री लक्ष्मीनारायण संस्थान, बसंत विहार
6. श्री कल्कि मन्दिर, श्री कालका जी मन्दिर, नई दिल्ली-65
7. श्री कल्कि मन्दिर, दूधिया भैरों मन्दिर, पुराना किला, दिल्ली
8. श्री कल्कि जी महाराज मन्दिर, गुप्ता कॉलेज, जयपुर (राजस्थान)
9. श्री कल्कि विष्णु मन्दिर, मनोकामना, पूर्वी कोट, सम्भल-244302,
10. श्री कल्कि भगवान, ईस्कॉन मंदिर, वैदिक एक्स्पो, शाम 6 से 9 बजे, पहली मंजिल, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065
11. श्री कल्कि विष्णु मन्दिर (रानी वाला), पूर्वी कोट, सम्भल-244302
13. श्री कल्कि मन्दिर, श्री शिव मन्दिर, श्रीमती गुलशन कुमार (टी-सीरिज) के लंगर के सामने, बाण गंगा, वैष्णो देवी, कटरा, जम्मू
14. श्री कल्कि मन्दिर, वैष्णों देवी मन्दिर, गुलावी बाग, दिल्ली
15. श्री कल्कि मन्दिर वसुंधरा, कल्कि चौक, धापासी गाविस-9, काठमांडू
16. श्री कल्कि मन्दिर, अमृत परिसर शिवगंगा पुरम, बृजघाट, गढ़ गंगा

प्रस्तावित मन्दिर—

1. भगवान् श्री कल्कि का एक भव्य एवं विशाल मन्दिर 4 एकड़ में दिल्ली-जयपुर हाईवे पर मानेसर (गुड़गाँव)
2. मरघट वाले हनुमान जी रिंग रोड, यमुना बाजार, दिल्ली-6

(इन कुछ प्रमुख स्थानों के अतिरिक्त मथुरा, वृंदावन, काशी, प्रयाग, महाराष्ट्र दक्षिण आदि के समस्त मुख्य तीर्थों में भगवान् श्री कल्कि के विभिन्न मुद्राओं में चित्र उत्कीर्ण हैं।)

श्री कल्कि साहित्य

		मूल्य
1.	श्री कल्कि पुराण (संस्कृत, हिन्दी) (वेद व्यास जी द्वारा रचित वाराणसी से मुद्रित 90 वर्ष पुराना)	60.00
2.	श्री कल्कि पुराण (संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी में अनुवाद सहित)	150.00
3.	श्री कल्कि पुराण (सम्पूर्ण हिन्दी में) (सजिल्द)	101.00
4.	श्री कल्कि पुराण परिशिष्ट	50.00
5.	श्री कल्कि बाल वाटिका परिशिष्ट	50.00
6.	श्री कल्कि चालीसा	10.00
7.	मेरे साथ अच्छा क्यों नहीं होता ? (प्रेरणा दायक कहानियाँ)	90.00
8.	श्री कल्कि पद संग्रह 4 in 1	60.00
9.	श्री कल्कि सहस्त्र नामावली	30.00
10.	महाक्रांतिकारी की खोज एवं पद संग्रह 2 in 1 (गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी एवं मनोकान्त जी द्वारा लिखित भजन एवं लेख)	51.00
11.	श्री कल्कि दिग्विजय नाटक	15.00
12.	गुरु गरिमा	10.00
13.	श्री कल्कि जी का चित्र, 2 स्टीकर (छोटे)	
14.	श्री कल्कि जी का चित्र, स्टीकर (बड़ा)	1.00
15.	श्री कल्कि जी का चॉबी का गुच्छा	11.00
16.	श्री कल्कि जी/श्री गुरू जी का लॉकिट (तांबा/पीतल) वृताकार	10.00
17.	एक्रेलिक श्री कल्कि जी का पूजा करने वाला स्टैण्ड वाला	35.00
18.	गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी का चित्र (आर्ट पेपर)	5.00
19.	दुर्गा जी, श्री कल्कि भगवान्, हनुमान जी का चित्र	10.00
20.	दुर्गा जी, श्री कल्कि भगवान्, हनुमान जी का चित्र	10.00
21.	श्री कल्कि जी का कलेंडर	10.00
22.	भजन सन्ध्या V.C.D.	50.00
23.	श्री कल्कि लीला श्री कल्कि पुराण पर आधारित V.C.D.(दो भागों में)	70.00
24.	डौर बैल कल्कि नाम रटने वाला मुम्बई से बना	440.00

25. सुप्तात्मा को जगाने वाला कल्कि नाम
रटने वाला मैटल बॉक्स (चार्जेबल बेट्री) 350.00

कल्कि नाम रटने वाला मुम्बई से बना
मन्दिर टाईप मन्त्र बॉक्स 440.00

उपलब्ध साहित्य

मात्र 101 रु.

मात्र 30 रु.

मात्र 90 रु.

मात्र 51 रु.

सजिल्द मात्र 75 रु.

मात्र 51 रु.

मात्र 8 रु.

मासिक पत्रिका— श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिये 100/- रु. में वार्षिक शुल्क व 1000/- आजीवन शुल्क भेजकर आप मासिक पत्रिका के सदस्य बन सकते है।

श्री कल्कि साहित्य, सी.डी. व चित्र प्राप्ति स्थान

1. **चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान**
   38, यू.ए., बंगलो रोड, हंसराज कॉलेज के पास, दिल्ली-7 ☎ 23856391
2. **डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स**
   110, चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6 ☎ 23251630
3. **अरोड़ा पुस्तक भण्डार,** तहसील रोड, सम्भल ☎ 09412140553
4. **श्री लोक नाथ पुस्तकालय**,173, महात्मा गाँधी रोड, कोलकता-7 ☎ (033) 22687722, 09339099939
5. **धार्मिक पुस्तक भण्डार**, अमृत परिसर श्री कल्कि मन्दिर, शिवगंगा पुरम, बृजघाट, गढ़ गंगा-245205 (उ.प्र.) ☎ 09897119222
6. **ड्रेपस एवन्यू**, डोवलानी टावर, चैन्नई ☎ (044) 2811141
7. **श्री कल्कि विष्णु मन्दिर** 815, चौक कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली
8. **औलगामाईन सोनो इंडस्ट्रीज (कैन कैन)**, 1903/3, पहली मंजिल, गुरुद्वारे के सामने, चाँदनी चौक, दिल्ली-6 ☎ 23866646, 23866661
9. **श्री संतोष वैद्य,** 8, स्कूल व्यू बिल्डिंग, सुन्दर लेन, ओरलेन चर्च के पास, मल्हार वैस्ट, मुम्बई-64, दूरभाष:-022-28826507
10. **कुलदीप गुप्ता**, बहजोई रोड, पुराना टेलीफोन एक्सचेंज, ट्यूबवैल के बराबर, सम्भल-244302 ☎ 05923-234355
11. **कैलाश बुक डिपो**, श्री कल्कि महाराज मन्दिर परिसर, हवा महल बाजार, जयपुर ☎ (दुकान) : 0141-2614625, (निवास) : 2316130
12. **हरिश शर्मा** (कल्कि वाले) गीता सोसाईटी, कॉलेज कम्पाउन्ड, पालनपुर-385001 (गुजरात) ☎ 02742-258068
13. **श्री लक्ष्मीनारायण संस्थान** (श्री कल्कि मन्दिर)
    बसन्त विहार सनातन धर्म सभा, पश्चिम मार्ग,
    बसन्त क्लब के बराबर, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57 ☎ 26140981
14. **सनातन धर्म संस्थान** (श्री कल्कि मन्दिर)
    विद्युत परिसर, राजपुर रोड, ट्रांसपोर्ट अथॉर्टी के बराबर, दिल्ली-54
15. **औलगामाईन सोनो इंडस्ट्रीज** (नोएडा) बी-6, सैक्टर-3, टोल ब्रिज के पास, नोएडा-201301 दूरभाष : 9312533445
16. **श्री महावीर प्रसाद चौधरी** (कोलकाता) ☎ 09830334519
17. **श्री वरुण चौधरी** ☎ 0933105650